1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-3, अंक-2, अक्टूबर-नवम्बर 2019 ₹ 25/-

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

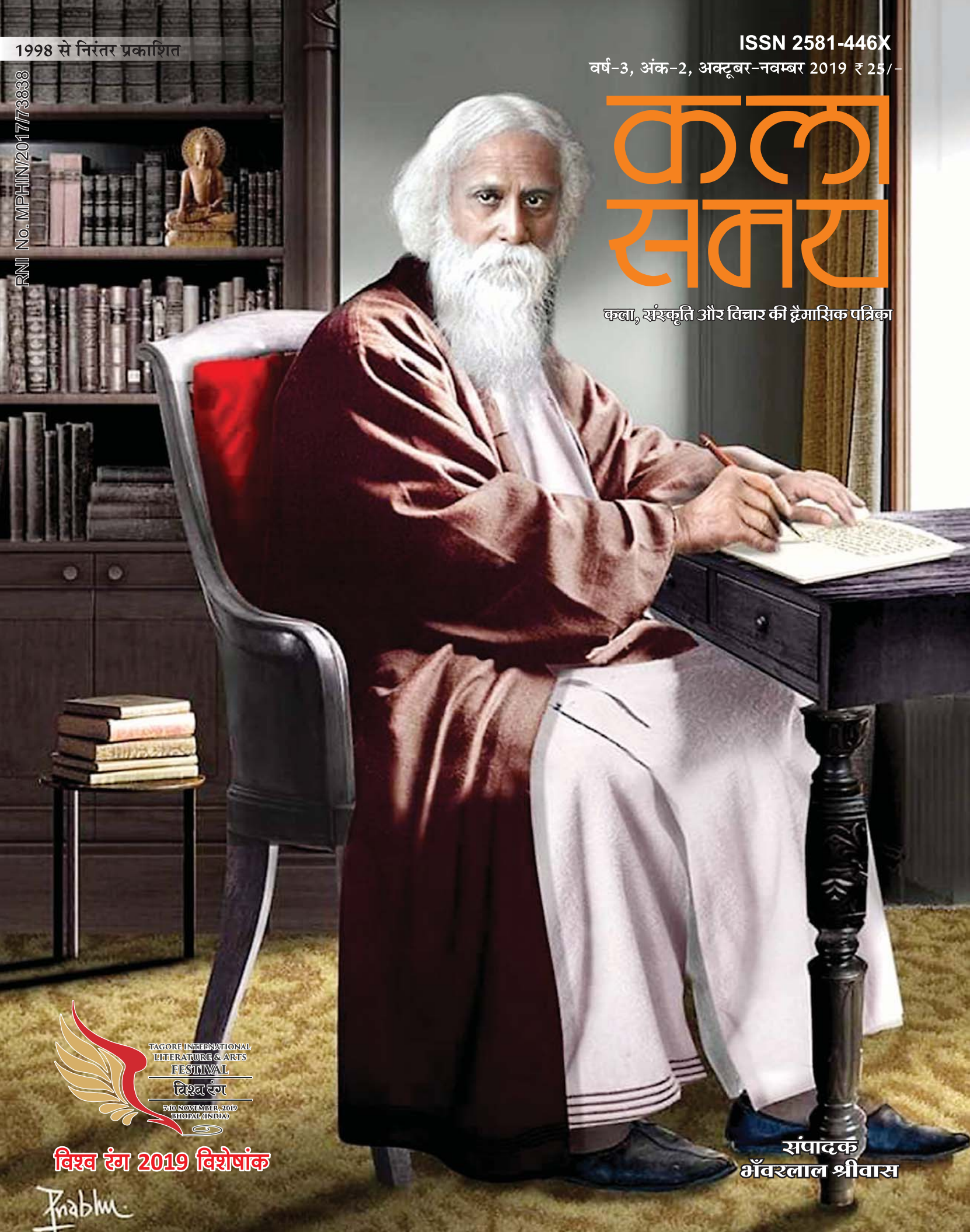

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL

विश्व रंग

7-10 NOVEMBER, 2019 BHOPAL (INDIA)

विश्व रंग 2019 विशेषांक

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

कला समय को मिला सप्तपर्णी सम्मान

म.प्र. की कला और साहित्य की पत्रिका कला समय को सप्तपर्णी सम्मान 2019 दिनांक 13 अक्टूबर 2019 को मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रतिष्ठित भवभूति अलंकरण सप्तपर्णी सम्मान, वागेश्वरी एवं पुनर्नवा पुरस्कारों में कला समय पत्रिका के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास को सप्तपर्णी सम्मान से सम्मानित किया गया उन्हें यह सम्मान लब्ध प्रतिष्ठित कथाकार गिरिराज किशोर और सुविख्यात कथाकार प्रियंवद के हाथों दिया गया इस अवसर पर अध्यक्ष म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन पलाश सुरजन तथा सप्तपर्णी सम्मान के संस्थापक सम्पादक प्रेरणा पत्रिका अरुण तिवारी द्वारा स्थापित उर्मिला तिवारी स्मृति सप्तपर्णी सम्मान वसंत निर्गुणे, पूर्णचन्द रथ और चिन्मय मिश्र को भी प्रदान किया गया इसी श्रृंखला में भवभूति अलंकरण से अग्रज कवि नरेश सक्सेना को नवाजा गया तथा वागेश्वरी एवं पुनर्नवा सम्मान भी इस अवसर पर प्रदान किये गये।

कला समय के 100वें अंक का लोकार्पण शाजापुर और उज्जैन में

13 अक्टूबर, 2019 शरद पूर्णिमा को शाजापुर के एक निजी होटल में भोपाल से प्रकाशित प्रसिद्ध कला समय पत्रिका के 100 वें अंक का भव्य लोकार्पण कला इतिहासकार नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, डॉ. प्रेम छाबड़ा, डॉ. कैलाशचन्द पाण्डेय, इतिहासकार ललित शर्मा व लोक संस्कृतिविद् डॉ. वर्षा नालमे ने किया तथा अंक का वितरण उपस्थित बुद्धिजीवियों में किया गया। इस अवसर पर संपादक भँवरलाल श्रीवास द्वारा प्रेषित शुभकामना संदेश भी प्रस्तुत किया गया।

20 अक्टूबर 2019, मधुवन संस्था का उत्सव महाकालेश्वर के रजत जयंती समारोह में महाकालेश्वर मंदिर प्रांगण के प्रवचन हाल में 'कला समय' पत्रिका के 100 वें अंक का लोकार्पण प्रख्यात भजन गायक अनूप जलोटा, सुरेश तातेड़, संरक्षक 'कला समय' तथा संपादक भँवरलाल श्रीवास और देवेन्द्र सक्सेना सहित अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया।

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838
कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com
ISSN 2581-446X
(वर्ष : 22+3) पूर्णांक-101,
वर्ष-3, अंक-2, अक्टूबर-नवम्बर 2019

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
ललित शर्मा
राग तेलंग
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
डॉ. कुंजन आचार्य
देवेन्द्र शर्मा

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास
डॉ. वर्षा नालमे
उमेश कुमार पाठक
बंशीधर 'बंधु'
पं. देवेन्द्र वर्मा

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

रेखांकन : राधेलाल बिजघावने

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
bhanwarlalshrivas@gmail.com
94256 78058

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास

संपादक मंडल
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
साहित्य
हरीश श्रीवास
कला
डॉ. मुक्ति पाराशर
संस्कृति
नरिन्दर कौर
प्रबंध

कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

सहयोग राशि

वार्षिक	: 150 /-	(व्यक्तिगत)
	: 175 /-	(संस्थागत)
द्वैवार्षिक	: 300 /-	(व्यक्तिगत)
	: 350 /-	(संस्थागत)
चार वर्ष	: 500 /-	(व्यक्तिगत)
	: 600 /-	(संस्थागत)
आजीवन	: 5,000/-	(व्यक्तिगत)
	: 6,000/-	(संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेजें)

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग संपर्क -
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सुविधा : 'कला समय' का बैंक खाता विवरण
ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की शाखा **(IFSC : ORBC0100932)** में **KALA SAMAY** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में नगद राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

इस बार

- संपादकीय / 5

  साहित्य एवं कला का विश्व कुंभ, विश्व रंग

- विश्व रंग / 6

  टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव

- साक्षात्कार / 7

  विश्व रंग भारतीय समाज में ज्ञान की भूख अभी बरकरार-संतोष चौबे / कला समय

- विश्व रंग

  टैगोर अंतराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव / 10

  कथादेश / 12

  वनमाली कथा सम्मान / 15

  हाशिये में करुणा की मार्मिकता और ट्रान्सजेंडर जगत / 16

  एक मुलाकात आशुतोष राणा के साथ / सिद्धार्थ चतुर्वेदी / 17

  झलकियाँ : विश्वरंग के विविध रंग / 18

- संस्मरण / 22

  कला संसार/राजेन्द्र नागदेव

- साक्षात्कार / 24

  आज के दौर की फिल्मों से उस जमाने की फिल्मों से तुलना करना ठीक नहीं है/ अनुपमा अनुश्री

- विश्व कविता / 26

  कार्ल सैंडबर्ग की कविताएँ, अनुवाद : मणि मोहन

  निर्मला जोशी के गीत / 27

  मनोहर पटेरिया 'मधुर' की कविता / 28

  शैख़ क़दीर कुरैशी 'दर्द' की ग़ज़लें / 29

- आलेख / 30

  बंगाली गीत-नृत्य और वाद्य यंत्रों का रिश्ता / डॉ. अमरसिंह वधान

- आलेख / 33

  चन्देरी लोक संस्कृति विरासत : संगीत सूर्य बैजू बावरा / मजीत खाँ पठान

- पुस्तक समीक्षा / 36

  मौन भित्तिचित्रों को मुखरित करती महत्वपूर्ण कृति ''मालवा के भित्तिचित्र''/ संदीप राशिनकर

  एक अनवरत यात्री के लिए / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय / 38

- आयोजन / 41

  पंडित दरगाही मिश्रा स्मृति संगीत समारोह

  ऋषिकेश में गंगा पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी / 43

- समवेत / 49

  मध्य प्रदेश पर्यटन को 10 राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया / 'हस्ताक्षर है पिता' पुस्तक का लोकार्पण / ''शाजापुर इतिहास'' पुस्तक का विमोचन समारोह / ''बघेरा इतिहास'' पुस्तक का विमोचन सम्पन्न / गांधीजी की राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. मुक्ति पाराशर की चित्र प्रदर्शनी / युगेश शर्मा की कृति ''गाँधी पथ'' का लोकार्पण/ उत्सव महाकालेश्वर रजत जयन्ती समारोह पं. सुरेश तातेड़ का अमृत महोत्सव / 'बंशीधर बंधु को साहित्य कला रत्न सम्मान' / मधुप्रसाद को गीत सम्मान पुरस्कार

- पत्रिका के बहाने / 50

  कला समय के 100वें अंक की प्रतिक्रिया

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** - प्रभु जोशी | **अंतिम आवरण चित्र** - प्रभु जोशी | **छायाचित्र** - मनीष सराठे, सुनील सेन | **रेखांकन** - राधेलाल बिजघावने | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास | **विशेष सहयोग :** संजय सिंह राठौर (संयोजक - वनमाली सृजन पीठ, भोपाल)

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL
विश्व रंग
7-10 NOVEMBER, 2019
BHOPAL (INDIA)

साहित्य एवं कला का विश्व कुंभ, विश्व रंग

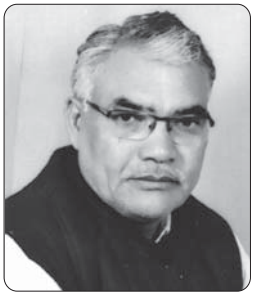

कला क्या है ?यह इंसान की रचनात्मक आत्मा की यथार्थ के पुकार के प्रति प्रतिक्रिया हैं।
कला में व्यक्ति खुद को उजागर करता है, कलाकृति को नहीं।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

आज जब रवीन्द्र नाथ टैगोर का चित्र मन में आता है तो वे केवल कवि, लेखक, चित्रकार, शिक्षा–शास्त्री, संगीतज्ञ, दार्शनिक, इत्यादि के अलग–अलग रूप में नहीं आते। वे तो एक विशाल वट वृक्ष के रूप में समाये हुए हैं। कड़ी धूप हो तो उसकी छाया में जाने की इच्छा होती है, वर्षा हो तो भी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी ने खूब समझ लिया था कि जिस जगत में मनुष्य रहता है वह उसके कानून समझे और उनको समझने के लिए बाहर और अंदर दोनों ओर से तैयारी करें। इन कानूनों में सबसे जरूरी कानून है कि मनुष्य औरों के साथ मिलजुल कर रहे और काम करे। इसके लिए उसे शरीर, मन, बुद्धि और हृदय के बारे में ज्ञान, विज्ञान, कला संगीत आदि की सहायता लेकर अध्ययन करना होगा। जिससे वह अनुभव करेगा कि वह ओरों के साथ जीवन के एक ही सूत्र में बंधा हुआ है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का ध्येय था व्यक्ति अपने सम्पूर्ण मनुष्यत्व का लाभ उठाये। वह पहले मनुष्य हो, बाद में कवि, कलाकार, भारतीय, बंगाली या जो कुछ भी। गुरुदेव के जीवन, उनके कार्य और उससे भी अधिक उनकी समग्रता से यह सीखने का है कि मानव मानव कैसे बने ?

"गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का ध्येय था व्यक्ति अपने सम्पूर्ण मनुष्यत्व का लाभ उठाये। वह पहले मनुष्य हो, बाद में कवि, कलाकार, भारतीय, बंगाली या जो कुछ भी। गुरुदेव के जीवन, उनके कार्य और उससे भी अधिक उनकी समग्रता से यह सीखने का है कि मानव मानव कैसे बने ?"

भोपाल की पहचान भारत भवन के कारण कला की राजधानी कहा जाता है पर अब साहित्य और कला के इस 'विश्व कुंभ विश्व रंग' के कारण अब भोपाल को एक नई पहचान से भी जाना जायेगा वह होगा 'विश्व रंग की राजधानी भोपाल' विश्व रंग में विश्व प्रेम की कितनी किरणें निकली कितने रंग रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय से लेकर रवीन्द्र भवन, भारत भवन मिंटो हाल तक इन सात दिवसीय साहित्य एवं कला महोत्सव में भोपाल की सरजमीं पर किसी गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थान रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की पहल पर तथा सहयोगी संस्थान डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, म.प्र., बिहार के सहयोग से अभूतपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव में साहित्य, संस्कृति और कलाओं की सृजनशील दुनियां को अपने समय में देखने–परखने और उसके प्रति रुचि जिज्ञासा और उत्साह का नया परिवेश रचने की उत्सवी आकांक्षा का उपक्रम विश्व रंग है। विश्व रंग उन सरोकारों से जुड़ने की मंशा है जो अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों में मानवीय जीवन और जगत का बहुरंगी फ़लक रचने इसी ज़मीन पर अफ़सानों बहस–मुबाहिसों तथा अदब और तहजीब की रंगों–महक के बेमिसाल सिलसिलों का एक दिलचस्प मंज़र रौनक ताल–तलैयों और शैल–शिखरों के सुरम्य शहर भोपाल में विश्व रंग का ताना–बाना का कुतूहल के धनी आशातीत संतोष चौबे जी निदेशक टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव व कुलाधिपति रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल ने साकार कर दिखाया यह अपने तरह का एशिया में पहला अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव है। यह हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच वैचारिक संवाद तथा सांस्कृतिक आपसदारी का विराट समागम वनमाली सृजन पीठ के मुख्य संयोजन में परिकल्पित 4 से 10 नवम्बर 2019 तक इस महोत्सव में प्रतिदिन लगभग दस हजार कला रसिकों ने विश्व रंग का आनंद लिया। भारत सहित दुनिया के लगभग तीस देशों के पाँच सौ से भी अधिक प्रतिनिधि–हस्ताक्षरों ने शिरकत की लगभग साठ सत्रों के आसपास संयोजित यह विश्व कुंभ रवीन्द्र नाथ टैगोर को केन्द्र में रखकर पुस्तक यात्रा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, सिनेमा, पत्रकारिता, पर्यावरण, थर्ड जेंडर जैसे विषयों पर गंभीरता से चर्चा कराने का श्रेय टैगोर विश्वविद्यालय ने रचकर एक नया कीर्तिमान रचा इस पर शहर की सभी सहयोगी संस्थाओं ने उन्हें एक समारोह में सफल महोत्सव की बधाई दी संतोष चौबेजी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए। पुन: विश्व रंग दो के वादे के साथ विश्वरंग को अलविदा कहा।

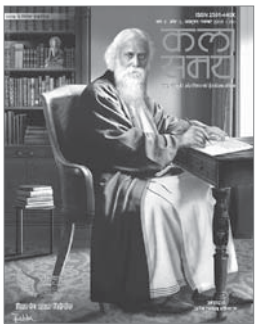

–भँवरलाल श्रीवास

■

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव : विश्व रंग

साहित्य, संस्कृति और कलाओं की सृजनशील दुनिया को अपने समय में देखने-परखने और उसके प्रति रुचि, जिज्ञासा और उद्वेलन का नया परिवेश रचने की उत्सवी आकांक्षा है- 'विश्वरंग'। उन सरोकारों से जुड़ने की मंशा, जो अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों में मानवीय जीवन और जगत का बहुरंगी फलक रचती रही है। इसी ज़मीन पर अफ़सानों, बहस-मुबाहिसों तथा अदब और तहज़ीब की रंगो-महक के बेमिसाल सिलसिलों का एक दिलचस्प मंज़र रौशन हुआ है। ताल-तलैयों और शैल-शिखरों के सुरम्य शहर भोपाल में 'विश्वरंग' का ताना-बाना 7 से 10 नवंबर तक सजा।

यह हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच वैचारिक संवाद तथा सांस्कृतिक अपासदारी का विराट समागम होगा। रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल की पहल पर टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र तथा वनमाली सृजन पीठ के मुख्य संयोजन में परिकल्पित इस अंतर्राष्ट्रीय साहित्य तथा कला महोत्सव में भारत सहित दुनिया के तीस देशों के पाँच सौ से भी अधिक प्रतिनिधि-हस्ताक्षर शिरकत करने आये। लगभग साठ सत्रों के आसपास संयोजित यह विश्व कुंभ साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, सिनेमा, पत्रकारिता, पर्यावरण सहित अनेक विषयों का अनूठा मंच रहा। भोपाल में 'विश्वरंग' की गतिविधियाँ मिंटो हॉल, भारत भवन तथा रवीन्द्र भवन में हुई। भारत के किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पहल पर हुआ यह पहला विश्व स्तरीय साहित्य-कला महोत्सव है। टैगोर विश्वविद्यालय इस दृष्टि से एक कीर्तिमान रचा गया है।

'विश्वरंग' में भारतवर्ष के साहित्य एकेडमी, पद्म भूषण एवं पद्मश्री जैसे सम्मानों से विभूषित सौ से अधिक रचनाकारों और विचारकों के साथ-साथ विश्व के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर और छात्रों की हिस्सेदारी रही। देश और प्रदेश के कई शासकीय साहित्यिक-सांस्कृतिक उपक्रमों के साथ ही अन्य विश्वविद्यालय और संस्थानों की साझेदारी इसे समग्रता प्रदान की। इस महोत्सव में हिन्दी सहित भारतीय तथा विदेशी भाषाओं के कवियों के साथ ही थर्ड जेंडर और सिनेमाकर्मी कवियों का रचना पाठ हुआ। लेखक से मिलिये, टैगोर कला कृतियों की प्रदर्शनी, नाट्य संगीत प्रस्तुति, पुस्तक चर्चा और किताबों का लोकार्पण भी आकर्षण का केन्द्र रहे। वैचारिक सत्रों में गांधी और टैगोर की विरासत, साहित्य, संस्कृति तथा कलाओं के अन्तर्संबंध, शिक्षा, मीडिया तथा पर्यावरण जैसे मुद्दों पर वैश्विक संवाद हुआ। यह महोत्सव छोटे गाँव-कस्बों से लेकर महानगर तथा सुदूर देशों के बीच एक साझा रचनात्मक अभियान की शक्ल, जिसमें नवोदित लेखक अग्रणी शख्सियतें एक साथ शामिल हुई।

'विश्वरंग' की ही एक महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में 11 अक्टूबर को नई दिल्ली में केन्द्रीय साहित्य अकादेमी के सहयोग से एक सारस्वत समारोह हुआ। विभिन्न विधाओं में सक्रिय भारतीय भाषाओं के चर्चित विद्वान मनीषियों के साथ चीन, जापान, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, डेनमार्क, नीदरलैंड, रशिया और उज्बेकिस्तान-कजाकिस्तान जैसे कई मुल्कों के रचनाकार तथा शोधार्थियों की सहमति ने इसे वैश्विक ताक़त प्रदान की है।

महोत्सव में वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान से देश के चयनित श्रेष्ठ कथाकार को अलंकृत किया गया। इसी अवसर पर देश की दो सौ वर्षों की कथा परंपरा एवं लगभग 600 रचनाकारों को समेटते, 18 खंडों में प्रकाशित, 'कथादेश' का लोकार्पण तथा प्रतिष्ठित वनमाली कथा सम्मान का आयोजन भी किया गया। इस आयोजन में कथादेश के सभी लेखक विशेष रूप से आमंत्रित हुए। वहीं 4 से 6 नवंबर के बीच टैगोर के नाटक, कविता, पेंटिंग और संगीत पर आधारित समारोह भोपाल के रवींद्र भवन, भारत भवन में सम्पन्न हुए।

युवा पीढ़ी के लिए यह महोत्सव संवाद और मनोरंजन का अनूठा मंच रहा। कविता पाठ और कला प्रस्तुतियों से लेकर चर्चित और चहेती शख्सियतों से मुलाकात का एक नोचक सिलसिला इस दौरान रहा। भारत सरकार के विभिन्न सांस्कृतिक उपक्रमों के साथ ही इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र नई दिल्ली, भारतीय ज्ञान पीठ, केन्द्रीय भाषा संस्थान, नेशनल बुक ट्रस्ट, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत भवन, म.प्र. शासन संस्कृति विभाग, पर्यटन विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा तथा टेक्नालॉजी के क्षेत्र में सक्रिय माइक्रोसॉफ्ट और इंटेल जैसी प्रतिष्ठित कंपनियां एवं भोपाल की सभी प्रमुख स्वयंसेवी सांस्कृतिक संस्थाएँ 'विश्वरंग' की गतिविधियों में सहयोगी बनी।

8 सितम्बर अंतराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर पुस्तक यात्रा का आयोजन टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट एवं विज्ञान प्रसार नई दिल्ली के सहयोग से किया गया। पुस्तक यात्रा आईसेक्ट समूह द्वारा संचालित सभी पांचों विश्वविद्यालयों द्वारा भोपाल (म.प्र.), विलासपुर (छत्तीसगढ़), खंडवा (म.प्र.), वैशाली (बिहार), हजारीबाग (झारखंड) से 8 सितम्बर को प्रारंभ होकर 19 सितम्बर 2019 तक विभिन्न जिलों के 50 स्थानों पर भ्रमण कर चुकी है। 20-22 सितंबर तक सभी स्थानों पर युवा उत्सवों का भव्य आयोजन भी किया गया।

विश्वरंग से संबंधित अधिक जानकारी पंजीयन के लिए वेबसाइट www.tagorelitfest.com पर संपर्क किया गया है।

■

साक्षात्कार

कुलाधिपति रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय एवं निदेशक टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव भोपाल : संतोष चौबे से कला समय की बातचीत

विश्व रंग भारतीय समाज में ज्ञान की भूख अभी बरकरार-संतोष चौबे

● **देश के किसी भी विश्वविद्यालय ने इसके पहले 'विश्व रंग' यानी साहित्य एवं कला के अंतर्राष्ट्रीय आयोजन के बारे में नहीं सोचा। 'विश्व रंग' की विश्व अवधारणा क्या है ?**

– विश्व रंग की अवधारणा, विश्व के बारे में हमारी समझ से ही निकलती है। आप सचेत रूप से अपने आस-पास देखें तो पाएंगे कि विकास की जो प्रक्रिया हमने अपनाई है और प्रकृति का जिस तरह अंधाधुंध दोहन किया है वह स्वयं हमारे अस्तित्व के लिये ही घातक है। दूसरी ओर बायोटेक्नॉलॉजी एवं बायो इन्फर्मेटिक्स के कन्वर्जेस से जिस तरह के मनुष्य के निर्माण की बात की जा रही है उससे इस बात में भी संदेह पैदा होता है कि क्या मनुष्य स्वयं वैसा बचा रहा पाएगा जैसा कि हम उसे जानते हैं। तीसरे, टेक्नॉलॉजी ने जीवन की गति इतनी तेज कर दी है कि उसे जानना-पहचानना ही मुश्किल होता जा रहा है। जैसा कि फ्रेडरिक जेम्सन ने कहा है, हमें नये नक्शे और नये को-आर्डिनेट्स की तलाश करनी होगी। मुझे लगता है कि जीवन के नये उपकरणों को तलाशने के साधन विज्ञान के पास उतने ही नहीं हैं जितने कला, संस्कृति और संगीत के पास हैं। विश्व के तमाम रचनाकारों, कलाकारों और संगीतज्ञों को इस संबंध में बातचीत शुरु करनी चाहिये और एक प्रभावी हस्तक्षेप करना चाहिये। विश्व रंग इसी दिशा में एक शुरुआत है।

● **इस कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है ?**

– जैसा कि मैंने ऊपर कहा, विश्व रंग साहित्य, शिक्षा, संस्कृति और भाषा में काम करने वाले रचनाकारों के बीच वैश्विक विमर्श की शुरुआत है। इसके दौरान कम से कम दस ऐसे प्रकाशन सामने आयेंगे जो इस समझ को प्रतिबिम्बित करते हैं। देश और विदेश के लगभग 50 विश्वविद्यालय भी इसमें हिस्सा ले रहे हैं, जिनमें आपसी बातचीत एवं शैक्षणिक नेटवर्क का निर्माण इस कार्यक्रम का बड़ा हासिल होगा। देशभर से लगभग 500 शीर्षस्थ रचनाकार इसमें शिरकत कर रहे हैं, और उम्मीद है कि उनके बीच संवाद का रिश्ता कायम होगा और सबसे बढ़कर, हिन्दी और भारतीय भाषाओं को केन्द्रीयता प्रदान करने का प्रयत्न किया जायेगा।

● **विश्व रंग में साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, दर्शन, लोक, नाटक, फिल्म, चित्रकला, इतिहास, मीडिया आदि के लगभग 60 सत्र हैं। इनके माध्यम से आप क्या कहना चाहते हैं ?**

– वनमाली सृजन पीठ और रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का जो लगभग 35 वर्षों का साहित्य एवं कलाओं में काम करने का अनुभव है वह बताता है कि अंतत: सभी कलाओं और अनुशासनों में एक तरह की आपसदारी बनती है और उसे पहचानना ही अपने कलात्मक क्षितिज का विस्तार करना है। इसी तरह अन्य अनुशासन भी कलात्मक विधाओं में हस्तक्षेप करते हैं। मसलन उपन्यास और कहानी में मिलान कुन्देरा, पाओलो कोहेलो और उदयप्रकाश के यहां आपको ऐसी शैलियों और अनुशासनों की छाया मिल जायेगी जिन्हें पहले उपन्यास या कहानी के डोमेन में नहीं रखा जाता था, उनमें आप इतिहास की, चित्रकला की, फिल्म तकनीक की, नाटक की और दार्शनिक निष्कर्षों की छाया पाते हैं। असल में ज्ञान-विज्ञान का विस्फोट जो हमारे आसपास हुआ है, उसने बहुत सारी पुरानी सीमा रेखाओं को तोड़ा है और उपरोक्त सभी सत्रों को आयोजन में शामिल

करने का लक्ष्य इस नये उभरते मानचित्र को पहचानना है।

- **विश्व रंग में साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य और कलाएं यहाँ तक कि अभिलेखागारों का महत्व भी शामिल है। ये किसी भी लिटरेचर फेस्टिवल के हिस्से नहीं होते, ये विश्व रंग में क्यों ?सारे उत्सव-महोत्सव पॉपुलर सब्जेक्ट्स और फीचर्स के बिना नहीं होते। ऐसे में इन सबके पीछे आपकी दृष्टि क्या है ?**

– पहली बात तो 'विश्व रंग' पॉपुलर सब्जेक्ट्स को खारिज नहीं करता बल्कि पॉपुलर और अकाादमिक सत्रों के बीच एक अद्भुत संतुलन बनाने की कोशिश करता है। जहाँ एक ओर लोक और शास्त्र, शिक्षा और विज्ञान और भाषाओं पर केन्द्रित सत्र हैं तो दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय मुशायरा, उर्दू की रवायत में सुखन की महफिल और रघु दीक्षित जैसे पॉपुलर बैंड्स भी हैं जो युवाओं के लिये आकर्षण का केन्द्र होंगे। यहाँ तक कि अकादमिक सत्रों में भी लीक को छोड़कर थर्ड जेंडर का कविता पाठ, सोशल मीडिया पर सक्रिय रचनाकार तथा लेखक से मिलिए में स्वानंद किरकिरे, आशुतोष राणा और इरशाद कामिल जैसे फिल्म के रचनाकार हैं जो हिन्दी के वरिष्ठ रचनाकारों के साथ नजर आयेंगे। मुझे विश्वास है कि यह उत्सव पूरी तरह सफल होगा।

- **कला इतिहास पर नेशनल सेमिनार और कलाकारों के वर्कशॉप की जगह आर्टिस्ट्स मीट, कला प्रदर्शनी भी उन कलाकारों की जो गांव, कस्बों और दूरदराज के हैं। साथ में 50,000/- के 5 पुरस्कार, 175 चित्र आदि। इसकी अवधारणा में क्या कुछ है ?**

– जैसे कि साहित्य ने अपने आप को जमीन से काटकर बड़े शहरों पर केन्द्रित कर लिया है, वैसे ही स्थापित कला दीर्घाओं में भी व्यावसायिकता हावी है और उभरते चित्रकारों के लिये, जो गांव, कस्बों और दूरदराजों के स्थानों से आते हैं कोई जगह नहीं है। हमारी कोशिश है कि उन्हें पहचाना जाए और उन्हें प्रदर्शित किया जाए। जिस तरह का रिस्पांस इस प्रयास को मिला है, वह बताता है कि इन कलाकारों में किस तरह की छटपटाहट है। करीब एक हजार से अधिक प्रविष्टियाँ हमें प्राप्त हुई हैं जिनके रंगों और आकृतियों के प्रयोग अद्भुत, अछूते एवं अनोखे हैं। हम इसे वार्षिक इवेंट बना सकते हैं। यह कला की दुनिया में भी एक नया प्रयोग होगा।

- **इसमें टैगोर के नाटक, बैले, रवींद्र संगीत, रवींद्र की चित्र प्रदर्शनी और प्रकाशन भी हैं। 22 सत्र लेखकों के हैं। दीगर 36-38 और हैं। अब यह कोई दीर्घकालीन योजना है, या एक बार की दीवानगी।**

– सबसे पहले तो अर्ज करूं कि हमारे विश्वविद्यालय का नाम ही गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर के नाम पर है और ये हिन्दी भषा क्षेत्र में स्थित है। जैसे-जैसे हम काम करते हैं तो पाते हैं कि लगभग पूरे हिन्दी भाषी क्षेत्र में टैगोर की विराट रचनात्मकता, विशेषकर उनकी पेंटिंग स्टाइल एवं नाटकों को लेकर कोई बहुत चेतना नहीं है और इसकी पुर्नस्थापना आवश्यक है। हमारे अपने देश के दिग्गज कलाकार, वो किसी भी प्रदेश के हो सकते हैं, को हमारे यहाँ के साहित्य महोत्सव में रेखांकित किया जाना चाहिये। इसलिये हमने चार दिन के साहित्य समारोह के पहले, तीन दिवसीय टैगोर रेट्रोस्पेक्टिव भी रखा है। आगे चलकर अन्य प्रदेशों के बड़े कलाकारों पर भी फोकस करेंगे। हमारा दूसरा वैचारिक आधार, जिसने सत्रों के डिजाइन में भूमिका निभाई है वह भाषाई विमर्श पर आधारित है। आप देखिये कि राजनीति ने हमारे देश में सारी भारतीय भाषाओं को एक दूसरे के खिलाफ खड़ा करने का काम किया जबकि वे सहोदर हैं और एक-दूसरे से बड़ी ताकत पा सकती हैं। वैसे ही बोलियों को भी हिन्दी के खिलाफ खड़ा करने का प्रयास है जबकि स्वयं हिन्दी भाषा अपना रस इन जीवन सिक्त बोलियों से ही प्राप्त करती है। अत: बोलियों और भाषाओं पर सत्र है जोकि हमारी उपरोक्त अवधारणाओं को अभिव्यक्त करेंगे। आगे के फेस्टिवल भी इन्हीं अवधारणाओं पर आयोजित होंगे। हो सकता है फोकस अलग-अलग समय में अलग-अलग हों।

- **विश्व रंग में जानकारी के अनुसार विश्व भाषा के कवि, प्रवासी लेखक और शिक्षाविदों सहित लगभग 60 लोग आ रहे हैं। इनकी क्या भूमिकाएं हैं ?**

– जब हम भारतीयता पर जोर देते हैं तो ये कोई जड़ राष्ट्रीयता नहीं है। हमारी भारतीयता वैश्वित संदर्भों से जुड़े और अपने अनोखेपन में प्रकाशित भारतीयता है जिसमें विश्व कविता का भी उतना ही स्थान है जितना भारतीय कविता का। ये शायद पहली बार होगा कि किसी फेस्टिवल में विश्व कविता के दो सत्र आयोजित हैं। इसी तरह प्रवासी भारतीय लेखक भी अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहते हैं लेकिन उनके लेखन के प्रकाशन और मूल्यांकन को लेकर कोई ठोस प्रयास देश में नहीं होते। विश्व के प्रमुख प्रवासी भारतीय लेखकों को आमंत्रित करने का लक्ष्य है कि उनसे संवाद कायम किया जाये एवं उनके साहित्य के मूल्यांकन के प्रयास किये जायें। इस समय भारत के बाहर करीब 66 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जहाँ हिन्दी पढ़ाई जाती है। इनके साथ सहयोगी वातावरण बन सके इसलिये इन्हें भी आमंत्रित किया गया है। अंतत: वैश्विक हिन्दी के निर्माण में इनकी बड़ी भूमिका होगी।

- **इस महोत्सव का आगाज उत्तर भारत के 50 गांवों, कस्बों, जिलों से पुस्तक यात्रा के साथ हुआ। फिर हजारीबाग, वैशाली, बिलासपुर, खंडवा और भोपाल में तीन दिवसीय युवा उत्सव हुए। इतनी सांस्कृतिक भव्यता का देश समाज के लिए क्या महत्व है ?**

– जिस तरह हमारे गांव व कस्बों ने पुस्तक यात्राओं को हाथोंहाथ लिया उससे उम्मीद बनती है कि पुस्तक संस्कृति अभी हमारे देश में जीवित है। बच्चे और युवा किताबें पढ़ना चाहते हैं, हम ही उन तक नहीं पहुंच पाते। पुस्तक यात्रा इस भ्रम को तोड़ती है कि किताबों के पाठक कम हो रहे हैं। वो बताती है कि किताबें अब भी बातें करती हैं, और व्यापक भारतीय समाज में ज्ञान की भूख अभी बरकरार है। ये सांस्कृतिक भव्यता नहीं बड़ी जरूरत की पहचान है। हम अगले एक साल में एक लाख से अधिक पुस्तक मित्र बनाने का प्रयास करेंगे।

- **दिल्ली में भी 11 अक्टूबर को टैगोर पर आयोजन है और नोबल लारेट्स की कविताओं का अनुवाद का प्रोग्राम है। इसे दिल्ली में ही करने की कोई खास वजह है ?**

आईसेक्ट आज देश का लगभग सबसे बड़ा सामाजिक उद्यमिता आधारित नेटवर्क है और वह समाज के पास जाने में विश्वास रखता है। दिल्ली में इस कार्यक्रम को करने का मूल कारण नेशनल मीडिया की वहाँ उपस्थिति, अधिकतर अनुवादकों की उपलब्धता और एक नये समूह के बीच अपनी बात कहने की ललक है।

- **यह जो विश्व रंग की शुरुआत है इसका भविष्य क्या है ?**

– तेजी से बदलते समय में कोई भी भविष्य की घोषणा नहीं कर सकता पर विश्व रंग एक ऐसी रचनात्मक समावेशी प्रक्रिया की शुरुआत करना चाहता है, जिसमें कलाएं मानव व मानवीय संवेदनाओं के पक्ष में खड़ी हों, सस्टेनेबल डेव्लपमेंट हमारी चिन्ता के केन्द्र में हो और हिन्दी और भारतीय भाषाओं को विश्व में उचित स्थान मिले, रचनात्मक विस्तार की जगह मिले। राष्ट्र के भीतर उनमें आदान–प्रदान बढ़े। आगे भी हमारी कार्यवाही का आधार उपरोक्त अवधारणायें ही हांगी। विचार के साथ–साथ एक्शन पर भी बल देंगे। इसी से आगे के रास्ते प्रकाशित होंगे।

पब्लिक रिलेशंस सोसायटी, भोपाल द्वारा 9 नवम्बर 2019 को भोपाल के मिंटो हॉल प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की सेवा एवं प्रचार–प्रसार का कार्य कर रहे विद्वानों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री पी.सी. शर्मा, मंत्री, जनसंपर्क, विधि एवं विधायी कार्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, विमानन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग, म.प्र. शासन, श्री बृजेन्द्र सिंह राठौर, मंत्री, वाणिज्यिक कर विभाग, म.प्र. शासन, श्रीमती शोभा ओझा,, कम्युनिकेशन एक्सपर्ट, श्री रघु ठाकुर, लेखक एवं चिंतक, श्री संतोष चौबे, चांसलर, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल विशेष रूप से उपस्थित थे। इस सम्मान समारोह में तेजेन्द्र शर्मा (इंग्लैण्ड), रेखा मैत्र (अमेरिका), दिव्या माथुर (इंग्लैण्ड), प्रो. डॉ. पुष्पिता अवस्थी (नीदरलैण्ड), डॉ. रामा तक्षक (नीदरलैण्ड), अशोक सिंह (अमेरिका), डॉ. भावना कुँअर (ऑस्ट्रेलिया), ललित मोहन जोशी (इंग्लैण्ड), अनूप भार्गव (अमेरिका), संजय अग्निहोत्री क्षितिज (ऑस्ट्रेलिया), रमेश दवे (भारत), डॉ. कमल किशोर गोयनका (भारत), नासिरा शर्मा (भारत), उमेश ताम्बी (अमेरिका), रेखा राजवंशी (ऑस्ट्रेलिया), उषा राजे सक्सेना (इंग्लैण्ड), डॉ. कविता वाचक्वी (अमेरिका), डॉ. संध्या सिंह (सिंगापुर), जय वर्मा (ब्रिटेन), अनलि शर्मा (फिजी), डॉ. सुषम बेदी (अमेरिका), अर्चना पैन्यूली (डेनमार्क), डॉ. वन्दना मुकेश (इंग्लैण्ड), रमेश जोशी (अमेरिका), धर्मपाल महेन्द्र जैन (कैनेडा), वैभव सिंह (भारत), कमल किशोर दुबे (भारत) एवं आत्माराम शर्मा (भारत) को सम्मानित किया गया।

टैगोर अंतराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव

स्वागत वक्तव्य

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव- विश्व रंग में लगभग 30 देशों से पधारे साहितयकारों, रचनाकारों, शिक्षाविदों एवं कला कर्मियों का मैं तहेदिल से स्वागत करता हूँ। ये शायद देश में पहली बार है कि कोई शैक्षिक संस्थान- रबीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय एवं डा. डी.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, इस तरह का साहित्य एवं कला महोत्सव आयोजित कर रहे हैं। देश में आयोजित होने वाले कई अन्य साहित्य उत्सवों के बदले विश्व रंग हिंदी और भारतीय भाषाओं को केंद्रीयता प्रदान करता है। एक ओर तो यह हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच आपसदारी और परस्पर सम्मान का रिश्ता कायम करना चाहता है तो दूसरी ओर बोलियों से भी एक रसभरे संवाद की शुरुआत करना चाहता है। रबींद्रनाथ टैगोर ने कहा था :

"Where the mind is without fear and the head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not been broken up into fragments
By narrow domestic walls
Where words come out from the depth of truth
Where tireless striving stretches its arms towards perfection
Where the clear stream of reason has not lost its way
Into the dreary desert sand of dead habit
Where the mind is led forward by thee
Into ever-widening thought and action
Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake."

- Rabindranath Tagore

इस पृष्ठभूमि में, मैं विश्व रंग साहित्य समारोह के उद्घाटन के अवसर पर, विश्व रंग की हमारी अवधारणा स्पष्ट करना चाहता हूँ। विश्व रंग की हमारी अवधारणा, विश्व के बारे में हमारी समझ से ही निकलती है। यदि आप सचेत रूप से अपने आस-पास देखें तो पाएंगे कि विकास की जो प्रक्रिया हमने अपनाई है और प्रकृति का जिस तरह अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है वह स्वयं हमारे अस्तित्व के लिये ही घातक होता जा रहा है। दूसरी ओर बायोटेक्नॉलॉजी एवं बायो इन्फर्मेटिक्स के कन्वर्जेंस से जिस तरह के मनुष्य के निर्माण की बात की जा रही है उससे इस बात में भी संदेह पैदा होता है कि क्या मनुष्य स्वयं वैसा बचा रह पाएगा जैसा कि हम उसे जानते हैं। तीसरे, टेक्नॉलॉजी ने जीवन की गति इतनी तेज कर दी है कि उसे जानना- पहचानना ही मुश्किल होता जा रहा है। जैसा कि फ्रेडरिक जेम्सन ने कहा है, हमें नये नक्शे और नये को-आर्डिनेट्स की तलाश करनी होगी। मुझे लगता है कि जीवन के नये उपकरणों को तलाशने के साधन विज्ञान के पास उतने नहीं हैं जितने कला, संस्कृति और संगीत के पास हैं। विश्व के तमाम रचनाकारों, कलाकारों और संगीतज्ञों को इस संबंध में बातचीत शुरु करनी चाहिये और एक प्रभावी हस्तक्षेप करना चाहिये। विश्व रंग इसी दिशा में एक शुरुआत है।

विश्व रंग साहित्य, शिक्षा, संस्कृति और भाषा में काम करने वाले रचनाकारों के बीच वैश्विक विमर्श की शुरुआत है। देश और विदेश के लगभग 50 विश्वविद्यालय इसमें हिस्सा ले रहे हैं, जिनमें आपसी बातचीत एवं शैक्षणिक नेटवर्क का निर्माण इस कार्यक्रम का बड़ा हासिल होगा। देशभर से लगभग 500 शीर्षस्थ रचनाकार इसमें शिरकत कर रहे हैं, और उम्मीद है कि उनके बीच संवाद का रिश्ता कायम होगा और सबसे बढ़कर, हिन्दी और भारतीय भाषाओं को केन्द्रीयता प्रदान करने का प्रयत्न किया जायेगा।

वनमाली सृजन पीठ और रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का जो लगभग 35 वर्षों का साहित्य एवं कलाओं में काम करने का अनुभव है वह बताता है कि अंतत: सभी कलाओं और अनुशासनों में एक तरह की आपसदारी बनती है और उसे पहचानना ही अपने कलात्मक क्षितिज का विस्तार करना है। इसी तरह अन्य अनुशासन भी कलात्मक विधाओं में हस्तक्षेप करते हैं। मसलन उपन्यास और कहानी में मिलान कुन्देरा, पाओलो कोहेलो, उदय प्रकाश और कई समकालीन तथा युवा रचनाकारों के यहां आपको ऐसी शैलियों और अनुशासनों की छाया मिल जायेगी जिन्हें पहले उपन्यास या कहानी के डोमेन में नहीं रखा जाता था, उनमें आप इतिहास की, चित्रकला की, फिल्म तकनीक की, नाटक की और दार्शनिक निष्कर्षों की छाया पाते हैं। असल में ज्ञान-विज्ञान का जो विस्फोट हमारे आसपास हुआ है, उसने बहुत सारी पुरानी सीमा रेखाओं को तोड़ा है। उपरोक्त सभी अनुशासनों को विभिन्न सत्रों का आयोजन में शामिल करने का लक्ष्य इस नये उभरते मानचित्र को पहचानना है।

विश्व रंग पॉपुलर सब्जेक्ट्स या लोकप्रिय को खारिज नहीं करता बल्कि पॉपुलर और अकादमिक सत्रों के बीच एक अद्भुत संतुलन बनाने की कोशिश करता है। जहां एक ओर लोक और शास्त्र, शिक्षा और विज्ञान और भाषाओं पर केन्द्रित सत्र हैं तो दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय मुशायरा, उर्दू की रवायत में सुखन की महफिल और रघु दीक्षित जैसे पॉपुलर बैंड्स भी हैं जो युवाओं के लिये आकर्षण का केन्द्र होंगे। यहाँ तक कि अकादमिक सत्रों में भी लीक को छोड़कर थर्ड जेंडर का कविता पाठ, सोशल मीडिया पर सक्रिय रचनाकार तथा लेखक से मिलिए में स्वानंद किरकिरे, आशुतोष राणा और इशाद कामिल जैसे फिल्म के रचनाकार हैं जो हिन्दी के वरिष्ठ रचनाकारों के साथ नजर आयेंगे।

जैसे साहित्य ने अपने आप को जमीन से काटकर बड़े शहरों पर केन्द्रित कर लिया है वैसे ही स्थापित कला दीर्घाओं में भी व्यावसायिकता हावी है और उभरते चित्रकारों के लिये, जो गांव, कस्बों और दूरदराजों के स्थानों से आते हैं कोई जगह नहीं है। हमारी कोशिश है कि उनहें पहचाना जाए और उन्हें प्रदर्शित किया जाए। जिस तरह का रिस्पांस इस प्रयास को मिला है, वह बताता है कि इन कलाकारों में किस

तरह की छटपटाहट है। करीब एक हजार से अधिक प्रविष्टियां हमें प्राप्त हुई हैं जिनके रंगों और आकृतियों के प्रयोग अद्भुत, अछूते एवं अनोखे हैं। यह कला की दुनिया में एक नया प्रयोग है।

ये फेस्टिवल टैगोर की रचनात्मकता से शुरु होकर पूरे विश्व तक फैलता है। हमारे तो विश्वविद्यालय का नाम ही गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाम पर है और ये हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित है। जैसे- जैसे हम काम करते हैं तो पाते हैं कि लगभग पूरे हिन्दी भाषी क्षेत्र मैं टैगोर की विराट रचनात्मकता, विशेषकर उनकी पेंटिंग स्टाइल एवं नाटकों को लेकर कोई बहुत चेतना नहीं है और इसका पुनरावलोकन आवश्यक है। विशेषकर टैगोर और गांधी का स्वतंत्रता आंदोलन के समय का रिश्ता और टैगोर की अंतर्राष्ट्रीयता तथा शैक्षिक दृष्टि को एक बार फिर से देखा जाना ज़रूरी है। इसीलिये हमने चार दिन के साहित्य समारोह के पहले, तीन दिवसीय टैगोर रेट्रोस्पेक्टिव भी रखा। आगे चलकर अन्य प्रदेशों के बड़े कलाकारों पर भी फोकस करने का विचार है। हमारा दूसरा वैचारिक आधार, जिसने सत्रों के डिजाइन में भूमिका निभाई है वह भाषाई विमर्श पर आधारित है।

आप देखिये कि राजनीति ने हमारे देश में सारी भारतीय भाषाओं को एक दूसरे के खिलाफ खड़ा करने का काम किया जबकि वे सहोदर हैं और एक-दूसरे से बड़ी ताकत पा सकती हैं। वैसे ही बोलियों को भी हिन्दी के खिलाफ खड़ा करने का प्रयास है जबकि स्वयं हिन्दी भाषा अपना रस इन जीवन सिक्त बोलियों से ही प्राप्त करती है। अत: बोलियों और भाषाओं पर सत्र हैं जोकि हमारी उपरोक्त अवधारणाओं को अभिव्यक्त करेंगे।

जब हम भारतीयता पर जोर देते हैं तो ये कोई जड़ राष्ट्रीयता नहीं है। हमारी भारतीयता वैश्विक संदर्भों से जुड़ी और अपने अनोखेपन मे प्रकाशित भारतीयता है जिसमें विश्व कविता का भी उतना ही स्थान है जितना भारतीय कविता का। ये शायद पहली बार होगा कि किसी फेस्टिवल में विश्व कविता के दो सत्र आयोजित हैं। इसी तरह प्रवासी भारतीय लेखक भी अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहते हैं लेकिन उनके लेखन के प्रकाशन और मूल्यांकन को लेकर कोई ठोस प्रयास देश में नहीं होते। विश्व के प्रमुख प्रवासी भारतीय लेखकों को आमंत्रित करने का लक्ष्य है कि उनसे संवाद कायम किया जाए एवं उनके साहित्य के मूल्यांकन के प्रयास किये जायें। इस समय भारत के बाहर करीब 66 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जहां हिन्दी पढ़ाई जाती है। इनके साथ सहयोगी वातावरण बन सके इसलिये इन्हें भी आमंत्रित किया गया है। अंतत: वैश्विक हिन्दी के निर्माण में इनकी बड़ी भूमिका होगी।

इस फेस्टिवल के पहले देश के 55 स्थानों पर पुस्तक यात्राऐं आयोजित की गई थीं। जिस तरह हमारे गांव व कस्बों ने पुस्तक यात्राओं को हाथों-हाथ लिया उससे उम्मीद बनती हे कि पुस्तक संस्कृति अभी हमारे देश में जीवित है। बच्चे और युवा किताबें पढ़ना चाहते हैं, हम ही उन तक नहीं पहुंच पाते। पुस्तक यात्रा इस भ्रम को तोड़ती है कि किताबों के पाठक कम हो रहे हैं। वो बताती है कि किताबें अब भी बातें करती हैं, और व्यापक भारतीय समाज में ज्ञान की भूख अभी बरकरार है। हम अगले एक साल में एक लाख से अधिक पुस्तक मित्र बनाने का प्रयास करेंगे।

आईसेक्ट आज देश का लगभग सबसे बड़ा सामाजिक उद्यमिता आधारित नेटवर्क है और वह समाज के पास जाने में विश्वास रखता है। आईसेक्ट इस पूरे प्रयास को सामाजिक जरूरत के रूप में देखता है और सामाजिक उद्यमिता द्वारा इसकी पूर्ति करना चाहता है।

तेजी से बदलते समय में कोई भी भविष्य की घोषणा नहीं कर सकता पर विश्व रंग एक ऐसी रचनात्मक समावेशी प्रक्रिया की शुरुआत करना चाहता है, जिसमें कलाएं मानव व मानवीय संवेदनाओं के पक्ष में खड़ी हों, सस्टेनेबल डेव्लपमेंट हमारी चिन्ता के केन्द्र में हो और हिन्दी और भारतीय भाषाओं को विश्व में उचित स्थान मिले, रचनात्मक विस्तार की जगह मिले। राष्ट्र के भीतर उनमें आदान-प्रदान बढ़े। आगे भी हमारी कार्यवाही का आधार उपरोक्त अवधारणायें ही होंगी। विचार के साथ-साथ हम एक्शन पर भी बल देंगे। इसी के आगे रास्ते प्रकाशित होंगे।

आईये हम सब एक बेहतर समाज की संकल्पना के लिये दृढ़ संकल्पित हों जहां ज्ञान विज्ञान हमें भविष्य का रासता दिखाता तो है पर जहाँ कलात्मक संवेदना हमारे आंतरिक विश्व को समृद्ध करती है, हमें सही रास्ते पर चलने का आव्हान करती है। 'विश्व रंग' इसी दिशा की ओर एक शुरुआत है।

एक बार पुन: मैं आप सबका बहुत-बहुत स्वागत करता हूँ।

- संतोष चौबे

निदेशक,

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्व रंग'

श्रद्धांजलि

पद्मश्री रमाकांत गुंदेचा

जन्म : 24 नवम्बर 1962

निधन : 08 नवम्बर 2019

देश की वरिष्ठ ध्रुपद गायक जोड़ी पद्मश्री उमाकान्त-रमाकान्त गुंदेचा बंधुओं ने अपनी ध्रुपद गायकी से देश, विदेश में अपनी अलग पहचान बनाई है। आपको पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, म.प्र. शासन का कुमार गंधर्व सम्मान, म.प्र. गौरव सम्मान सहित कई सम्मान प्राप्त हैं। दोनों बन्धुओं ने भोपाल शहर में ध्रुपद संस्थान की स्थापना कर गुरु-शिष्य परम्परा को कायम रखते हुए आपने कई ध्रुपद गायक कलाकारों को ध्रुपद गायन की शिक्षा दी। गुंदेचा बन्धुओं की अंतिम सभा मिंटो हॉल में सम्पन्न हुई। पद्मश्री रमाकांत गुंदेचा का आकस्मिक निधन से देश ने एक वरिष्ठ ध्रुपद गायक खो दिया है।

कला समय परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

टैगोर अन्तरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव के अवसर पर
आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल की ऐतिहासिक व महत्वाकांक्षी परियोजना

कथादेश

अठारह जिल्दों में भारत की हिन्दी कहानियों का एक सम्यक् कोश

लगभग सवा सौ साल के परिदृश्य में लिखी गयीं कहानियों में से 650 प्रतिनिधि कहानियों को जिल्दबन्द करता यह बृहद् कथाकोश 18 खंडों में विभाजित है। हमारा यह प्रयास है कि इसमें उन कहानियों का सम्मेलन अवश्य हो, जिन्होंने काल-चेतना के साथ अपना रचनात्मक सामंजस्य स्थापित करते हुए नवीन सौन्दर्याभिरुचियों का सृजन किया। साथ ही, कहानी की सम्पूर्ण विकास-यात्रा का सांगोपांग रेखांकन व निरीक्षण करते 75 से अधिक आलोचनात्मक आलेखों तथा संकलित प्रत्येक कहानी पर स्वतंत्र टिप्पणियों को भी संग्रहीत किया गया है जो पाठक की दृष्टिभंगिमा का समुचित निर्देशन करेंगे।

प्रत्येक खंड अलग-अलग होते हुए भी परस्पर सम्बद्ध है। पाठक चाहें तो इन्हें स्वतंत्र संग्रह के रूप में भी पढ़ सकते हैं। क्रमवार अध्ययन हिन्दी कहानी की प्रांजल विरासत का आज के पाठक से अवश्य ही साक्षात् करवा सकेगा। इसकी उपयोगिता कहानी के शोधार्थियों के लिए तो है ही, कथा-रस के सामान्य आस्वादकों के लिए भी है।

खंड-1
धरोहर
(प्रेमचंद-पूर्व और प्रेमचन्दयुगीन कहानी)

भारत में कथा-कहानी की पुरानी परम्परा रही है। किन्तु साहित्य की एक आधुनिक विधा के रूप में कहानी का जन्म बीसवीं सदी के आरम्भ से ही माना जाता है। वस्तुत: 1857 के गदर के बाद की परिवर्तित राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का हिन्दी कहानी-परम्परा पर भी स्पष्ट प्रभाव पड़ा। गद्य का तथा गद्य में लिखी जाने वाली विभिन्न विधाओं का विकास इस दिशा में परिवर्तनकामी मोड़ उपस्थित करता है।

बीसवीं सदी के आरम्भ से लेकर छायावाद के अवसान तक के लगभग चार दशकों में लिखी जाने वाली 51 प्रतिनिधि कहानियाँ 'कथादेश' के पहले खंड 'धरोहर' में शामिल की गयी हैं। इन कहानियों से गुजरते हुए कहानी विधा के विकास की एक स्पष्ट रूपरेखा गोचर होती है।

इस खंड के अन्तर्गत एक तरफ जहाँ किशोरीलाल गोस्वामी, माधवप्रसाद सप्रे, राजा शिवप्रसाद सितारोहिन्द, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, गोपालराम गहमरी, इंशाअल्ला खाँ आदि की कहानियाँ हैं जिनसे कहानी विधा की जन्मजात प्रवृत्तियों के अभिदर्शन होते हैं; तो दूसरी ओर चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद सदृश मास्टर कथाकारों का भी प्रतिनिधि कहानियाँ संकलित हैं, जिनकी रचनाओं ने कहानी के आगत स्वरूप को सुनिश्चित किया।

अलावा इसके, इस खंड के अन्तर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बालकृष्ण भट्ट, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानन्दन पन्त, सियारामशरण गुप्त जैसे रचनाकारों की कहानियों की भी शमूलियत है, जिनकी पहचान हिन्दी साहित्य में मुख्यतया कथेतर विधाओं के कारण रूढ़ हो गयी है। बंग महिला, महादेवी वर्मा, शिवरानी देवी सदृश महिला कथाकारों की उपस्थिति भी इस खंड को समृद्ध करती है।

खंड-2 एवं खंड-3
प्रेमचन्दोत्तर कहानी

सन- 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ का शुभारंभ भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक परिघटना है। प्रेमचन्द की सदारत में इसके पहले महाअधिवेशन के बाद साहित्य-मात्र के सरोकारों में परिवर्तन को चिन्हित किया जा सकता है। 1936 में ही प्रेमचन्द के अवसान के बाद हिन्दी कहानी में प्रत्यक्ष रूप से दो अन्तरवर्ती धाराओं को लक्षित किया जाने लगा। एक तरफ तो जैनेन्द्र और अज्ञेय की व्यक्तिवादी सोच व कलात्मक वैशिष्ट्य-प्रधान रचनाएँ थीं तो दूसरी ओर यशपाल, वृन्दावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन आदि की कथ्यप्रधान रचनाएँ भी।

'कथादेश' का दूसरा व तीसरा खंड 'प्रेमचन्दोत्तर कहानी' के इस बहुरंगी परिदृश्य को समेकित करता है। दोनों खंडों में जैनेन्द्र कुमार, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय, यशपाल, अमृतलाल नागर, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', उपेन्द्रनाथ अश्क, रांगेय राघव, जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली', विष्णु प्रभाकर वृन्दावनलाल वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेन, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, रामप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी, विश्वम्भरनाथ शर्मा

कौशिक, शिवपूजन सहाय, देवेन्द्र सत्यार्थी आदि प्रतिनिधि रचनाकारों की 60 से अधिक कहानियाँ हैं।

इनके अतिरिक्त इन खंडों में कन्हैयालाल माणकलाल मुंशी, गजानन माधव मुक्तिबोध, अयोध्या प्रसाद गोयलीय, गणेश शंकर विद्यार्थी, नलिन विलोचन शर्मा, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा, राहुल सांकृत्यायन, सुभद्राकुमारी चौहान, रामवृक्ष बेनीपुरी, हरिवंशराय बच्चन, जी.पी. श्रीवास्तव, बालशौरि रेड्डी सदृश ऐसे रचनाकारों की भी कहानियाँ शामिल हैं, जिन्हें हम साहित्य की अन्य विधाओं में अधिक सक्रिय पाते आये हैं।

कमलेश्वर, देवीशंकर अवस्थी, अमरकान्त, बच्चन सिंह व राधवल्लभ त्रिपाठी के सारगर्भित आलेख इस कालखंड की कहानियों की सम्यक् पड़ताल करते हैं।

खंड-4 एवं खंड-5
नयी कहानी

सन् '47 में भारत की आजादी ने कथा-परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। आजादी से पूर्व जिस समाज की परिकल्पना की गयी थी, गाँधी के सपनों के उस 'सुराज' की सम्भाव्यता पर सन्देह की छाया पड़ने लगी थी। दूसरे महायुद्ध, विभाजन व तज्जनित दंगों के परिदृश्य ने रचनाकारों में मोहभंग का बीजारोपण कर दिया।

पाँचवें दशक तक आते-आते इस प्रवृत्ति ने हिन्दी कहानी में 'अनुभव की प्रामाणिकता' को बल प्रदान किया और कहानी में नयी प्रवृत्तियों के उन्मेष ने 'नयी कहानी' आन्दोलन को हवा दी। राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर इसआन्दोलन के झंडाबरदार बने। साथ ही, रेणु, निर्मल वर्मा, अमरकान्त, भीष्म साहनी, शेखर जोशी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सेबती, मन्नू भंडारी आदि की उपस्थिति ने इस कालखंड को हिन्दी कहानी का स्वर्णयुग बना दिया तथा 'कहानी' हिन्दी साहित्य की केन्द्रीय विधा बन गयी।

'कथादेश' का चौथा और पाँचवाँ खंड 'नयी कहानी' के इसी दौर को समर्पित है। दोनों खंडों में राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, अमरकान्त, निर्मल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, भुवनेश्वर, अमृत राय, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, मार्कण्डेय, विजयदान देथा, कृष्णबलदेव वैद, गुलशेर खान शानी, शिवप्रसाद सिंह, शिवानी आदि की लगभग 70 कहानियाँ सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त ये दोनों खंड पाठकों को कुँवर नारायण, त्रिलोचन, धनंजय वर्मा, धर्मवीर भारती, बलराज साहनी, भैरवप्रसाद गुप्त, शमशेर बहादुर सिंह, मन्नु हरिशंकर परसाई, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आदि के कथाकार-रूप से भी परिचित कराते हैं।

इन खंडों में 'नयी कहानी' आन्दोलन व इस दौर में लिखी गयीं कहानियों की पड़ताल करते आलोचनात्मक आलेखों को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है। इन आलोचकों में नामवर सिंह, देवीशंकर अवस्थी, सुरेन्द्र चौधरी, राजेन्द्र यादव व रामदरश मिश्र के नाम प्रमुख हैं।

खंड-6 एवं खंड-7
साठोत्तरी कहानी

सन् साठ के बाद की कहानी को उसके विद्रोहात्मक तेवर के कारण पहचाना जाता है। चीन का आक्रमण व नेहरू का पर्यावसान हिन्दुस्तानी इतिहास को निर्णायक मोड़ प्रदान करता है। विभाजन, फसाद, मोहभंग, यान्त्रिकता, सरकारी परियोजनाओं के प्रति असन्तोष, भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही आदि के बीच घुटते हुए आम आदमी की नियति को साठोत्तरी कहानी ने स्वर दिया। पूर्ववर्ती राजेन्द्र यादव कमलेश्वर और मोहन राकेश ने 'नयी कहानी' का जो परचम ऊँचा किया था, साठोत्तरी कहानीकार उसके प्रति भी विद्रोह का रुख अपनाते दिख पड़ते हैं। कहानी में कथा-मात्र की उपस्थिति भी एक अतिरिक्त बोझ की तरह लगने लगती है एवं अ-कविता की तर्ज पर अ-कहानी का दौर शुरु होता है। ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, दूधनाथ सिंह व काशीनाथ सिंह इस दौर के प्रतिनिधि रचनाकार हैं।

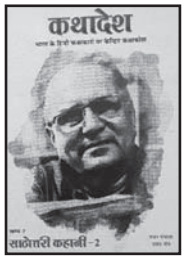

'कथादेश' के छठे और सातवें खंड में छठे व सातवें दशक की लगभग 80 प्रतिनिधि कहानियों को शामिल किया गया है। इन रचनाकारों में ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, राजकमल चौधरी, शैलेश मटियानी, श्रीलाल शुक्ल, विजयमोहन सिंह, विद्यासागर नौटियाल, असगर वजाहत, अवधनारायण मुद्गल, गंगाप्रसाद विमल, सतीश जमाली, से. रा. यात्री, कामतानाथ, गिरिराज किशोर, ममता कालिया, मनोहर श्याम जोशी, चित्रा मुद्गल, मुद्राराक्षस, रमेश बतरा आदि की प्रतिनिधि कहानियों को इन खंडों में जगह दी गयी है।

विश्वनाथ त्रिपाठी, परमानन्द श्रीवास्तव, रामदरश मिश्र, शुकदेव सिंह आदि के आलोचनात्मक आलेखों ने इस दौर की कहानियों की प्रमुख प्रवृत्तियों का आकलन किया है।

खंड-8, 9, 10, 11, 12, 13 एवं खंड--14
समकालीन कहानी

साठोत्तरी कहानी के बाद से उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशक तक लगभग तीन दशकों के

कालखंड में लिखी जाने वाली कहानियों को 'कथादेश' के 'समकालीन कहानी' नामक खंड में शामिल किया गया है। निकट अतीत की समयावधि में लिखी जाने वाली इन कहानियों की तादाद इतनी अधिक है कि इस खंड को 7 उपखंडों में विभाजित करना पड़ा। वस्तुत: भारतीय इतिहास में ये तीन दशक सर्वाधिक उथल-पुथल वाले रहे भी हैं।

परिवर्तन इतनी त्वरित गति से हुए और उसके आयाम इतने बहुविध थे कि उन्हें साहित्य की किसी विधा में सम्पूर्ण रूप से दर्ज करना पहले-सा सरल नहीं रहा। अन्तिम दशक में भूमंडलीकरण व क्षेत्रीयतावाद, बाजार व उपभोक्तावाद, भावनाओं का वस्तूकरण, साम्प्रदायिकता का नवीनीकरण, पुनरुत्थानवादी ताकतों का उभार, राजनीति का अपराधीकरण आदि ने यथार्थ के एकांगी चेहरे को पूर्णतया बदल दिया।

इसी कालावधि में अस्मितावादी विमर्शों के अन्तर्गत स्त्री, दलित व आदिवासी चिन्तनों का उभर देखा गया। मंडल कमीशन तथा राजेन्द्र यादव के सम्पादन में 'हंस' का इसमें रेखांकनीय योग था। संकलित रचनाकारों की कहानियाँ इस दौर के कटु यथार्थ की विभिन्न प्रतिच्छवियाँ हैं, भाषा-शिल्प जैसे उपकरणों को यथार्थ के प्रकटीकरण के अनुरूप ढाला गया, कहने का लहजा परिवर्तित किया गया। समकालीन कथाकारों में स्वयं प्रकाश, उदय प्रकाश, अखिलेश, ओमप्रकाश वाल्मीकि, गोविन्द मिश्र, रमेश चन्द्र शाह, धीरेन्द्र अस्थाना, नासिरा शर्मा, प्रियंवद, मंजूर एहतेशाम, मनोज रूपड़ा, शशांक, संजीव, शिवमूर्ति आदि ने अपने समय के जटिल यथार्थ को कहानियों में दर्ज किया। इनकी कहानियाँ समकालीन जीवन के बीहड़ में साहसपूर्वक प्रवेश करती हैं, और एक बेहतर निजाम के लिए पूर्णतया प्रतिबद्ध होती है।

'कथादेश' के इन खंडों में लगभग 250 समकालीन कथाकारों की प्रतिनिधि कहानियाँ संकलित हैं। इनमें प्रमुख हैं- उदय प्रकाश, अखिलेश, गोविन्द मिश्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, अब्दुल बिस्मिल्लाह, नासिरा शर्मा, मंजूर एहतेशाम, पंकज बिष्ट, प्रियंवद, शशांक, रघुनन्दन त्रिवेदी, रमेश चन्द्र शाह, संजीव, शिवमूर्ति, संतोष चौबे, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, स्वदेश दीपक, मुकेश वर्मा, योगेन्द्र आहूजा, प्रभु जोशी, मनोज रूपड़ा, अलका सरावगी, नवीन सागर, हरि भटनागर, देवेन्द्र, हिमांशु जोशी, गीतांजलि श्री, अवधेश प्रीत, जयनन्दन, धीरेन्द्र अस्थाना, नवीन कुमार नैथानी, आनन्द हर्षुल, कैलाश बनवासी, भगवान दास मोरवाल, राजू शर्मा आदि।

इन खंडों की साहित्य की दूसरी विधाओं में अपेक्षया अधि ख्यात विनोदकुमार शुक्ल, राजेश जोशी, विष्णु नागर, कुमार अम्बुज, कृष्ण कुमार, राधावल्लभ त्रिपाठी, ज्ञान चतुर्वेदी, ध्रुव शुक्ल, नरेन्द्र कोहली, पुरुषोत्तम अग्रवाल, प्रभात त्रिपाठी, निरंजन श्रोत्रिय, ब्रजेश्वर मदान, यशवन्त व्यास आदि की कहानियाँ समृद्ध करती हैं।

समकालीन कहानी को विभिन्न कोणों से पड़ताल करते आलोचनात्मक लेखों में सुरेन्द्र चौधरी, गोपाल राय, शशांक, वरयाम सिंह, विनय दुबे, परमानन्द श्रीवास्तव, रमेश उपाध्याय, खगेन्द्र ठाकुर, अखिलेश, शम्भुनाथ, नीरज खरे, जयशंकर, शम्भु गुप्त, पल्लव, पुन्नी सिंह, कैलाश बनवासी, हरिओम राजोरिया, शशिधरन, ऋतु भनोट व राजीव कुमार के आलेख महत्वपूर्ण हैं।

खंड-15, 16, 17 एवं खंड-18
युवा कहानी

बीसवीं सदी के अन्त तक यह तथ्य पूरी तरह स्वीकार्य हो चुका था कि हिन्दी कहानी इतनी सशक्त और सक्षम हो चुकी है कि उसकी तुलना विश्व की किसी भी भाषा में लिखी जा रही कहानियों से की जा सकती है। नयी सदी में कहानीकारों की एक नयी पौध आई, जिसने इस विधा में पूर्ववर्ती तमाम परिवर्तनों की निस्बत कहीं अधिक परिवर्तन घटित किया। चाहे वह कथ्य के चुनाव का सवाल हो या उसके अनुरूप भाषा-शैली का निर्माण, इस पीढ़ी ने कहानी के प्रत्येक उपकरण का नवीनीकरण किया।

अनुभव के क्षेत्र अत्यन्त व्यापक व विस्तीर्ण हो चुके थे, नयी कथा-युक्तियों के प्रयोग का बाहुल्य लक्षित किया जा सकता था, भाषा में ताजगी व टटकापन विस्मित कर देने वाला था। साथ ही इस पीढ़ी में उन लोगों का भी शुमार किया जा सकता है, जो वैसे तो पिछली सदी के आखिरी दशक से लिख रहे हैं, लेकिन उनकी पहचान नयी सदी की इस नवागत पीढ़ी के साथ ही बनी।

'कथादेश' का युवा कहानी खंड 4 उपखंडों में विभाजित है, जिनमें युवा पीढ़ी के लगभग सवा सौ कहानीकारों की कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानीकारों में अल्पना मिश्र, नीलाक्षी सिंह, मनीषा कुलश्रेष्ठ, वन्दना राग, प्रियदर्शन, पंकज मित्र, प्रभात रंजन, मनोज पांडेय, गीत चतुर्वेदी, शशिभूषण द्विवेदी, चन्दन पांडेय, कुणाल सिंह,विमलचन्द्र पांडेय, अजय नावरिया, राकेश मिश्र, उमाशंकर चौधरी, रवि बुले, रणेन्द्र पंकज सुबीर, तरुण भटनागर, बसन्त त्रिपाठी, कविता, गीताश्री, पंखुरी सिंह, पराग माँदले, अनुज, आशुतोष, सत्यनारायण पटेल, सूरज बड़तिया, कैलाश वानखेड़े, सविता पाठक, सुभाषचन्द्र कुशवाहा, अरुणकुमार असफल, शिवेन्द्र, मानव कौल, किरण सिंह, प्रत्यक्षा, कबीर संजय, संज्ञा उपाध्याय, इन्दिरा दाँगी, उपासना, गौरव सोलंकी, योगिता यादव, ज्योति चावला, शर्मिला जालान, संजीव चन्दन, श्रद्धा थवाईत, राहुल सिंह, संजना तिवारी, दीपक श्रीवास्तव, हुस्न तबस्सुम निहाँ, राजीव कुमार, हरिओम, सीमा शफ़क, सोनाली सिंह, सौमित्र आदि प्रमुख हैं।

संतोष चौबे, विनोद तिवारी, रोहिणी अग्रवाल, वैभव सिंह, जितेन्द्र गुप्ता, राकेश बिहारी, अवशेध मिश्र, भरत प्रसाद, राहुल सिंह आदि के आलेख युवा कहानी के परिदृश्य की पड़ताल करते हैं।

■

वनमाली कथा सम्मान

प्रियंवद को राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान, तरुण भटनागर और नौ अन्य रचनाकार भी हुए सम्मानित

वनमाली सृजन पीठ द्वारा प्रत्येक दो वर्षों में दिए जाने वाले प्रतिष्ठित वनमाली कथा सम्मान, वनमाली कथा आलोचना सम्मान और वनमाली साहित्यिक पत्रिका सम्मान इस वर्ष लोकप्रिय और चर्चित कथाकार प्रियंवद को राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान, कथाकार रणेन्द्र और भगवानदास मोरवाल को वनमाली कथा सम्मान, युवा कथाकार मनोज पांडेय, तरुण भटनागर और गौरव सोलंकी को वनमाली युवा व्यथा सम्मान प्रदान किया गया। वरिष्ठ आलोचक विनोद शाही को वनमाली कथा आलोचना सम्मान और युवा आलोचक राहुल सिंह को वनमाली कथा युवा आलोचना सम्मान दिया गया। जबकि वनमाली साहित्यिक पत्रिका सम्मान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' को दिया गया है। इस वर्ष वनमाली विशिष्ट कथा सम्मान से किरण सिंह और उपासना चौबे को सम्मानित किया गया।

इस वर्ष के वनमाली सम्मानों का चयन संतोष चौबे की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय समिति जिसमें मुकेश वर्मा, लीलाधर मंडलोई, बलराम गुमास्ता, महेन्द्र गगन शामिल थे, ने किया। कथाकार प्रियंवद का चयन कहानी में उनके सरस कथन और विरल क्राफ्ट को दृष्टिगत करते हुए किया गया। वे प्रेम के अद्वितीय चितेरे हैं। उनकी भाषा ठेठ गद्य की भाषा है और सूक्ष्म अन्वेषण के चलते वे कथा को अधिक प्रभावी तथा विश्वसनीय बनाते हैं। जबकि अन्य कथाकारों का चयन कथा जगत में उनकी समकालीन उपस्थिति, सक्रियता और योगदान के चलते किया गया है। कथा सम्मान के अतिरिक्त चयन समकालीन परिवेश में उनके सार्थक हस्तक्षेप और सर्जनात्मकता को ध्यान में रखकर किया गया है।

गौरतलब है कि इन सम्मानों की स्थापना कथाकार जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' की स्मृति में 1993 में की गई थी। अब तक यह सममान शशांक, स्वयंप्रकाश, असगर वज़ाहत, उदय प्रकाश, मैत्रेयी पुष्पा, सतीश जायसवाल, ममता कालिया, मंजूर एहतेशाम, चित्रा मुद्गल, प्रभु जोशी, मालती जोशी, तेजिन्दर, मुकेश वर्मा जैसे वरिष्ठ कथाकारों और मनोज रूपड़ा, आनंद हर्षुल, कैलाश बनवासी, पंकज सुबीर, मोहम्मद आरिफ, पंकज मित्र, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अल्पना मिश्र जैसे समकालीन/युवतर कथाकारों को प्रदान किया जा चुका है। वनमाली तथा आलोचना पुरस्कार से रोहिणी अग्रवाल, जयप्रकाश, डॉ. विनोद तिवारी तथा वनमाली कथा पत्रिका सम्मान से कथन (सं. रमेश उपाध्याय), रचना समय (सं. हरि भटनागर) और बनास जन (सं. पल्लव) को विभूषित किया जा चुका है।

उक्त सभी पुरस्कार टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 'विश्व रंग' के दौरान 10 नवम्बर को प्रदान किये गये। वनमाली सृजन पीठ एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल द्वारा हिन्दी और भारतीय भाषाओं को केन्द्र में रखते हुए वैचारिक विमर्श तथा सांस्कृतिक आपसदारी का विराट समागम ''विश्व रंग'' टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव 7 नवंबर से 10 नवंबर 2019 तक भोपाल के मिंटो हॉल में आयोजित किया गया। लगभग 60 सत्रों में संयोजित यह विश्व कुंभ अनेक विषयों का अनूठा मंच रहा जो भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न श्री प्रणब मुखर्जी के रिकॉर्डेड विडियो संदेश एवं देश-विदेश के 500 से अधिक विद्वानों के आत्मीय सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। ■

हाशिये में करुणा की मार्मिकता और ट्रान्सजेंडर जगत

सामान्य तौर पर मानव समाज दो जातियों में विभाजित है स्त्री और पुरुष और जो न स्वयं में और समाज द्वारा पूरी तरह से पुरुष है और न स्त्री उन्हें भारतीय समाज में हिंजड़ा, किन्नर ट्रान्सजेंडर कहा जाता है। आज ट्रांसजेंडर शब्द ज्यादा प्रचलित है। ट्रांसजेंडर समाज का एक ऐसा वर्ग रहा जो सदियों से इतिहास में मोजूद होते हुए भी हमेशा हाशिये का समाज रहा। न उन्हें एक इंसान के रूप में पहचान मिली और न किसी सामाजिक व्यक्ति के रूप में। वे अपने ही लोगों द्वारा तिरस्कृत अपमानित होते रहे हैं। उन्हें देखा जा सकता है किसी चौराहे की रेड लाइट पर भीख मांगते हुए, होली, दीवाली की बधाई मांगते हुए या भी जन्मोत्सव और विवाह के अवसर पर गाते बजाते हुए। इक्का-दुक्का दिख जाते हैं कहीं कोई छोटी सी नौकरी करते हुए। कुछ सेक्स वर्कर के रूप में भी पाये जाते हैं और इस पेशे को अपनी मजबूरी बताते हैं कि उनके पास जीविका का कोई साधन नहीं है। सबसे अधिक वे पात्र है हंसी का। इसी हंसी और उपेक्षा से बचने के लिए वह अपनी बनाई एक कम्यूनिटी में रहते हैं और अपनी असामान्य शारीरिक स्थिति को अपनी नियति मानकर अपनी गुज़र बसर करते हैं। लेकिन क्या जो जीवन उन्हें मिला है उसे अपनी नियति मान पाए? शायद नहीं। एक सुंदर स्त्री होते हुए उनकी आवाज़ पुरुष जैसी हो सकती है पर मन? मन तो वह सभी कुछ चाहता है जो हम में से कोई भी चाहेगा। अपनों द्वारा त्याग दिये जाने का दुख, कभी स्कूल न जाने पाने का दुख, कोई अपना न होने का दुख और सबसे बड़ा दुख कि समाज द्वारा उन्हें किसी और लोक से आया मानकर देखे जाने का दुख। हजारी प्रसाद द्वारा लिखित उपन्यास अनाम दास पोथा में रैक्व ने कोई स्त्री नहीं देखी थी। जब वह उसको पहली बार देखता है तो आश्चर्य में डूब जाता है उसे समझ में ही नहीं आता है क्या? कोई देव पुरुष या कोई और? पर उसमें एक कौतूहल है आश्चर्य है उत्सुकता है उपहास नहीं। और हम क्या पहली बार उन्हें देख रहे हैं? नहीं। उनके मन यह सारे दुख कहीं गहरे में जमे हुए हैं जो जब-तब कविता में ढलते हैं। ट्रांसजेंडर कवियों की रचनाएँ किसी काल्पनिक दुनिया से जुड़ी न होकर भोगे हुए सच को प्रतिबिम्बित करती है। हो सकता है यह कविताएँ, कविता के फॉर्म के अनुरूप न हो पर उनमें अनुभूति की सच्चाई है जो उनकी कविता को प्राणवान बनाती है।

रिंटू दास लिखती हैं

जब मैं आईने के सामने/और आईना मेरे सामने होता है/मेरे भीतर से आवाज़ आती है/न मैं पुरुष हूँ/न स्त्री हूँ/ मैं एक त्रुटि हूँ।

क्या वे आनंदित है अपनी स्थिति पर? जिस तरह का अकेलापन वे भोग रहे हैं उसमें उनका क्या अपराध है? क्या उन्हें मुख्य धारा में नहीं आना चाहिए? समाज उन्हें अपनाने न अपनाए पर उनके परिवार के लोग ही उन्हें नहीं अपनाते यह दुख उनका सबसे बड़ा है कि उनके पास कहने के लिए कोई अपना नहीं है। बिप्लाब घोष को ऐसा लगता है जैसे प्रकृति पर भी उनका कोई अधिकार नहीं है।

कोई फूल मेरे लिए नहीं किसी भी पक्षी का गीत मेरे लिए नहीं / कोई भी पिता हमें स्कूल के गेट पर छोड़ने नहीं आता /मैं हमेशा सोचती हूँ/ क्या मैं मूर्ख हूँ।

अपने आप में घुटने के सिवा क्या चारा। जहाँ भी ये जाते हैं इन्हें लूट-खसोट का ही सामना करना पड़ता है। परिवार, स्कूल, अदालत कहीं भी इनकी सुनने वाला कोई नहीं है। धनंजय सिंह चौहान लिखते हैं-

जब आया यौवन मेरा। बदसूरत लगने लगा अपना ही चेहरा/ अब मैं ना औरत ना ही लगने लगी मर्द/ घुट-घुट कर जीने लगी किसी को ना सुनाया दर्द/ आया यौवन छाई जवानी। दुनियां बनी मेरे जिस्म की दीवानी/ नोचने लगे लोग मिल बांट कर/ पढ़ना भी हो गया दूभर/ होनहार छात्र की जिंदगी कर दी लोगों ने नर्क/ रोती रही बिलखती रही किसी को ना पड़ा फर्क/ घरवालों ने भी सुना अनसुना किया। मेरा जीवन नर्क किया/ घर से बाहर से तो लुटती ही थी पर पुलिस वालों ने भी खूब लूटा/ जेल कचहरी और अदालत के चक्कर काटते काटते दुनिया से रिश्ता टूटा।

फिर भी बड़ी कोशिशों से इनमें से कुछ लोग इस दुनिया से इनमें से लड़कर सिर उठाकर जीवन जीने कि कोशिश में है। वे इस नाचने-गाने को भी बुरा नहीं समझते हैं वह इसे एक कर्म की तरह देखते हैं। वह इसे अपनी रोज़ी-रोटी की तरह देखते हैं जब तक कि उन्हें कोई बेहतर विकल्प न मिल जाये। और उनमें से कुछ लोग पढ़-लिखकर कोई प्रोफेसर कोई टीचर कोई इंजीनियर भी है। ट्रांसजेंडर कवियों की रचनाएँ शायद इस समाज के मन में थोड़ी सी उनके प्रति सहानुभूति को जन्म दे सके जिससे भले ही उन्हें वह मुकम्मल जगह मिल पाये या न पाये जिसके वे हक़दार हैं पर इतनी जगह तो मिल ही जाये जिससे वे एक सम्मान जनक जीवन जी सकें। धनंजय सिंह की कविता इस ओर इशारा भी करती है।

उठ खड़ी हो मेरी रानी/ तुझे ताली नहीं बजानी बल्कि ताली है बजवानी/ तमसो मा ज्योतिर्गमय का दण्ड ले कर/ खड़ी हुई और चल पड़ी विद्या की ज्योति को ले कर/ जिस दिन खुद को जाना। दुनिया ने भी मुझ को माना/ असली नकली रह गए पीछे/ पानी के बुल बुले हों जैसे/ कोई किसी को आगे नहीं बढ़ाता/ खुद में हिम्मत ना हो तो कुछ भी हासिल नहीं हो पाता/

■

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, निर्देशक एवं कवि आशुतोष राणा से
सिद्धार्थ चतुर्वेदी की बातचीत

एक मुलाकात आशुतोष राणा के साथ

साहित्य, कला एवं संस्कृति वाद का विषय है, विवाद का नहीं

साहित्य संस्कृति और कला का समावेश विश्व रंग झीलों के शहर भोपाल से पूरे विश्व में अपनी छटा बिखेर रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों की श्रंखला में शुक्रवार को सांयकालीन मुलाकात सत्र में सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, निर्देशक एवं कवि आशुतोष राणा लोगों से रूबरू हुए। मंच संचालन विश्वरंग के सह निदेशक सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने किया। फिल्म अभिनेता आशुतोष राणा ने कला और साहित्य पर विस्तार से अपने अनुभव को साझा किया उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि निराकार को साकार करने वाला व्यक्ति ही कलाकार होता है। अतीत में ग्लानियाँ और भविष्य में चिंताएं होती हैं, इनके बीच सच्चा कलाकार वही है जो अतीत और भविष्य से आपको वर्तमान में ले आए और चिंताओं-ग्लानियों से मुक्त कर दे। कलाकार किसी की परिस्थिति तो नहीं बदल सकता लेकिन मनःस्थिति जरूर बदल सकता है। उन्होंने कहा कि साहित्य, कला एवं संस्कृति वाद का विषय है, विवाद का नहीं। जब कोई रचना दूर तक फैलती है तो रचनाकार को बड़ा सुख मिलता है।

राणा ने किया कविता पाठ

आशुतोष राणा ने भारत के महान पुरुषों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि राम, कृष्ण, चंद्रगुप्त, चाणक्य, गांधी, रानी पद्मावती ऐसी चेतनाएं हैं जो केवल आती हैं यह कभी जाती नहीं हैं। यह विचार के रूप में हमेशा हम सबके अंदर जीवित रहते हैं, आशुतोष राणा ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'हे भारत के राम जगो मैं तुम्हे जगाने आया हूं' सुनाकर सभागार में जोश का संचार किया।

अपने सपनों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी लें युवा

आशुतोष राणा ने विशेष रूप से युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आपके सपने पूरे करने की जिम्मेदारी केवल आपकी ही है। आप जब अपने लिए सोचते हैं या अपने लिए ख्वाब देखते हैं तो इसे बिल्कुल भी दरिद्रता से ना देखें। अगर आप असंभव सोच सकते हैं तो असंभव को संभव भी कर सकते हैं।

दृष्टि से ज्यादा दृष्टिकोण की अहमियत

आशुतोष राणा ने कहा कि साहित्य में दृष्टि से ज्यादा दृष्टिकोण का महत्व होता है। मेरी किताब 'मौन मुस्कान की मार' पीटकर पुचकार करने की परिणिति है। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता और साहित्य बड़ा इज्जत का काम है।

राणा ने कहा मैरे जीवन में गुरु का बड़ा महत्व

विश्व रंग के दौरान आशुतोष ने अपने कॉलेज के दिनों को याद करते हुए कई किस्से साझा किए। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन में मेरे गुरु पंडित देव प्रभाकर शास्त्री का बड़ा योगदान है, उनके ही मार्गदर्शन से मैं आज यहां तक पहुंचा हूं। गौरतलब है कि आशुतोष राणा अपने शहर गाडरवारा में रामायण के दौरान रावण का किरदार निभाया करते थे, इसके बाद उन्होंने सागर विश्वविद्यालय से पढ़ाई की और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा दिल्ली में अभिनय सीखा जिसके बाद वह फिल्मी दुनिया में आ गए और अपने बेहतरीन अनुभव के दम पर अलग पहचान स्थापित की।

विश्वरंग महोत्सव जैसा आयोजन भोपाल में ही संभव है

उन्होंने कहा मध्यप्रदेश तो भारत का बीज पुंज है जिसने मध्यप्रदेश घूम लिया तो मान लो उसने पूरे भारत को घूम लिया। देश की कला, संस्कृति, सभ्यता साहित्य मध्यप्रदेश ने ही संजोकर रखी है। आशुतोष राणा ने कहा कि मध्यप्रदेश देश की सांस्कृतिक राजधानी है। भोपाल सांस्कृतिक भूमि है इसलिए विश्व रंग महोत्सव जैस आयोजन तो सिर्फ मध्यप्रदेश के भोपाल में ही संभव हैं।

आशुतोष ने बचपन की यादें भी साझा की

टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव विश्व रंग के पांचवे दिन मिंटो हॉल में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुलाकात कार्यक्रम हुआ जिसमें आशुतोष राणा और सिद्धार्थ चतुर्वेदी मंच पर सवाल-जवाब कर रहे होते हैं। सत्र में आशुतोष राणा के जीवन से जुड़े कुछ पल जानने को मिले। कार्यक्रम में सिद्धार्थ ने आशुतोष से पूछा कि आपकी पुस्तक मौन मुस्कान की मार व्यंग्य में क्या खास ? वहीं आशुतोष राणा ने सभी को धन्यवाद दिया और कहा दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं। मौन मुस्कान की मार से शुरूआत इसलिए हुई क्योंकि मैं गाडरवाड़ा से हूं और यहां ग्रामीण अंचल है तो यहां पर बच्चे साक्षर देर से हों लेकिन शिक्षित बहुत जल्दी हो जाते हैं। तो इसमें स्कूल ही पढ़ाने का काम नहीं करता इसमें गांव भी कहीं न कहीं गुरुमंत्र दे रहा होता है। इसके बाद उन्होंने अपने बचपन की यादों को साझा किया।

■

विश्व रंग : झलकियाँ

4-5 नवम्बर 2019

विश्व रंग के विविध रंग

शब्द, रंग, ध्वनि और दृश्य- टैगोर की विरासत का पुनरावलोकन

रवीन्द्र भवन, भारत भवन, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय परिसर, भोपाल (म.प्र.)

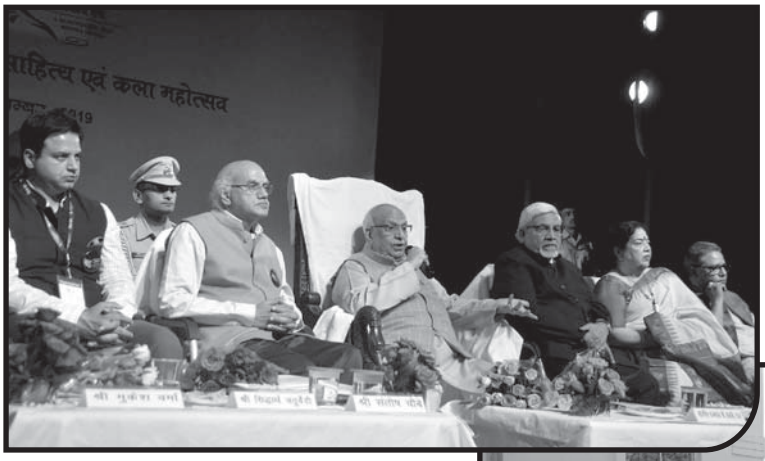

प्रथम दिवस

रवीन्द्र भवन सभागार : विश्व रंग महोत्सव भारत ही नहीं पूरे एशिया का पहला आयोजन। शुभारंभ के अवसर पर महामहिम राज्यपाल लालजी टंडन ने कहा – गुरूदेव को इस आयोजन से बड़ी श्रद्धांजलि नहीं हो सकती।

शारदा सभागार, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय परिसर में दो तारा पर रवीन्द्र संगीत मंगलाचरण कलाकार शुभव्रत सेन एवं साथी कलाकार।

द्वितीय दिवस

भारत भवन : राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात कलाकार चित्रकार प्रभाकर कोल्टे, अशोक भौमिक, संतोष चौबे, विनय उपाध्याय द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

भारत भवन के अंतरंग सभागार में विश्व प्रख्यात सरोद वादक कलाकार आमीर खान के साथ उनके पिता नफीस खान तबले पर संगत देते हुए। टैगोर के रचित गीतों की सुरमय प्रस्तुति दी गई।

6-7 नवम्बर 2019

विश्व रंग के विविध रंग

रवीन्द्र भवन, भारत भवन, मिंटो हॉल, भोपाल (म.प्र.)

तृतीय दिवस

भारत भवन के अंतरंग सभागार में उपस्थित कवियों के कविता पाठ के दो सत्र हुए। द्वितीय सत्र में अपनी रचना का पाठ करते हुए कवि प्रेमशंकर शुक्ल।

नेशनल सेमीनार ऑन आर्ट्स इन इंडिया के अवसर पर **भारत भवन** परिसर में लगी रवीन्द्रनाथ टैगोर की पेंटिंग प्रदर्शनी का अवलोकन करते लीलाधर मंडलोई, संतोष चौबे, चित्रकार प्रभाकर कोल्टे एवं अन्य साहित्यकार गण।

चतुर्थ दिवस

मिंटो हॉल सभागार में स्वस्ति गान, ध्रुपद गायक पद्मश्री उमाकांत गुंदेचा, रमाकांत गुंदेचा ने ध्रुपद गायन की प्रस्तुति दी।

मिंटो हॉल सभागार में संस्कृति मंत्री माननीय डॉ. विजयलक्ष्मी साधो द्वारा हिन्दी कहानी के दस्तावेजी संग्रह 'कथादेश' का लोकार्पण किया गया इस अवसर पर अभिनेता रजत कपूर द्वारा उद्बोधन दिया।

8-9 नवम्बर 2019

विश्व रंग के विविध रंग

मिंटो हॉल, भोपाल (म.प्र.)

पंचम दिवस

मिंटो हॉल में 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम में श्रोताओं से रूबरू होते हुए संतोष चौबे तथा अन्य साहित्यकार।

मिंटो हॉल में सुश्री ऋतुप्रिया खरे अन्य साहित्यकारों के बीच पुस्तक चर्चा कार्यक्रम के बाद स्मृति चिन्ह ग्रहण करते हुए साहित्यकार।

षष्ठ दिवस

मिंटो हॉल में हिन्दी में 'विज्ञान लेखन' पुस्तक का विमोचन करते हुए अतिथि साहित्यकार सुधीर चन्द्र, डॉ. नन्दकिशोर आचार्य, पद्मश्री रमेशचंद शाह, संतोष चौबे एवं सिद्धार्थ चतुर्वेदी।

मिंटो हॉल भोपाल में पहली बार आयोजित थर्ड जेंडर कवियों का कविता पाठ, कोलकाता से आई थर्ड जेंडर कवि आलिया एस.के सहित अन्य कवि साथियों को विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

9-10 नवम्बर 2019

विश्व रंग के विविध रंग

मिंटो हॉल, भोपाल (म.प्र.)

षष्ठ दिवस

मिंटो हॉल में इरशाद कामिल (इंक बैंड) ने विश्व रंग के मंच पर अपनी दमदार प्रस्तुति देकर श्रोताओं को आनंदित किया।

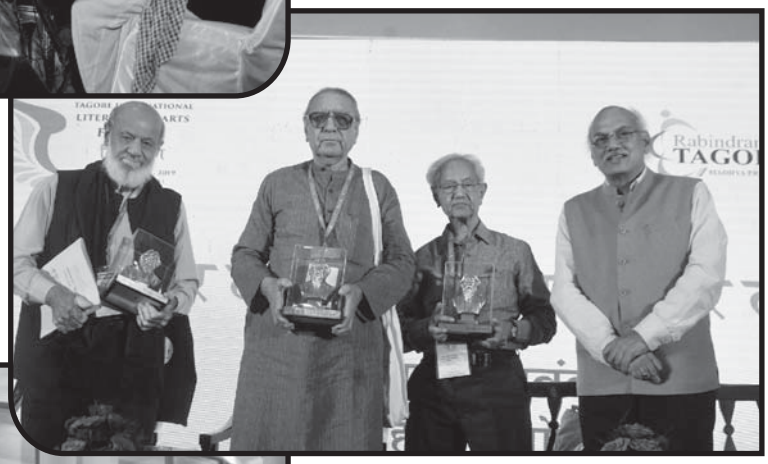

मिंटो हॉल में पद्मश्री रमेशचंद शाह, डॉ. नन्दकिशोर आचार्य साहित्यकारों को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए विश्व रंग निदेशक संतोष चौबे।

सप्तम दिवस

मिंटो हॉल का परिसर श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ। समापन बेला पर समारोह के निदेशक श्री संतोष चौबे ने फिर मिलने के वादे के साथ विश्व रंग में कहा... अलविदा!

मिंटो हॉल के मुक्ताकाश मंच पर रघु दीक्षित प्रोजेक्ट बैंड के साथ सात दिवसीय विश्व रंग महोत्सव का समापन सभी श्रोताओं ने रात्रिभोज के साथ आनंद लिया।

संस्मरण

कला संसार

राजेन्द्र नागदेव

'नेशविल आर्टिस्ट्स विलेज', अमेरिका के इस ग्राम की हवा में पुरातन की आहट सुनाई देती है। अधुनातन अमेरिका की चमक दमक, ऐश्वर्य और आर्थिक समृद्धि से कोसों दूर एक सीधासादा पुराना कलाकार ग्राम। यहाँ जो कलाकार रहते हैं वे आधुनिक कला के इस काल में भी सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दि की कला धरोहर का निष्ठा एवं समर्पण के साथ संरक्षण करते हुए केवल यथार्थवादी शैली में ही भूदृष्यों व व्यक्तिचित्रों का सृजन करते हैं। हर घर किसी कलाकार का ही है। 'ग्राम' शब्द सुनते ही हमारे मन में गाँव का जो चित्र अंकित हो जाता है- खेत, छोटी-छोटी झोपड़ियाँ, कच्चे मकान, गाय-बैल, भैंसे आदि- उससे यह नितांत भिन्न है। पुरानी स्थापत्य शैली की एक से तीन मंजिली ऊँची इमारतें हैं, चौड़ी, पक्की सड़कें है और हर घर के भूतल में दुकानें हैं। सड़कों पर तीव्र गति भागती कारें हैं किंतु बहुत कम। यह गाँव आधुनिक जीवन की व्यस्तता से दूर सहज जीवन जी रहा है। घर के बाहर भी लोग अत्यंत सादे वस्त्रों में दिखाई देते हैं जैसे घरों में रहते हैं। जब से इस कलाग्राम के बारे में सुना यहाँ आने और बीत चुके समय में फिर से चले जाने की लालसा थी। बहुत दिनों से सुप्त पड़ा चित्रकार मेरे अंदर जाग रहा था। कला से मेरा संबंध बहुत पुराना है। अपने चित्रों की एक एकल प्रदर्शनी दिल्ली की त्रिवेणी कलादीर्घा में 1974 में 'खण्डहर' विषय पर की भी थी। फिर व्यस्तताओं के चक्रव्यूह में इस तरह फँस गया कि कला से दूर होता चला गया।

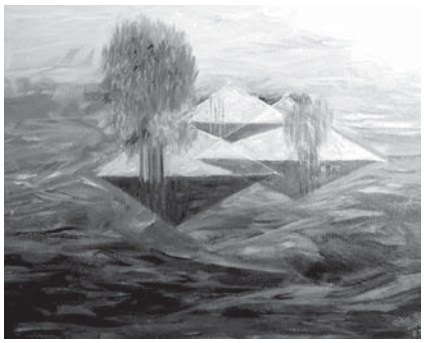

यहाँ मेरे पास समय ही समय है। मैं वापस कला के संसार में लौट गया हूँ। कुछ तैलचित्र बनाए। मेरा स्टूडियो तलघर में एक बड़ी सी मेज़ है। रंग, ब्रश, केन्वास सब उसी पर। यहाँ एक बड़ी समस्या है। अत्यधिक शीत के कारण रंग लम्बे समय तक नहीं सूखते। तैलरंगों को सूखने में तो एक माह तक का समय लग जाता है। तलघर में एकांत है। एकाग्रत के साथ काम किया जा सकता है। तैलचित्रों के अलावा मैंने घर के अंदर और बाहर के कई रेखांकन भी किये।

यहाँ एक चित्रकार मार्क एलन से परिचय हुआ। वे हमारी बेटी श्वेता और दामाद अमित के मित्र हैं। फ्रीलांस चित्रकार हैं। वे पुरातन यथार्थवादी शैली में दृष्टिचित्र बनाने में दक्ष हैं। अनेक विश्वविद्यलयों में उन्हें नियमित रूप से कला पर व्याख्यानों के लिए आमंत्रित किया जाता है। वे कला के हर पहलू पर बहुत गहराई में जाते हैं। कल के सिद्धांतों से लेकर रंगों-ब्रशों के रखरखाव तक में उनका अध्ययन आश्चर्यचकित करने वाला है। एक दिन वे घर आए। उन्होंने मेरे तैल और जलचित्र देखे। उन्हें अच्छे लगे। हमने कला के संबंध में कुछ बातें कीं। बातचीत में एक विचार यह भी आया कि हम दोनों की सम्मिलित कला प्रदर्शनी आयोजित की जाए। प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर अंग्रेजी में अनूदित मेरी कविताओं का पाठ भी हो। यह मेरे लिए बहुत अच्छा अवसर था। हमने उस दिशा में कुछ काम किया भी पर एलन की व्यस्तता व भारत वापसी का हमारा समय निकट आ जाने के कारण वह विचार कार्यरूप में बदल नहीं सका। मार्क के घर जाने का अवसर मिला। उनका स्टूडियो भी घर में ही है। पति-पत्नी दोनों चित्रकार हैं। एक बड़े हाल में स्टूडियो है। मैंने किसी चित्रकार का ऐसा स्टूडियो पहली बार देखा। पूरे स्टूडियो में बने-अधबने चित्र, खाली केन्वास, रंग-ब्रश और कला संबंधी पुस्तकें सब इतनी बड़ी संख्या में अल्मारियों में रखे और फ़र्श पर भी फैले हुए कि चलना मुश्किल। मार्क ने बताया उनकी नानी भी दक्ष चित्रकार थीं। उनका एक दृष्यचित्र स्टूडियो में है। नानी के कुछ चित्र 'व्हाइट हाउस' में भी लगे हैं। मार्क धुन के इतने पक्के हैं कि नैसर्गिक चित्रण के लिए घंटों नदी के जल में घुटने-घुटने पानी में खड़े रह कर काम कर सकते हैं। चित्रकारिता के अलावा वे गिरजाघर में वैवाहिक सलाहकार का कार्य भी करते हैं। उन्होंने अपना एक तैलचित्र और जलरंगों का डिब्बा मुझे भेंट किया।

हमारा विचार था कि 'नेशविल आर्टिस्ट्स विलेज' में मार्क के साथ जाएँ। उनसे उस ग्राम के विषय में विस्तृत प्रामाणिक जानकारी मिल सकती थी। वे उपलब्ध नहीं हो सके तो एक दिन उनके बिना ही चले गए। कलाग्राम कोलंबस जहाँ हम रहते हैं, से लगभग 40 मिनट की दूरी पर है। इस ग्राम में हर भवन में कलावीथिकाएँ, कलासंग्रहालय या कलाकारों के आवास हैं। लगभग हर भवन में भूतल पर छोटी-छोटी दुकानें हैं जहाँ पुरानी यूरोपीय शैली में बने चित्र, काष्ठ-शिल्प तथा अन्य कलाकृतियाँ विक्रय के लिए रखी हैं। एक दृष्टि में ग्राम उनींदा दोपहर की झपकी लेता हुआ सा प्रतीत होता है।

हम पार्किंग स्थल पर जाते हैं। गाड़ी खड़ी करने का शुल्क पाँच डालर चुका कर सड़क पर पैदल निकल जाते हैं। दोनों बच्चियाँ बच्चागाड़ी में हैं। एक स्थान पर एक बग्घी सड़क किनारे दिखाई देती

है। पास में उसे चलाने वाली महिला है। अमेरिका में जहाँ-जहाँ बग्घियाँ देखीं उनकी कोचवान स्त्रियाँ ही थीं। शायद जो महिलाएँ अधिक शिक्षित नहीं होने के कारण कहीं नौकरी या अन्य अच्छा व्यवसाय न कर पाती हों उनके लिए आजीविका का शायद यह सहज साधन है। महिला पर्यटकों को बग्घी पर कलाग्राम घुमाती है। उसकी वेशभूषा अत्यंत साधारण है। हम उससे बात करते हैं। वह कलाग्राम का छोटा चक्कर लगवाने के बीस और बड़े के चालीस डालर लेगी। हमने बीस डालर दिये। बग्घी और उसकी कोचवान के साथ फोटो लिये। बग्घी का घोड़ा सुंदर पुष्ट एकदम सफेद है। महिला ने उसका नाम 'जान्सन' बताया। घोड़े के पाँवों में खुरों के आकार के नीले रंग के जूते हैं। बग्घी में कोचवान की सीट के अलावा पीछे दो सीटें हैं जिन पर छः व्यक्ति बैठ सकते हैं। हमने सामने कोचवान की सीट के पास वाली जग़ह पर बैठने की इच्छा व्यक्त की। महिला बोली हम वहाँ नहीं बैठ सकते हैं। हमने सामने कोचवान की सीट के पास वाली जग़ह पर बैठने की इच्छा व्यक्त की। महिला बोली हम वहाँ नहीं बैठ सकते क्योंकि यह कानून के विरुद्ध है। बग्घी गाँव का छोटा सा चक्कर लगा कर वापस उसी स्थान पर लौट आती है। यह चक्कर मात्र दो किलोमीटर का रहा होगा। हमें अधिक भ्रमण की अपेक्षा थी। लगता है हम ठगे गए। वहीं पर अब एक दूसरी बग्घी भी है। उसकी कोचवान भी एक युवती ही है। वह श्वेतांगी नहीं किंतु अफ़्रीकियों की तरह एकदम श्यामवर्णी भी नहीं है। मैं अनुमान नहीं लगा पाता कि वह मूलतः किस देश की होगी? हम सड़कों पर पैदल चल रहे हैं। मैंने ऐसी दुकानें ध्यान से देखीं जिनमें तैलचित्र रखे थे। उन चित्रों में आधुनिक कलाशैली का एक भी चित्र दिखाई नहीं दिया। यह हेरिटेज विलेज (धरोहर ग्राम) है। अपने नाम को सार्थक करते हुए यहाँ सभी कुछ पुराने समय की तरह ही है। स्थापत्य, चित्रकला, शिल्पकला और लोगों का रहन-सहन आदि सभी बहुत सहज है। तैलचित्रों में यथार्थवादी शैली में मात्र भूदृष्ट ही दिखाई दिये। कारण स्पष्ट है कि चित्र यहाँ व्यावसायिक उद्देश्य से ही रखे गए हैं, म्यूज़ियम अथवा कलादीर्घाओं की तरह प्रदर्शन हेतु नहीं। कलाकार जिनकी कृतियाँ दुकानों में हैं वे नेशविल ग्राम और इंडियाना राज्य के हैं। कुछ दुकानों में काष्ठशिल्प भी हैं। वे कला की दृष्टि से स्तरीय नहीं लगे। कहीं वृक्षों के तनों और शाखाओं से निर्मित कृतियाँ भी हैं। वे घरों मे अन्य सामान्य वस्तुओं की तरह रखी जाने योग्य ही हैं। उनका कला पक्ष कमजोर है। दुकानों में घरों की कबाड़ हो चुकी वस्तुओं का उपयोग कर बनाई गई कृतियाँ बड़े परिमाण में दिखाई दीं। इनमें कल्पनाशीलता तो है किंतु कृतियाँ में सफाई नहीं है। इन्हें अनगढ़ ही छोड़ दिया गया है जिस कारण उनमें अपेक्षित वे तत्व नहीं है जो किसी कृति को आकर्षण प्रदान करते हैं। कुछ दुकानों में फूल-पौधे भी विक्रय हेतु रखे हैं। पर्यटकों की आवश्यकता पूर्ति के लिए चाय-नाश्ते की दुकानें हैं ग्राम में जग़ह जग़ह।

एक दुकान में समुद्री प्राणियों के जीवाश्म, समुद्र तट पर पर पाई जाने वाली विभिन्न रंग-रूपों वाली सीपियाँ, शंख, पत्थर आदि वस्तुएँ हैं। मैं कुछ जीवाश्म खरीदना चाहता था। मूल्य अमेरिकी मान से भी अधिक ही लगा अतः नहीं खरीदे। लगभग ढाई बज रहे हैं। भूख लग रही है। एक रेस्त्रां में पेट पूजा करके वापस सड़क पर आ जाते हैं।

पुस्तकों की एक दुकान दिखाई देती है। कुछ अच्छी किताबें मिल जाने की आशा से उसमें जाते हैं। हमारी तीन वर्षीया छोटी नातिन अमेया हर समय मस्ती के मूड में होती है। बालसुलभ चुलबुली हरकतों से जहाँ जाती है लोगों का मन मोह लेती है। दुकान के अंदर वह एक अंग्रेजी गाना जोर जोर से गाने लगती है- ''यू आर माई सनशाइन.... यू आर माई सनशाइन... यू डोन्ट नो डियर... हाउ मच आई लव यू...'' काउंटर पर बैठी लगभग अस्सी वर्षीया दुकान की मालकिन भी उसके साथ गाने लगती है। उसने बताया कि वह अपने बच्चों के लिये कई दशक वर्ष पूर्व यही गाना गाया करती थी। कभी-कभी बहुत छोटी सी घटना अतीत में जा चुकी बातों को किस तरह किसी के अंतर में अचानक उभार देती है। गाने की इन पंक्तियों से उस श्वेतकेशी महिला को जाने कितने वर्षों बाद अपने बच्चों का शैशव याद आया होगा। सड़कों पर कुछ घंटे और भटक कर हम इस शांत सहज गाँव से वापस लौट जाते हैं। नेशविल जाने का दूसरा अवसर तीन-चार दिनों बाद ही फिर आया। वहाँ 'इंडियाना हेरिटेज सोसाइटी' की ओर से सैंतीसवीं राज्य चित्रकला प्रदर्शनी का पूर्वावलोकन और पुरस्कार वितरण समारोह था। प्रदर्शनी दो सप्ताह तक चलने वाली थी। हमें वहाँ राज्य भर के श्रेष्ठ चित्रकारों की कलाकृतियाँ देखने की जिज्ञासा थी। यहाँ इतने कला प्रेमी आए हैं कि हाल छोटा पड़ रहा है। यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उस छोटे से स्थान में इतने सारे लोग आए हैं जितने मैंने कभी दिल्ली के 'रवीन्द्र भवन' या 'त्रिवेणी कला संगम' में भी नहीं देखे। हाल के एक भाग में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम चल रहा है। लोग साथ-साथ प्रदर्शनी भी देख रहे हैं। आधुनिक कला शैली में एक भी चित्र नहीं है। किंतु यथार्थवादी भूदृष्य और पोर्ट्रेट अप्रतिम हैं। इतने सुन्दर कि दर्शक दाँतों तले उंगली दबा कर मंत्रमुग्ध से देखते ही रह जाते हैं। एक महिला चित्रकार द्वारा बनाया गया बालिका का पोर्ट्रेट तो इतना भावपूर्ण है कि मुझे लियोनार्दो दा विन्सी की 'मोनालिसा' की मुस्कान फीकी लग रही है। उस पेन्टिंग का फोटो लेने के लिए मैंने कैमरा निकाला तो अमित ने मुझे रोक दिया। हमने देखा कि इतनी भीड़ में कोई भी किसी कलाकृति का फोटो नहीं ले रहा है। आशंका हुई कि यहाँ के कानून के अनुसार यह प्रतिबंधित न हो। हम विदेश में इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि उस देश में किस तरह के कापीराइट कानून हो सकते हैं। हमने खतरा मोल लेना उचित नहीं समझा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि उस पोर्ट्रेट को पुरस्कार के लिए नहीं चुना गया। निर्णायकों की दृष्टि भिन्न रही होगी। यहाँ सारे ही चित्र इतने उच्च कोटि के हैं कि निर्णायकों को निर्णय करने में पसीना आ गया होगा। दर्शकों की इतनी भीड़ में भारतीय मात्र हम लोग ही थे जबकि इस क्षेत्र में भारतीय अच्छी संख्या में हैं। चित्रकला संभवतः उनकी प्राथमिकता नहीं है। वे तकनीकी क्षेत्र में अधिक रुचि रखते हैं ऐसा लगता है। पूरा कार्यक्रम लगभग दो घंटे चला। किसी अन्य दिन पुनः यहाँ आकर प्रदर्शनी अच्छी तरह से देखने की इच्छा के साथ हम घर लौट जाते हैं।

डी. के.-2, 166/18, दानिशकुंज, कोलार रोड, भोपाल-4624042
मोबा. 898956936

■

आलेख

सुप्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक, रंगकर्मी अमोल पालेकर से साहित्यकार अनुपमा अनुश्री की बातचीत

आज के दौर की फिल्मों से उस जमाने की फिल्मों से तुलना करना ठीक नहीं है

- **अमोल जी, हम आपको अपने मध्य पाकर हर्षित हैं, गर्वित हैं। सबसे पहले मैं आपसे यह पूछना चाहूंगी कि आपकी फिल्में उस दौर में आयीं, जब एक कॉमर्शियल सिने फार्मूला चलता था। आपकी फिल्में रजनीगंधा, चितचोर, बातों बातों में जीवन धारा, जो कुछ हटकर फिल्में थी और मध्यमवर्गीय परिवार के तानों-बानों से जुड़ी हुई थी। आपके रोल इन फिल्मों में, बड़े सहज और स्वाभाविक, नैसर्गिक अभिनय के साथ, तो आपने कहीं से सीखा या फिर आपके व्यक्तित्व का ही कोई अंश सिने पटल पर प्रदर्शित हुआ ?**

– मैं यह कहूंगा कि यह जो दौर था 1960 से लेकर 1980 तक। इस दौर में एक अलग खोज हो रही थी। हमारे सारे कला जीवन में यह खोज चल रही थी। और यह खोज इस बात की थी कि हमारा परिचय क्या है। अगर हम सिनेमा की बात करें, तो उसमें हीरो इतना बड़ा होता था लार्जर दैन लाइफ यानि राम के बराबर हो जाता था, जो कि रियल नहीं था लार्जर देन लाइफ था और हम सभी इसी को देखने के अभ्यस्त थे। यही आर्टफॉर्म था। गलतियां हीरो से नहीं होती थी। गलतियां सिर्फ विलेन किया करता था। समानांतर सिनेमा का दौरा आया तो उसमें यही बात थी कि हम अपनी नार्मल लाइफ, जो सामान्य जिंदगी है, उसकी बात करें, उससे जुड़े हुए सभी पहलुओं पर हम बात करें। हमारी जिंदगी में जो किरदार हमें मिलते हैं उनकी बात करें। कई छोटी-छोटी घटनाएँ उसमें घटती हैं। कोई बहुत बड़ी ड्रैमेटिक घटना उसमें नहीं होती। हीरो जाकर तीस लोगों के साथ मुक्केबाजी नहीं करता।

आपने जिन फिल्मों का जिक्र किया, उनमें अगर आप देखें, तो हीरो बाकायदा जाकर ऑफिस में काम करता है। लोकल ट्रेन में सफर करता है। बस में बैठता है। यह सब पहले देखा नहीं था लोगों ने। यह जो दौर आया यह हमारी जिंदगी से जुड़ा हुआ था, इसीलिए लोगों को बहुत पसंद आया। उन्हें लगा कि यह तो मेरी जिंदगी का हिस्सा है बिल्कुल आम जन से जुड़ा हुआ। यह अपने आपको आईडेंटिफाई कर पाता था इन फिल्मों के किरदारों से। जितने किरदार मैंने निभाए, उनको निभाने में मुझे किसी तरह का संकोच कभी नहीं हुआ असफल होने में भी। हीरो कभी भी फेल या असफल होने के लिए सोचा नहीं जाता था तब। यह शायद मैं ही एक था जो तैयार था फेल होने के लिए, मुस्कुराहट रखते हुए चेहरे पर। तो मैं कह सकता हूं कि सिनेमा निर्माण साइक्लिक प्रक्रिया है। हम फिर आज भी वही उस तरफ जा रहे हैं, जहां फिल्म मेकर कहता है कि मुझे टेक्निकल एक्सीलैंस तो चाहिए ही, लेकिन कंटेंट भी चाहिए। मुद्दों की बात करनी होगी। जिंदगी की बात करनी होगी और जो सिनेमा आप उभरते हुए देख रहे हैं मसान, लंचबॉक्स आदि फिल्में।

- **एक बात आपसे कहना चाहूंगी अगर कॉमेडी की हम बात करें तो आपकी एक फिल्म आई थी गोलमाल, जो कि कॉमेडी के लिए एक आईकॉनिक मूवी है और आज भी जो कॉमेडी फिल्में बनाई जा रही हैं, सीक्वल बन रहे हैं, इसी शीर्षक को ध्यान में रखकर बनाए जा रहे हैं। इसमें आपने जो दोनों रोल अभिनीत किए, बड़ी सहजता से, खूबसूरती से। इस बारे में कुछ हमें बताएं कैसे आपने इतनी बखूबी इन रोलों को निभाया!**

– सभी सोचते हैं कि गोलमाल में मैंने दो रोल किए। वास्तविकता में मैंने तीन रोल किए हैं। आप सोचिए तीसरा रोल कौन सा है ?

- **जी ढूंढना पड़ेगा।**

– ढूंढने की कोई बात नहीं है। उसमें जो प्रोटागोनिस्ट है, नायक है, वह रियल रोल है। यही व्यक्ति है जो दो किरदार रामप्रसाद और लक्ष्मण प्रसाद का निभाता है। यह उसका औरीजनल कैरेक्टर नहीं है। उसकी लाइफ का जो रोल है, वह अहम रोल है।

- **पर्दे के पीछे है!**

– नहीं पर्दे के पीछे नहीं है। कहानी उसी से शुरु होती है और फिर वह जॉब लेने के लिए दो किरदार निभाता है लेकिन वह दोनों ही नहीं है। रामप्रसाद भी नहीं है लक्ष्मण प्रसाद भी नहीं है। यह किरदार निभाने के लिए कहूंगा कि यह ऋषि दा की ग्रेटनेस है। उनका विजुलाइजेशन है। जितने भी कैरेक्टर मैंने किए हैं, सभी अच्छे फिल्मेकर्स के साथ जैसे ऋषि दा. बासु चटर्जी, श्याम बेनेगल आदि। हमारे जमाने के जितने भी टॉप डायरेक्टर्स थे उन सब के साथ काम करने का सौभाग्य मुझे मिला। यह मेरे लिए सबसे बड़ी बात थी। इसी के साथ लम्बा एसोसिएशन रहा मेरे साथ उन कलाकारों का, जो रंगमंच के समय से मेरे साथ जुड़े हुए थे जैसे उत्पल दा और दीना पाठक।

● **बासु चटर्जी के साथ भी आपका काफी लंबा एसोसिएशन रहा। कभी स्क्रीनप्ले राइटर थे वह, कभी प्रोड्यूसर रहे आपकी फिल्मों के। और जिस तरह के कथानक उस समय लिखे जाते थे फिल्मों के, बहुत ही उम्दा किस्म की कहानी, साथ ही नारी मन की जो अभिव्यक्ति खूबसूरती से पोर्ट्रे हुई है उस समय की फिल्मों में। तो क्या महसूस करते हैं आप आज की फिल्मों में भी वही मानवीय संवेदनाएं, सामाजिक सरोकार या वही गहराई है।**

– आज की फिल्मों की उस जमाने की फिल्मों से तुलना करना ठीक नहीं है। मैं बस बासु दा के बारे में यह जरूर कहूंगा कि उनकी फिल्मों की कहानी इतनी सीधी-सादी, इतनी सिंपल होती थी। मैं आपको रजनीगंधा फिल्म का एक किस्सा सुनाता हूं। रजनीगंधा जब बनी तो उसको बेचने के लिए डेढ़ साल लगे। वह डिस्ट्रीब्यूटर के यहाँ डिब्बे लेकर घूमते थे और जब उनसे फिल्म देखने से पहले पूछा जाता था कि आपकी फिल्म का हीरो कौन है! तो बताते थे एक नया लड़का है। अच्छा, नया लड़का है! नाम क्या है! जी अमोल पालेकर। यह कैसा नाम है हीरो का! हीरोइन कौन है? जी विद्या सिन्हा। तो यह भी नयी है यानि आप सब नए लोगों को लेकर फिल्म बना रहे हैं! अच्छा विलेन कौन है? विलन तो है ही नहीं फिल्म में! तो आप क्यों बना रहे हैं ऐसी फिल्म! एक ही नाम स्थापित था वह संगीतकार सलिल चौधरी जी का। उनको छोड़कर बाकी सब लोग नए थे।

उनसे बार-बर इसी तरह के सवाल पूछे जाते कि आप फिर क्यों बना रहे हैं ये फिल्म! बासु दा का कहना था कि मुझे अपनी फिल्म पर विश्वास है और मैं यही बनाना चाहता हूं। मुझे ये फिल्म बनानी है, इसलिए यह फिल्म बनी और सारा क्रेडिट बासु दा को जाता है। आज भी यह लगन, यह आत्मविश्वास जिस भी निर्देशक के पास हो, जिस भी फिल्मेकर के पास हो, मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं वह आज भी इस तरह की फिल्में बना पाएगा जो आमजन से जुड़ी हैं।

● **जिस तरह आप की फिल्मों के गाने आज भी हमें तमाम रेडियो चैनल पर सुनाई पड़ते हैं और बहुत पसंद किए जाते हैं श्रोताओं के तमाम सारे फरमाइशी पत्र आते हैं। वे चितचोर, बातों बातों में या फिर रजनीगंधा के गाने सुनना चाहते हैं। तो एक खास बात है कि ऐसी कोई विशेष नृत्य शैली नहीं थी आपकी तो भी आपने अपने अंदाज में, अपने भाव प्रवण अभिनय से, उन गीतों को इतनी खूबसूरती से प्रस्तुत कर दिया। हम बात करें फिल्म छोटी सी बात का ''जानेमन-जानेमन'' जहाँ आप नायिका के पीछे पीछे हैं या फिर हम बात करें ''सपने में देखा सपना'' गोलमाल फिल्म का।**

– हाँ, ढेर सारे हैं और मैं फिर से यही कहूंगा कि यह मेरा सौभाग्य रहा कि बड़े अच्छे गाने मेरी झोली में आ गए, न सिर्फ अच्छे गाने बल्कि उसके साथ मुझे येशुदास जैसी अच्छी आवाज मिली। उनके जैसे महन, समर्पित गायक की आवाज मुझे अपने कैरियर की शुरुआत में मिली। उस आवाज का चेहरा मैं था, लेकिन वह सारी करतूत येशुदास जी की थी। उसके बाद जितने भी गायकों की आवाज मुझे मिली और मैं न्याय कर सका अभिनीत कर सका उन गीतों पर, इसके लिए उनका मैं कृतज्ञ हूं।

● **आपका बहुआयामी व्यक्तित्व है, रंगमंच, अभिनय, चित्रकारी के विविध रंगों को आपने समाहित किया हुआ है अपनी जिंदगी में।**

– यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे तीन तीन अलग क्षेत्रों में काम करने का मौका मिला। मैंने अपने कैरियर की शुरुआत की चित्रकारी से। एक चित्रकार के रूप में उन्नीस सौ सड़सठ में मेरी एकल प्रदर्शनी हुई और इसी साल मैंने रंगमंच में पहली बार अभिनय किया और उन्नीस सौ अड़सठ में मैंने पहली बार फ़िल्म में अभिनय किया। इस तरह इन तीनों क्षेत्रों में मेरे सफर की शुरुआत हुई और तब से लेकर अब तक पचास साल हुए, मैं तीनों क्षेत्रों में आज भी काम करता हूं और मुझे बड़ा सुख मिलता है। संतुष्टि इसलिए है क्योंकि मैंने जो भी काम किया अपनी शर्तों पर किया और उसे लोगों ने बहुत सराहा।

● **आपका जो सुनहरा दौर रहा, उसके बारे में हमसे अपने अनुभव साझा करें।**

– कहीं न कहीं यह एक प्रेरणा भी देता है लीक से हटकर काम करने के लिए। सटीक सोच और आत्मविश्वास को लेकर आगे बढ़ने और समाज में कुछ नया सकारात्मक कर गुजरने के लिए।

■

विश्व कविता

कार्ल सैंडबर्ग की कविताएँ

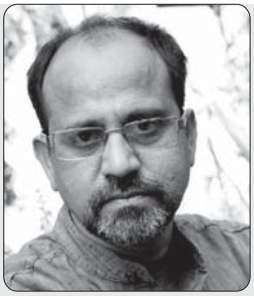

कार्ल सैंडबर्ग (1878-1967)

अमेरिका कवि कार्ल सैंडबर्ग का बचपन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। एक मजदूर के रूप में उन्होंने अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए ज़िदगी को बहुत करीब से देखा। बाद के वर्षों में अपनी पढ़ाई करते हुए उन्होंने विज्ञापन लेखन से लेकर अखबार के संवाददाता तक के दायित्वों का निर्वहन किया। शिकागो आने के बाद उन्होंने 'शिकागो डेली न्यूज' में सम्पादकीय लेखन भी किया। काल सैंडबर्ग को अमेरिका में मुक्त छन्द के कवियों के बीच महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनकी कविता अपनी भावपूर्ण सादगी और लयात्मक सौंदर्य के लिए जानी जाती है तथा सुविख्यात अमेरिकी कवि वाल्ट व्हिटमैन की तरह ही उन्हें जनकवि की प्रतिष्ठा प्राप्त है। अपने जीवन काल में उन्होंने तीन बार पुलित्जर पुरस्कार मिले। यह पुरस्कार दो बार कविता के लिए तथा एक बार लिंकन पर लिखी जीवनी के लिए प्राप्त हुआ।

अनुवाद : मणि मोहन

प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।
सम्प्रतिः शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346

घास

ऊँचे-ऊँचे ढेर लगा तो लाशों के
ऑस्ट्रेलिज़ और वाटरलू में।
मिट्टी में दबा दो उन्हें
और मुझे अपना काम करने दो-
मैं घास हूँ, फैल सकती हूँ हर जगह।

ऊँचे ढेर लगा दो गेटिज़बर्ग में
ऊँचे ढेर लगा दो ईप्रा और वेडर्न में।
मिट्टी में दबा दो उन्हें
और मुझे अपना काम करने दो।

दो साल, दस साल, और फिर
यात्री पूछेंगे कंडक्टर से :
यह कौन सी जगह है ?
इस वक्त हम कहाँ हैं ?
मैं घास हूँ।

कबाड़ी

मुझे ख़ुशी है कि ई श्वर ने देखा मृत्यु की तरफ
और मृत्यु को एक काम सौंप दिया-
उन सब की देखभाल जो थक चुके हैं
जीवन से
जब घिस जाते हैं घड़ी के पहिये
ढीले पड़ जाते हैं कल-पुर्जे
टिक्-टिक् करती घड़ी
गलत समय बताने लगती है लोगों को
और घर के लोग उड़ाने लगते हैं मजाक,
कितनी खुश हो जाती है यह घड़ी
जब यह भारी भरकम कबाड़ी
अपने वाहन से घर आता है
और अपनी बाहों में भर लेता है
इस घड़ी को और कहता है
''यहाँ तुम्हारी जरूरत नहीं
तुम्हें चलना है
मेरे साथ''
कितना खुश हो जाती है यह घड़ी
जब वो महसूस करती है
इस कबाड़ी की बाँहें
अपने ईदगिर्द
उसे साथ लेकर जाते हुए।

अपने घर पर जल्लाद

क्या सोचता है एक जल्लाद
जब रात गये काम से वापिस
अपने घर पहुंचता है ?
जब बैठता है अपनी पत्नी और बच्चों के साथ
एक कप कॉफी, हेम और अंडे खाते हुए
क्या वे पूछते हैं उससे
कैसा रहा आज का दिन
या फिर वे बचते हैं ऐसे विषयों से और
मौसम, बेसबॉल, राजनीति
अखबार की मज़ेदार खबरें
या फिल्मों की बातें करते हैं ?
जब वो कॉफी या अण्डों की तरफ
अपने हाथ बढ़ाता है
तो क्या वे उसके हाथों की तरफ देखते हैं ?
जब उसके मासूम बच्चे कहते हैं-
पापा घोड़ा बनों, यह देखो ! रस्सी भी है !
तब क्या मज़ाक करते हुए वो जवाब देता है-
आज बहुत रस्सी देखीं, अब और नहीं...
या उसके चेहरे पर आ जाती है
आनंद की चमक और कहता है
यह बड़ी मजेदार दुनिया है
जिसमें हम रहते हैं...
और यदि दूधिया चाँद झांकता होगा
रोशनदान से
उस कमरे में जहाँ एक मासूम बच्ची सो रही है
और चंद्रमा की किरणें घुल मिल रही हैं
बच्ची के कानों और उसके बालों से
यह जल्लाद....
तब क्या करता होगा ?
सब कुछ आसान होगा उसके लिए
एक जल्लाद के लिए सब कुछ आसान होता है
मैं सोचता हूँ।

■

गीत

निर्मला जोशी के गीत

निर्मला जोशी

जन्म : पर्वतीय नगरी अल्मोड़ा (उ.प्र.) के पंत परिवार में जन्म
प्रकाशन : 30-35 वर्षों से साहित्य साधना में रत तथा गीत की अस्मिता के लिए निरंतर संघर्षरत, दूरदर्शन, आकाश-वाणी के विभिन्न केन्द्रों से गीतों का नियमित प्रसारण। नवभारत टाईम्स, राष्ट्रीय सहारा, राजस्थान पत्रिका ,दैनिक भास्कर आदि में प्रकाशन।
ई-7/एलए-318, अरेरा कालोनी, भोपाल
दूरभाष : 0755-565509

मन का उद्‌बोधन...

भूलकर भी मन कभी उस द्वार से अनुनय न करना
क्योंकि मैं तुमको निरादर से बचाना चाहती हूँ।
हां, जहां सागर हिलोरे
ले रहा जिनके हृदय में।
और जिनकी कामना केवल
मटकती हो मलय में।
जो न समझा हो व्यथा कैसी हुआ करती मनुज की
मैं तुझे ऐसा कथानक फिर सुनाना चाहती हूँ।
एक क्या, सौ बार मुझको
भूल का अनुभव हुआ है।
तब कहीं यह ज़िंदगी
पहचानना संभव हुआ है।
मैं न चाहूंगी कि तुम जड़वत् रहो या टूट जाओ
इसलिये मैं चेतना के गीत गाना चाहती हूँ।
बहुत दिन से कामना मेरी कि
तुमको छंद कर दूं।
और मैं अपने अधर पर
गीत का मकरंद धर दूं।
तुम अगर झर भी गये तो पांखुरी जैसा समझकर
भावनावश आज पलकों पर सजाना चाहती हूं।
जिस जगह संदेह को जीना
सनातन है, प्रथा है।
इसलिये उस द्वार से होकर
गुज़रना ही वृथा है।
जो तुझे वैभव दिखाकर लूट लेना चाहते थे
मैं उन्हें अपनी अंगुलियों पर नचाना चाहती हूं।

शरद प्रात का गीत...

घोल कर मेंहदी उषा
धनवान सी आई अकेली।
मीन हो मन वाटिका की
बिन कहे रंग दी हथेली।
दृष्टि में तब खिल उठे जलजात कितने ही अचानक
सुरभि सी उड़ती हुई पल-पल किया गुजार मैंने।
जब कलाधर की कलायें
खूब विकसित हो रही थी।
कल्पना की तूलिका से
मैं दिशाएं रंग रही थी।
इन छलकती, ऊंघती-सी अनमनी इन प्यालियों में
प्राण अपने भी मिलाकर पा लिया संसार मैंने।
कह न पाये इस धरा के
होठ जो सच्ची कहानी।
या विजन में इन ऋचाओं की
कथा कोई पुरानी।
साधना तप में तपे जब भोर के स्वर सुन रही थी
तब कहीं मन खोलने का पा लिया अधिकार मैंने।
फिर उतरते और चढ़ते
व्योम से ये ज्योति निर्झर।
एक दर्पण सामने कर
भाव झरते नेह अंतर।
जो लहर को खिलखिला देता पवन का एक झोंका
मुक्त होकर ले लिया उस मुक्ति का आधार मैंने।

■

कविता

मनोहर पटेरिया 'मधुर' की कविताएँ

मनोहर पटेरिया 'मधुर'

जन्म : 28 अगस्त, 1940, आमला (म.प्र.)
प्रकाशन : 60 वर्षों से अधिक देश की प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में रचनाओं का प्रकाशन, आकाश- वाणी तथा दूरदर्शन के कई केन्द्रों से प्रसारण तथा तीन पीढ़ी के प्रतिष्ठित कवियों के साथ काव्य पाठ।
''अम्बिका भवन'' एलआईजी - 119, हर्षवर्धन नगर, भोपाल- 462003
दूरभाष : 7000604415

मज़दूर टोले में बसंत!

फिर से आज कोकिला कुहुकी, फिर बौराये आम,
हफ़्ता भर में मिली मजूरी, सबने पाये दाम!
ढाई किलो मकई का आटा, नमक-मिर्च और तेल,
अद्धी-भर दारू की बोतल, जमा है पूरा खेल!
सुलग उठे चूल्हे टोले में, बनी मसूर की दाल,
सेंक सेंक वासंती रोटी, मज़दूरन हुई निहाल!

लोग-लुगाई, दोनों ने पी, जी भर सबने खाया,
इतने में वासंती चन्दा, टोले के ऊपर आया!
अपने आप बनीं टोलियाँ, सब झूमे नाचे गाये,
देह थकी वासंती सपने, मन में आन समाये!
सपने में 'मंगली' ने देखा 'भगोरिया' का मेला,
गाल गुलाल लगा कर 'सामू', ले भागा अलबेला!

'तिनका तोड़' ब्याह रचाया, फिर निकले करन मजूरी,
मेघनगर, उज्जैन, बड़ोदरा नापी कितनी दूरी!

'भारत-भवन' बणो थो जब, जनमो थो यो 'जीतो'
भोपाल मेई रहते-रहते, पैदा हुई थी 'गीतू'!
काली सड़कें काली गिट्टी, और धधकती भट्टी,
कोलतार की नदी बहाकर, ले गई झोपड़ पट्टी!
डर कर नींद खुली तो, देखा डूब रहा था चन्दा,
याद आ गया दिनभर का फिर वोही गौरखधन्दा!

पूछता है ऊन

कड़ाके की सर्दी में,
कितना प्यारा लगता है
कम्बल! और
इसी तरह ऊन से निर्मित
स्वेटर, जर्सी, कोट, मफलर
कन्टोप-मोजे जैसे,
अनेक ऊनी वस्त्र।
जिन्हें पहन-ओड़कर
हम चुनौती देते हैं
कड़कड़ाती हुई शीत ऋतु को!
मौज मनाते हैं- बर्फ से लदी
वादियों में, उछालते हुये
बर्फ के गोले!

क्या कभी हमने सुनी है
अपने ज़िस्म से चिपके वस्त्रों के
ऊन की आवाज़?
पूछता है ऊन-
'हे मानव क्या कभी तुम्हें ख्याल भी
आता है, हमारे कमज़ोर भाई-बहनों
भेड़, याक, ऊँट और खरगोश
के ज़िस्मों का भी,
इस कड़ाके की ठन्ड में
वे कैसे बचाते होंगे अपनी जान?
काश! हम भी होते
सिंह प्रजाति के प्राणी,
तो फिर इतने आसानी से तुम
क्या लूट पाते हमारा ऊन
खा पाते हमारा मांस?'

शायद नहीं! बिलकुल नहीं!!
ऊन के इस यक्ष प्रश्न का
मैं क्या दूँ जवाब!
ग़रीब आदमी का भी तो
यही है हाल!
एयर-कन्डीशन कक्षों में बंद
मालिकों, अफसरों को कहाँ आता है ख़्याल
अपने मीलों, खदानों, बागानों या फैक्ट्रियों में
कार्यरत
अधनंगे फटेहाल ठन्ड में ठिठरते हुये
या गर्मी में झुलसते हुये
उन ग़रीब मज़दूरों का!
'मत्स्य न्याय' शायद पर्याय है-
शोषण का!

■

ग़ज़ल

शैख़ क़दीर कुरैशी 'दर्द' की ग़ज़लें

शैख़ क़दीर कुरैशी

जन्म : 17 जनवरी, 1948
प्रकाशन : ग़ज़ल संग्रह- दर्द खुशरंग परिंदा है, चिंतन- कुरान में क्या है, पत्रं पुष्पं फलं तोयं (गीता दर्शन पर आधारित ग्रंथ) आकाशवाणी, दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित। विभिन्न उर्दू हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में ग़ज़ले एवं आलेख प्रकाशित। कई साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।
टी-5 और 6, सनराइज़ कॉम्प. सनराइज़ कालोनी, ईदगाह हिल्स, भोपाल-462001
दूरभाष : 8602045297

(एक)

ख़ुदफरेबी का हुनर दिल को सिखाते क्यूँ हो,
रेत पर चाँद की तस्वीर बनाते क्यूँ हो ?

तुम तो कहते हो तुम्हें प्यार नहीं फूलों से,
मेज़ पे अपनी ये गुलदान सजाते क्यूँ हो !

कम नहीं आज के इस दौर में जीने के अज़ाब,
हमको दोज़ख़ के अज़ाबों से डराते क्यूँ हो ?

ख़ुशलिबासी भी बुरी चीज़ नहीं है, लेकिन,
ख़ुशमिज़ाजी को लिबासों में छुपाते क्यूँ हो !

रात गाँवों में हुआ करती है, शहरों में नहीं,
आप सो-सो के यहाँ उम्र गँवाते क्यूँ हो ?

दिल की टहनी प ये गाता है, तो क्या लेता है,
'दर्द' ख़ुशरंग परिंदा है, उड़ाते क्यूँ हो ?

(दो)

मेरा हमउम्र था, यारो, मेरे आँगन का दरख़्त,
'आम' का मत कहो, था वो मेरे तन-मन का दरख़्त।

रूह को मेरी नचाता था वो राधा की तरह,
हो न हो पहले कभी होगा वो मधुबन का दरख़्त।

नित नए अज़दहे आते हैं, लिफ्ट जाते हैं,
ज़िंदगी है मेरी या है कोई चंदन का दरख़्त ?

सींचते रहिए इसे चाहतों की शबनम से,
सूख जाए न कहीं आपके जोबन का दरख़्त।

फूल देता है, मगर फल नहीं बनने देता,
अक़्ल इंसान की रखता है ये गुलशन का दरख़्त।

दुश्मनी जिससे थी, सर उसका क़लम कर देते,
क्यूँ भला काट दिया आपने दुश्मन का दरख़्त !

लेके आई है वहाँ 'दर्द' को तहज़ीब नई,
ना तो आँगन है जहाँ और न आँगन का दरख़्त।

(तीन)

बोझ हम समंदर का रूह पे उठा लाए,
ज़िंदगी की धारा से बूँद क्या चुरा लाए !

आदमी में सूरज है, चाँद है, सितारे हैं,
हम ज़मी की मिट्टी में आसमाँ छुपा लाए।

प्यार एक कोशिश है ख़ुद को भूल जाने की,
लोग इस हक़ीकत को दास्ताँ बना लाए।

वो महकते तन-मन को यूँ सजा के आए हैं,
जैसे कोई पूजा की थालियाँ सजा लाए।

उम्र के अँधेरों में कुछ तो रौशनी होगी,
जुगनुओं को हम उनकी याद में मिला लाए।

ये जो चंद साँसें हैं वक़्त की अमानत हैं,
आप इनको चोरों की हाट में उठा लाए।

(चार)

दिल से होकर कभी उल्फ़त, कभी नफ़रत निकली,
पर न तस्कीने-अना की कोई सूरत निकली !

यूँ निकलने को बहुत जिस्म के अरमाँ निकले,
पर अभी तक न मेरी रूह की हसरत निकली।

जन्नतें कितनी ख़ुदा ने हमें बख़्शीं, लेकिन,
इब्ने-आदम में 'निकल जाने की' आदत निकली।

हम तो समझे थे कि मज़हब है तबस्सुम इनका,
मुस्कराना तिरे होटों की सियासत निकली !

वो जो जज़्बात बदलते थे लिबासों की तरह,
उनके सीनों में दिलों की जगह दौलत निकली।

वक़्त अहसास है, ये तब हमें महसूस हुआ,
जब तेरे हिज्र की इक रात भी मुद्त निकली !

ज़ायक़ा अब कोई जँचता ही नहीं है हमको,
जाने कैसी ये तेरे, 'दर्द' में लज़्ज़त निकली।

■

आलेख

बंगाली गीत-नृत्य और वाद्य यंत्रों का रिश्ता

डॉ. अमरसिंह वधान

प्राचीनकाल से मनुष्य भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए गीत, वाद्य और नृत्य को सशक्त माध्यम बनाता आ रहा है। शिक्षा या ज्ञान की दृष्टि से मनुष्य वर्ग के चार भेद किए जा सकते हैं- पहला, अपठित, दूसरा अल्पपठित, तीसरा, पठित और चौथा पूर्ण पठित। ज़ाहिर है कि सभी वर्गों की भाषा, कला और संस्कृति एक दूसरे से भिन्न होती है। यह भी सही है कि इन सबके गीत, नृत्य और वाद्य यंत्र समाज, देश और काल के अनुसार अपना अलग अस्तित्व और अलग सौन्दर्य रखते हैं। भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियों के लिए लोक में अनगिनत वाद्ययंत्र पाए जाते हैं।

उल्लेखनीय है कि बंगाल का लोकसाहित्य और लोकसंगीत अधिकतर लोकगान में बसा है। बंगाल के कई लोकगीत एवं लोकनृत्य विश्व भर में मशहूर हैं। लेकिन इनमें से कुछ गीत और कुछ धुनें ऐसी हैं जो चकित करती हैं। वैष्णव धर्म की कीर्तन पद्धति ने बंगाली गीतों को एक नया रूप दिया है। यहाँ की संस्कृति मुख्यतया ग्रामीण है। प्राकृतिक दृश्यों ने यहाँ के लोगों को एक प्रकार की जीवंतता प्रदान की है, जिससे उनकी जीवन शैली, उनके मनोभावों और जीवन दर्शन का निर्माण हुआ है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'लोकसाहित्य' में ग्रामांचल का चित्र खींचते हुए लिखते हैं- ''लोकगीतों एवं लोकनृत्यों के लिए यह बड़ी उपयुक्त पटभूमि है गाँव। पेड़ों की ठंडी छाँव में सुस्ताते हुए-से, लाल, नीले, सादे, कमल से सदा हँसते पोखरें, छाया सघन पेड़ों के नीचे-नीचे गाँव की मैल, बाँसी की फुनगियों की ओट में उगता चाँद, डूबता सूरज और वैसा ही उनका सामाजिक जीवन।''

इसमें दो राय नहीं कि बंगाल के गीतों और नृत्यों में ताल वाद्यों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ये वाद्य यंत्र अपने आकार, स्वर उत्पादन तथा संगीत की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग विभाजित हैं। कुछेक प्रमुख वाद्य यंत्रों का यहाँ विवरण दिया जा रहा है-

बाँसुरी : यह एक बेलनाकार बाँस होता है, जिसे एक ओर से मुँह से हवा देकर बजाया जाता है। इसके पतले आकार में आठ छेद होते हैं, जो सुर निकालने में प्रयोग किए जाते हैं। बंगाल के कुछ ग्रामीण भागों में बाँसुरी में केवल पाँच छेद होते हैं। भगवान कृष्ण ने अपने अधरों से लगाकर बाँसुरी को अमरत्व प्रदान किया है।

सरिन्दा : यह एक दुर्लभ वाद्य यंत्र है, जिसे आजकल बहुत कम वादक बजाते हैं। यह सारंगी और वायलिन का एक अद्‌भुत मिश्रण है। इसे एक लकड़ी से काटकर बनाया जाता है। लकड़ी बीच में से खाली होती है और इस हिस्से को चमड़े से कुछ ढक दिया जाता है। ये तार बहुत ऊँचे स्वरों को बजाने में प्रयुक्त होते हैं। इन तारों पर एक लंबी लकड़ी से वार किया जाता है, जिस पर घोड़े की पूँछ के बाल बँधे होते हैं।

बीन : यह सपेरों का मुख्य वाद्य यंत्र है, जिसे 'पुंगी' भी कहते हैं। इसकी छोटी तुंबी में बाँस की दो नलिकाएँ लगी रहती हैं और बजाने वाले हिस्से में काठ की एक पोली नली होती है, जिसमें तीन या चार सुराख होते हैं। इन्हीं पर वादन करके सपेरे साँप को झुमाते हैं। लगभग सवा हाथ की इसकी लंबाई होती है।

खंजरी : 'डफली' के घेरे में तीन या चार जोड़ी झाँझ लगे हों तो उसे 'खंजरी' कहते हैं। इसका वादन 'चंग' की तरह हाथ की थाप से किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों का यह प्रसिद्ध वाद्य है। बाँसुरी के साथ इसक वादन मनोहारी होता है।

कठताल : लकड़ी के बने हुए ग्यारह अंगुल लंबे गोल डंडों को 'कठताल' कहते हैं। दोनों टुकड़े हाथ में ढीले पकड़कर बजाए जाते हैं जिसे कट-कट की ध्वनि लय में चमक पैदा करने के लिए 'कठताल' बनाते हैं। कठताल वादन के प्रभाव में तीव्रता, विचित्रता के लिए

लकड़ी की कंघी और अनाज फटकने वाले सूप को भी गाने के साथ प्रयोग में लाया जाता है।

नगाड़ा : ढोल की थाप और नगाड़े की चोट प्रसिद्ध है। प्यालीनुमा मिट्टी या लकड़ी की कुंडी को चमड़े से मढ़कर 'नगाड़ा' बनता है। दो नुकीली लकड़ियों से लोकगीत में, प्राय: नौटंकी के तमाशे में नगाड़ा वादन किया जाता है और ताल-लय के विविध रूप प्रस्तुत किए जाते हैं। पूर्व और पश्चिम बंगाल के ग्रामीण आदिवासी लोग यह वाद्य व्यवहार में लाते हैं।

शहनाई : यह वाद्य यंत्र प्राचीन काल से भारतीय गीत-संगीत का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। यह बंगाल के पुरुलिया क्षेत्र के डोमवासियों द्वारा प्रयोग में आता है। वे इसे 'छोऊ' नृत्य के साथ उपयोग करते हैं। शहनाई एक लंबी लाल चन्दन की लकड़ी की बनी होती है। इसका मुँह चार अंगुली लंबा होता है, जिसमें हाथी दाँत के पत्ते लगे रहते हैं। इन्हें मुँह से दबाकर फूँक के माध्यम से मधुर स्वर बजाए जाते हैं। दक्षिण में इसके अनेक आकार-प्रकार मिलते हैं। लोक में सभी मांगलिक पर्व शहनाई से आरंभ होते हैं।

चंग : चार अंगुल चौड़े लकड़ी के घेरे पर चमड़े से मढ़ा हुआ यह चक्राकार वाद्य सोलह से बीस अंगुल व्यास तक होता है। इसे बाएँ हाथ से पकड़कर हृदय के समीप स्थित कर दाहिने हाथ की थाप द्वारा बजाते हैं। इसके छोटे स्वरूप को 'ढपली' कहते हैं। चंग के माध्यम से लोकगाथाओं और शेरो-शायरी की प्रस्तुति भी की जाती है। होली पर ग्रामीण लोग इसके साथ लोकगीत गाते हैं।

दोतार : प्रारंभ में इस वादन में दो तार होते थे। इसलिए इसका नाम दोतारा हुआ। वर्तमान में इसमें चार तारों का प्रयोग होता है। दोतारा तूत, नीम या सागवान लकड़ी का बना होता है। इसके ऊपर के भाग को पट्टी कहते हैं, जो धातु से बनती है। कलाकार बाएँ हाथ की अंगुली से तार दबाकर बजाते हैं। पट्टी के नीचे का भाग चमड़े से मढ़ा होता है। इसके मध्य भाग में सोयारी या ब्रीज होता है। उस ब्रीज के ऊपर चारों तारों की स्थापना के बाद ऊपर दंड या कानों के साथ संयुक्त किया जाता है। कलाकार अपने स्तर के अनुसार तार को बाँधकर दाएँ हाथ से एक लकड़ी के टुकड़े से इसे बजाते हैं। उत्तर बंग में भवईयाँ गीत साथ दोतारा बजता है।

डमरू : 'डमरू' बंगाल लोकसंगीत का एक महत्वपूर्ण वाद्य है और यह प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है। शिवजी का डमरू विश्व प्रसिद्ध है। बंदर नचाने वाले नट, जादूगर तथा जोगी लोगों का यह एक प्रतीक वाद्य है। डमरू दोनों सिरों पर चमड़े से मढ़ा होता है। इसके दोनों मुख रस्सी से कसे रहते हैं। इसके बीच का हिस्सा एक दम पतला होता है, जिसमें एक रस्सी अलग से लटकी रहती है और रस्सी के मुख पर घुंडी बनी होती है। हाथ को इधर-उधर घुमाने से घुंडीदार रस्सी डमरू के दोनों मुखों पर चोट करती है तो डम-डम, डम-डम ध्वनि निकलती है। इसके छोटे स्वरूप को डुगमुगी कहते हैं।

करताल : यह लकड़ी का बना हुआ वाद्य है तथा जोड़ी में ही बजाया जाता है। यह छोटे आकार का होता है तथा इसमें छोटी-छोटी पीतल की प्लेटें लगी होती हैं। इसे एक हाथ से पकड़कर, एक तरफ मोटी ऊँगली में डालकर तथा दूसरे की बाकी चार अंगुलियों में डालकर टकराते हुए बजाया जाता है। यह अधिकतर, भक्तिगीत, संगीत, लोकगीत, लोकनृत्य आदि के साथ बजाया जाता है।

इकतारा : घुमक्कड़ साधुओं के पास प्राय: इकतारा होता है, जिस पर वे स्वान्त:सुखाय भजन गाते हैं।

एकतारा : यह कई आकारों में बनाया जाता है। इसमें भी एक तार को एक तरफ के नीचे के हिस्से में बाँधा जाता है तथा दूसरी ओर से बाँस की लकड़ी से बाँधा जाता है। यह ऊपरी हिस्से से खुला रहता है तथा इसके सुर बेस नोट होते हैं। यह लोकगीतों के साथ प्रयोग किया जाता है।

मंदिरा : एक हाथ में पकड़कर, दूसरी ओर की जुड़ी हुई तार को हाथ में लपेटकर इस वाद्य को बजाया जाता है। एक बार प्रहार करने से इसमें से आवाज़ घूम-घूमकर होते हुए आती है। बंगाल के लोकगीतों में इसका बहुत उपयोग होता है।

धमक : इस वाद्य यंत्र में एक तार लगा होता है, जिसे नीचे के बेस हिस्से से जोड़ा हुआ होता है। नीचे का हिस्सा गर्ड शैल का बना हुआ होता है। उँगलियों से इस नीचे के गर्ड शैल को दबाया जाता है, जिससे कंपन पर आवाज आती है। यह बाउल गीत का उपयोगी यंत्र है। आनंद लहरी यह वाध यंत्र भी काफ़ी हद तक खमक से मिलता-जुलता है। इसे गोपी मंत्र के नाम सभी जाना जाता है। इसके नीचे लगे हुए बाज के नीचे दबाकर तार को दूसरी ओर से हाथ से पकड़ा जाता है और बाजू के नीचे दबाकर तार को उसी हाथ मे पकड़कर दूसरे हाथ की उँगली से बजाया जाता है।

ढोलक : यह ढोल' की तरह छोटे आकार की होती है, जिसे दोनों हाथों से बजाया जाता है। माँगलिक पर्वों पर स्त्रियों के गीत प्राय: ढोलक की ताल पर ही गाए जाते हैं।

'खंजरी' अथवा 'खंजनी' : बहुत आसानी से बजने वाले इस वाद्य को लगभग हर लोकप्रिय या लोकनृत्य में उपयोग किया जाता है। यह लंबे आकार का लकड़ी का बना फ्रेम होता है। इसमें धातु से बनी

पतली तथा छोटी प्लेटें लगी होती हैं। इसे हाथ में बजाया जाता है। यह वाद्य एक छोटे तंबूरे की तरह होता है। यह संपूर्ण भारत में बहुत लोकप्रिय है, विशेषकर उड़ीसा तथा बंगाल के लोकगीतों में इसका प्रयोग किया जाता है।

मृदंग : मृदंग की प्राचीनता का प्रमाण ऋग्वेद से मिलता है। नटराज शंकर के डमरू के आधार पर मृदंग की उत्पत्ति हुई। पुरातन काल में मृदंग को 'पुस्कर' वाद्यों की श्रेणी में प्रथम कहा जाता था। यह वाद्य देवताओं को अतिप्रिय था। इसकी ताल के साथ-साथ उनका नृत्य हुआ करता था। इसका प्रमाण अनेक प्राचीन मूर्तियों तथा चित्रों द्वारा मिलता है।

खोल : 'खोल' वादन को कई तरह के लोकगीतों के साथ बजाया जाता है। इस वादन शैली को कीर्तन से लिया गया है। बंगाल के खोल क्ले (मिट्टी) से बनाए जाते हैं तथा इनको सिलिंडर जैसा आकार दिया जाता है। मणिपुर के खोल को 'पूंग' कहा जाता है। इसके आकार को लकड़ी से बनाया जाता है। लोक संगीत में भी इसका कभी-कभी प्रयोग किया जाता है। खोल का अधिक प्रयोग रवीन्द्र संगीत तथा अन्य भक्ति संगीत में किया जाता है। यह वाद्य खड़े होकर तथा बैठकर दोनों प्रकार से बजाया जा सकता है।

मादल : 'मादल' वाद्य पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा बिहार के आदिवासी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। उड़ीसा तथा पश्चिमी बंगाल में मादल को छोऊ नृत्य के साथ भी बजाया जाता है। यह अधिकतर पुरलिया तथा बरीपद क्षेत्रों में किया जाता है।

कांसर : 'कांसर' गोल आकार का धातु से बना एक वाद्य है। धातु की मोटाई के हिसाब से इसका सुर बाँधा जाता है। इसे एक मोटी लकड़ी के साथ बजाया जाता है। बजाते समय इसमें लगी एक मोटी रस्सी को एक हाथ में पकड़कर पीछे झुलाकर रखा जाता है। कांसर को मुख्य रूप से ढाक के साथ बजाया जाता है। यह ढाक की रफ़्तार के साथ लय बाँधकर रखता है।

ढोल : बंगाल के लोकसंगीत के वादन अंग में ढोल का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसके वादन कई प्रकार के हैं। इसे जोर से तथा धीमी आवाज़ दोनों प्रकार से बजाया जा सकता है। यह लकड़ी के एक बड़े खोल से सिलिंडर जैसे आकार से बनता है। इसमें दोनों तरफ के चमड़े को चमड़े की ही बद्दी से कसा जाता है। इसमें एक तरफ का चमड़ा मोटा होता है तथा दूसरी तरफ का चमड़ा पतला होता है। मोटी चमड़े को बाएँ हाथ से बजया जाता है तथा पतले चमड़े को लकड़ी की काठी से बजाते हैं। इस वाद्य को 18वीं तथा 19वीं सदी में काव्य गीतों के साथ बजया जाने लगा। असल में, ढोल कई वाद्यों का समूह है।

ढाक : 'ढाक' सबसे बड़ा ढोल है। यह बहुत प्राचीन काल में बंगाल के लोकसंगीत वादन का एक हिस्सा है। यह लकड़ी के एक बड़े टुकड़े का बना होता है। यह बीच में से खाली होता है। यह कंधे के एक तरफ लटकाकर लकड़ी की काठियों से बजाया जाता है। इस वाद्य का बंगाल में बहुत प्राचीन काल से प्रयोग होता आया है। एकता त्योहारों में इसका खास उपयोग होता है। इसका सबसे अच्छा प्रदर्शन बंगाल के प्रसिद्ध त्योहार 'दुर्गा पूजा' के समय होता है।

सराज : 'सराज' दोतारा का उन्नत संस्करण है। दोनों की बनावट एक ही जैसी है। लेकिन सराज आकृति में बड़ा है और यह मटियाली गाने के साथ बजता है। सराज लोकगीत, लोकनृत्य, शास्त्रीय संगीत, रवीन्द्र संगीत एवं लोकसंगीत के सभी वादन यंत्र हमारी ऐसी धरोहर हैं, जिसमें समाज की भावनाएँ माधुर्य के साथ अभिव्यक्त होती है। हर्ष-शोक, राग-विराग सभी की सहज अभिव्यंजना लोक वाद्यों के माध्यम से सरलतापूर्वक होती है। लेकिन यह निश्चित रूप से चिंताजनक है काल एवं पश्चिमी प्रभाव से अनेक लोकवाद्य और उनके वादक समाप्त हो चुके हैं, क्योंकि उन्हें प्रोत्साहन नहीं मिल पाया। लोक, समाज एवं संस्कृति की गूँजों-अनुगूँजों के वारिस वाद्य यंत्र ही हैं, इस सच्चाई को किसी भी सूरत में नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

– उच्चतर शिक्षा एवं शोध केन्द्र
3150, सेक्टर 24-डी चडीगढ़-160023
मो. 9876301085

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कलासमय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

आलेख

चन्देरी लोक संस्कृति विरासत : संगीत सूर्य बैजू बावरा

मजीत खाँ पठान

भारतीय लोक संस्कृति विरासत का इतिहास प्राचीनकाल की उन सीमाओं को जाकर छूता है जिसे कभी भारतीय इतिहास ने छुआ था। वैदिककालीन महाभारतकालीन भगवान श्रीकृष्ण जी की बाँसूरी की जुदाई करामात से कौन परिचित नहीं है। चन्देरी की माटी खुशनसीब है जिसका नाता भगवान श्रीकृष्ण जी से सीधा-सीधा जुड़ा हुआ है। स्मरण रहे चेदि नरेश शिशुपाल जिसकी राजधानी चन्देरी थी और चन्देरी नरेश शिशुपाल भगवान श्री कृष्णजी की बुआ का पुत्र था।

जिसे भगवान श्री कृष्णजी ने स्वयं इंद्रप्रस्थ यज्ञ से मार गिराया था वह नगर उसी शिशुपाल के नाम से जाना-पहचाना जाता है। आज भी चन्देरी (चेदि) नरेश शिशुपाल की राजधानी के रूप में ख्याति प्राप्त कर अनेका-अनेक किवदंती, गाथा के अलावा क्षेत्रीय आदिम जनजाति द्वारा गाए जाने वाले लोक गीतों के माध्यम से राजा शिशुपाल का बखान कर प्राचीन इतिहास को जीवित रखे हुए है।

ऐतिहासिक एवं पर्यटन नगर चन्देरी पुरातात्विक पुरा-सम्पदा से परिपूर्ण एक ऐसा मझौला नगर है जो एक नहीं कई मायनों में महत्वपूर्ण होकर ऐतिहासिकता, प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक लोक संस्कृति रूप इसकी क्षेत्रीय पहचान है। बुनकरों की नगरी में अधिकांश घरों में स्थापित हाथ करघा पर पेशेवर कारीगरों द्वारा निर्मित कलात्मक चन्देरी साड़ियाँ, ड्रेस मटेरियल के लिए सम्पूर्ण भारत में विख्यात है।

प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत करता वर्तमान नगर निरंतर एक हजार वर्ष से आबाद होकर नगर स्थित विभिन्न प्राचीन दुर्ग, महल, मंदिर-मस्जिद, मठ-मकबरा, कुंआ-बावड़ियां, छत्रियां, तालाब, गढ़ी-हवेलियां, प्राचीन दरवाजे, नगर सुरक्षा दीवार, दुर्ग सुरक्षा दीवार, बुर्ज यहाँ तक की पुराने रास्ते उन पर बिछे पत्थर नगर की कालजयी धरोहर होकर नगर की पहचान के अहम् साक्ष्य है।

14-15वीं सदी में यह नगर देशी गीत-संगीत साहित्य इत्यादि क्षेत्र में एक प्रमुख केन्द्र बनकर उभरा। राजकीय संरक्षण प्राप्त देशी संगीत को बढ़ावा मिलने के साथ देशी संगीत ख्याल गयकी के जन्म का श्रेय भी इस नगर को प्राप्त हुआ। विद्वानों ने फड़ संगीत के रूप में सबसे पहले लाउनी या ख्याल गायकी की शुरुआत चन्देरी से ही मान्य की है। बुन्देलखण्ड के नामचीन साहित्यकार विद्वान डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त फड संगीत का विस्तर से वर्णन करते हुए लिखते हैं कि फड़ संगीत के रूप में सबसे पहले लाउनी ला ख्याल गायकी चन्देरी से शुरु हुई और 18वीं सदी तक पूरे बुन्देलखण्ड में प्रचलित हो गई।

16वीं सदी भारतीय संगीत साहित्य में एक अलग मुकाम रखती है। इस कालखण्ड में संगीत साहित्य को भरपूर बढ़ावा मिलने के साथ ही राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। इसका सबसे बड़ा नतीजा यह सामने आया कि संगीत कला में उन्नति के नए-नए द्वार खुले। भारतीय संगीत में देशी, क्षेत्रीय संगीत की पूछ-परख बढ़ी, संगीत में नए-नए प्रयोग किए जाने लगे। जब क्षेत्रीय लोक संगीत की पूछ-परख बढ़ी तो परिणाम यह सामने आया कि क्षेत्रीय लोक गायकों को नई पहचान सम्मान मिलना प्रारम्भ हो गया।

मध्यकालीन चन्देरी लोक संस्कृति विरासत का प्रतिनिधित्व करते, सांस्कृतिक धरोहर रूपी संगीतमाला के अनमोल

मोती, लोक गायक संगीत सम्राट बैजू बावरा भारतीय लोक सांस्कृतिक विरासत के मुख्य पात्रों में शुमार होकर आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। वहीं दूसरी ओर बैजू बावरा का जन्म-जन्म का नाता इस नगर से होने के कारण बैजू बावरा हमारी सांस्कृतिक विरासत की अनमोल धरोहर है।

क्षेत्रीय धारणा अनुसार तानसेन के समकालीन एवं तानसेन के गुरु भाई संगीत सूर्य बैजू बावरा का जन्म 16वीं सदी के मध्य चन्देरी के एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इस संबंध में

बुन्देलखण्ड के नामचीन साहित्यकार विद्वान श्री वृन्दावन लाल वर्मा द्वारा रचित ऐतिहासिक उपन्यास मृगनयनी में बैजू बावरा को चन्देरी निवासी दर्शाते हुए उसके जीवन का विस्तार पूर्वक वर्णन करते है। स्थानीय एवं क्षेत्रीय साहित्यकारों का यह आम विश्वास है कि बैजू

बावरा चन्देरी की गलियों में ही पल-पुस कर बड़ा हुआ है।

लेकिन आज महत्वपूर्ण यह नहीं है कि बैजू बावरा का जन्म कहां हुआ है, आज महत्वपूर्ण यह भी नहीं है कि बैजू बावरा का जन्म कब हुआ है, यह सब शोध-खोज के विषय हैं। आज यदि महत्वपूर्ण है तो वह है बैजू बावरा द्वारा क्षेत्रीय-भारतीय लोक संस्कृति में प्रदान किए गए अमूल्य योगदान को समझना जिसके बलबूते पर आज भी बैजू बावरा भारतीय जन मानस के दिलो-दिमाग में अपना स्थायित्व प्राप्त किए हुए है।

लोक गायक बैजू बावरा का पूरा नाम पंडित बैजनाथ प्रसाद था। किन्तु स्नेहवश लोग बैजनाथ को बैजू कह कर पुकारते थे। धीरे-धीरे यही नाम आम बोलचाल की भाषा में जगह पा गया। बैजू बावरा का बाल्यकाल चन्देरी की गलियों में बीता। बैजू बावरा का निवास स्थान राजमहल के आसपास था। बाल्यकाल से ही बैजू बावरा का झुकाव गायन-वादन संगीत की ओर होने के कारण स्थानीय स्तर पर ही अपने कंठ का माधुर्य और संगीत की अदायगी प्रस्तुत करने लगे।

गायन विधा के गुर प्राप्त करने के लिए बैजू ने तात्कालीन भारतीय संगीत के मुख्य संरक्षक आचार्य स्वामी हरिदास को अपना गुरु बनाया और वृंदावन स्थित उनके आश्रम में रहकर लोक संगीत शिक्षा प्राप्त की। गुरु दीक्षा प्राप्त कर चन्देरी के राज दरबार में अपने हुनर का जलबा बिखेरा। उसी समय नरवर के राजा राजसिंह चन्देरी में निर्वासित जीवन गुजार रहे थे वह बैजू के प्रमुख प्रशंसक बने।

बैजू बावरा और स्थानीय कला नामक युवती प्रेम प्रसंग ने बैजू को इस हद तक दीवाना बना दिया कि वह बावरा जैसे स्थिति तक पहुंच जाने के कारण लोग उसे बावरा पुकारने लगे। चन्देरी में अपना भविष्य सुरक्षित न देखकर बैजू ने ग्वालियर राजा मानसिंह के दरबार में अपना ठिकाना बनाया। ध्रुपद विधा में नई परिपाटी को जन्म देकर अपने नाम को सारे भारत में रोशन किया।

ग्वालियर राजा मानसिंह ने रानी मृगनयनी को संगीत शिक्षा हेतु बैजू बावरा को नियुक्त किया बैजू ने रानी को संगीत में पारंगत कर अपनी योग्यता को सिद्ध किया। उस समय प्रसिद्ध हुए गूजरी टोडी, मंगल गूजरी आदि राग इसी मृगनयनी के नाम पर रचित हुए। राजा मानसिंह ने बैजू बावरा को नायक पद से सम्मानित किया।

बैजू बावरा और तानसेन के मध्य हुई संगीत प्रतियोगिता के बारे में कई जानकारी सार्वजनिक हुई है जिनके अनुसार बैजू बावरा ने तानसेन को पराजित किया था। बैजू बावरा के माता-पिता अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण उनके स्वभाव एवं आचरण का असर बैजू बावरा के जीवन पर भी पड़ा। बैजू बावरा का धार्मिक स्वभाव भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित रहा। बैजू बावरा ने अपने गायन एवं स्वयं द्वारा रचित रचनाओं के माध्यम से प्रकटीकरण भी किया।

एरी आनंद भयो
ब्रिज में श्रीकृष्ण जनम लियो
शुभ घड़ी शुभ दिन शुभ ही महुरत
प्रगट भये ब्रिजराज
ब्रह्मा वेद पढ़े महादेव दरशन देवे
नाचत गोपी नारद वीणा बजावे
बैजू नन्द महोत्सव देखत मगन भयो
पूजे मन इच्छा सुर नर मुनि काज
एरी आनंद भयो।

बैजू बावरा को ध्रुपद गायन में महारथ हासिल थी नए-नए ध्रुपद पदों की रचना कर ध्रुपद गायन का प्रचार-प्रसार किया। बैजू के नए रागों में गूजरी टोड़ी, मृगनयनी टोड़ी, मंगल गूजरी सर्वाधिक सर्वश्रेष्ठ है। होरी गायकी सृजन का श्रेय बैजू बावरा के खाते में जमा माना जाता है। आज भी बैजू बावरा द्वारा रचित पद भारतीय संगीत साहित्य में उपलब्ध है जो बैजू बावरा को महानता प्रदान करने में सहायक है।

भारत में भक्ति आंदोलन के समय सूफी गायन का आना ऐसी परिस्थितियों में बैजू बावरा ने क्षेत्रीय गीत-संगीत में बदलाव कर देशी संगीत की भरपूर सेवा कर अपने भारतीय धर्म को निभाया। अतएव बैजू बावरा द्वारा भारतीय संगीत में प्रद्धत योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

बैजू बावरा के साथ एक नहीं अनेक किंवदतीयां, गाथा किस्सा-कहानियां जुड़ी हुई है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में बैजू बावरा का नाम सब दूर विख्यात है। चन्देरी नरवर ग्वालियर, सीकर, वृंदावन, इत्यादि स्थानों पर अपनी छाप छोड़ने वाले संगीत पुरोधा का स्मारक चन्देरी में पहाड़ी पर किला परिसर में स्थित है। किला परिसर राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित होने के कारण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (भारत सरकार) द्वारा संरक्षित है।

बैजू बावरा की स्मृति को चिर स्थाई रखने के लिए स्थानीय स्तर पर संगीत विरासत प्रेमी पंजीकृत एवं अपंजीकृत संस्थाएं प्रतिवर्ष जन्म दिवस एवं पुण्यतिथि पर छोटे-छोटे आयोजन कर अपनी भावना का प्रकटीकरण का सिलसिला नियमित जरी है। चन्देरी बैजू बावरा

संगीत क्लब समिति (पंजीकृत संस्था) बैजू बावरा की स्मृति को चिरस्थाई रखने के लिए प्रत्येक वर्ष अपने स्तर पर बैजू बावरा स्मारक पर कार्यक्रम आयोजित करती है।

1983 ईस्वी में शासन सहयोग से विशाल पैमाने पर स्थानीय बाल उद्यान मैदान (राजमहल) संगीत सूर्य बैजू बावरा स्मृति समारोह का सफल आयोजन किया गया। जिसमें देश के ख्यातिमान गायकों संगीतज्ञों द्वारा प्रस्तुति दी गई। फरवरी 2010 ईस्वी में संस्कार भारती नामक संस्था द्वारा रवीन्द्र भवन भोपाल में तीन दिवसीय बैजू बावरा राष्ट्रीय संगीत महोत्सव का सफल आयोजन कर दर्शाया कि भारतीय जनमानस बैजू बावरा को भुला नहीं है।

अक्टूबर 2010 ईस्वी में म.प्र. शासन संस्कृति विभाग द्वारा बैजू बावरा संगीत समारोह का तीन दिवसीय सफल आयोजन सम्पन्न हुआ। 2011 ईस्वी में शासन द्वारा जारी बैजू बावरा संगीत समारोह को अपरिहार्य कारण दर्शा कर निरस्त कर दिया गया। जनवरी 2013 ईस्वी में जिला प्रशासन एवं स्थानीय प्रशासन द्वारा आयोजित विरासत चन्देरी अंतर्गत बैजू बावरा संगीत सभा का सफल आयोजन बैजू की याद रखने का माध्यम बना।

फरवरी 2016 ईस्वी में प्रथम बैजू बावरा ध्रुपद उत्सव का आयोजन श्री अचलेश्वर महादेव मंदिर फाउण्डेशन, डाला सोनभद्र (उ.प्र.) द्वारा स्थानीय नगरीय निकाय के सहयोग से राजमहल में आयोजन किया गया। उक्त संस्था द्वारा नगरीय निकाय के सहयोग से 2017 एवं 2018 ईस्वी में भी बैजू बावरा संगीत समारोह आयोजित किया गया है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नगर चन्देरी के विरासत एवं संगीत प्रेमी लोक गायक बैजू बावरा के प्रति अपनी

जागरूकता का परिचय देते हुए उसकी स्मृति को जीवित रखे हुए है। इसके अलावा वह समय-समय पर बैजू बावरा संगीत समारोह शासकीय स्तर पर आयोजित किया जावे लिखित एवं मौखिक रूप अपनी भावनाओं का प्रकटीकरण करते रहते हैं।

एक बार फिर 13 अक्टूबर 2019 को चन्देरी बैजू बावरा संगीत समिति के तत्वाधान में बैजू बावरा जन्मोत्सव स्थानीय विधायक सहित नगर के जन प्रतिनिधिगण, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मीडिया सहित विरासत-संगीत एवं पर्यटन प्रेमियों द्वारा बैजू बावरा स्मारक पर एकत्रित होकर मनाया गया। इस अवसर पर संगीत सभा का आयोजन भी किया गया। संगीत सभा में स्थानीय लोक गायक परमलाल परम के अलावा नगर के होनहार उभरते बाल-बालिका गायक पर्यत एवं प्रत्या परम ने अपनी मधुर प्रस्तुति दी।

- सदस्य, जिला पर्यटन संवर्धन परिषद, जिला पुरातत्व संघ, भारतीय सांस्कृतिक निधि, चन्देरी जिला अशोकनगर (म.प्र.), मोबा. 09425723937

भारतीय कला दृष्टि

हिमालय से हरिद्वार

लेखक	:	नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
प्रकाशन	:	रेमाधव आर्ट फाउंडेशन, 111 के 103, दूसरा तल, राकेश मार्ग, नेहरू नगर 111, ग़ाज़ियाबाद-201010 (उ.प्र.)
फोन	:	01204236984, 09953672445
प्रकाशन वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹699/-

पुस्तक समीक्षा

मौन भित्तिचित्रों को मुखरित करती महत्वपूर्ण कृति ''मालवा के भित्तिचित्र''

संदीप राशिनकर

चित्रकला मानव मन की अभिव्यक्ति का न सिर्फ पुरातन वरन सशकत माध्यम रहा है। मानव ने अपने अनुभवों, जीवन और दैनन्दिनी क्रिया कलापों को शुरु से ही चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है, जिसके प्रमाण हमें विश्व भर में फैले शैलचित्रों के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। शैल गुफाओं में निवास करते मानव ने गुफाओं की शिलाओं पर न सिर्फ़ अपने भाव उतारे हैं वरन मानव जाति के क्रमिक विकास की यात्रा को भी उसने इन शैलचित्रों में दर्ज किया है। शब्दों, बोलियों और भाषाओं का उद्‌भव और विकास तो बहुत बाद की बात है किन्तु यह सच है कि मानव ने अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम रेखाओं और चित्रों में ही तलाशी है।

तभी तो हाल ही में प्रकाशित कृति ''मालवा के भित्तिचित्र'' के लेखक, ललित निबंधकार और कला मर्मज्ञ नर्मदा प्रसाद उपाध्याय अपने प्रारम्भिक निवेदन में कहते हैं कि ''यदि विश्वास जड़ हो जाए तो कला भी जीवंत नहीं रहती। जड़ विश्वास यह है कि रंग और रेखा बोलते नहीं और आँखों से सुना नहीं जा सकता, लेकिन अनुभव यह कहता है कि रंग और रेखा वाचाल होते हैं तथा आँखें उनके संवाद को सुनती हैं। आँखों का यही सुनना बाद में देखना हो जाता है। रंग और रेखा का संवाद, रूप की ऐसी देह बन जाता है जिसके कंठ से रूपायन की कहानी झरने लगती है, तब भीमबैठका से लेकर अजंता और बाघ की भित्तियां इस कथा पाठ की मुखर मंच बन जाती हैं। इसलिए इतिहास के गलियारे में ऐसे मुखर मंच तब से सजते रहे हैं जब से मनुष्य की संवेदना ने अपनी आँखें खोलीं। भित्तियों की गवाही से कहें तो रूपायन की यह कहानी पाषाण युग के पूर्व से आरम्भ होती है और फिर इसकी यात्रा कभी विराम नहीं लेती। भित्तिचित्रों की इस यात्रा का साक्षी होना भी इस यात्रा में साझेदारी करने की तरह है, क्योंकि इन्हें निहारते-निहारते आप स्वयं उस युग का अंग बन जाते हैं।''

''मालवा के भित्तिचित्र'' कृति मानव की विकास यात्रा से भित्तिचित्रों के माध्यम से साक्षी होने का एक प्रामाणिक प्रयास है। यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि कृति का नामकरण भले ही भित्तिचित्रों का सन्दर्भ क्षेत्र मालवा निर्दिष्ट करता है किन्तु इस कृति में पाठकों की दृष्टि को विकसित करने के उद्देश्य से लेखक ने न सिर्फ देश विदेश के भित्तिचित्रों की ऐतिहासिकता, मानव विकास को समझने की दृष्टि व उसकी महत्ता को उल्लेखित किया है, वरन ''भित्तिचित्र परम्परा'' शीर्षक के खंड में सार्थक जानकारी उपलब्ध कराई है। प्रागैतिहासिक काल से

रंगों और रेखाओं के माध्यम से दृश्यमान होते मनुष्य की परिभाषा बने चित्रों के आदिकालीन अंकन की कहानी कहते शैलचित्रों के वैश्विक परिदृश्य की जानकारीपूर्ण भूमिका जहाँ विषय को समग्रता में समझने में मददगार होती है वहीं भारतीय परिदृश्य में शैलचित्रों की महती सामग्री मूल विषय की ओर अग्रसर होने का मानस बनाती है। विश्वविख्यात अल्तिमारा की गुफाओं का उल्लेख हो, इंडोनेशिया, नियोक्स, मिस्र, रोम या मेसोपोटामिया में मिले चालीस हज़ार वर्ष पूर्व के शैलचित्रों का इतिहास हो, व्यापक विषय की सारगर्भित प्रस्तुति पाठक को प्रभावित करती है। भारतीय परिदृश्य में शैलचित्र के अंतर्गत विशद तथा महत्वपूर्ण जानकारियों का संक्षिप्त एवं रोचक वर्णन किया गया है। कालक्रमानुसार देश के अलग-अलग क्षेत्रों में खोजे गए शैलचित्रों की सचित्र जानकारियां पाठक को विस्मित करती हैं। शैलचित्रों की पृष्ठभूमि हो, उपयुक्त नैसर्गिक रंगों की जानकारी हो, चित्रित विषय की विवेचना हो या लिपियों में उल्लेखित वर्णन हो, शैलचित्रों से संबंधित प्रत्येक पहलू की जानकारी इन पृष्ठों में समाहित है।

प्रागैतिहासिक काल में मानव जब गुफाओं को अपना आवास बनाकर उसे अपनी कला से सज्जित करता था तब शैल पर निर्मित शैलचित्र कहलाती ये कला जब भवनों की भित्तियों या दीवारों पर उकेरी गई तो वह भित्तिचित्र कहलाई। इन्हीं शैलचित्रों, भित्तिचित्रों की वैश्विक और भारतीय परिदृश्य की यात्रा को समेटता यह खंड मालवा के भित्तिचित्रों पर केन्द्रित पुस्तक की भावभूमि तैयार करता है। श्रमसाध्य एवं अभ्यासपूर्वक किया गया यह सामग्री संकलन, संपादन व प्रस्तुतीकरण निश्चित ही पाठक के मन में इस विषय के प्रति जिज्ञासा का निर्माण करते हुए उसे इस महत्वपूर्ण कृति को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

विषय के प्रति अपेक्षित जिज्ञासाओं के निर्माण के बाद

लेखक ने मालवा के विभिन्न क्षेत्रों बजरंगगढ़, राघौगढ़, नरसिंहगढ़ एवं साकाश्यामजी, देवास, उज्जैन, इंदौर, धार, मांडू, अमझेरा, रतलाम, बाघ, दशपुर (मंदसौर), भानपुरा, नीमच, पिपल्यारावं एवं जमुनिया राव में भित्तिचित्रों, उनकी उपस्थिति, कालावधि, विषयवस्तु एवं विशेषता के बारे में अलग-अलग खण्डों में सचित्र विस्तारपूर्वक जानकारियां दी हैं।

यहाँ यह उल्लेख महत्वपूर्ण है कि सारे क्षेत्रों के बारे में उनकी ऐतिहासिकता के परिप्रेक्ष्य में विशेष जानकारियां उल्लेखित हैं। लेखक ने उन क्षेत्रों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को व्याख्यायित किया है। यह पहल इस मायने में अभिनव और प्रशंसनीय है कि इन संदर्भों के सापेक्ष हमें वहां निर्मित भित्तिचित्रों में चित्रित कलमों और उनके प्रभावों को समझने में मदद मिलती है। किन-किन राजाओं के शासनकाल में किन कला शैलियों का विकास हुआ, कौनसी कला शैलियाँ किन प्रभावों में निर्मित हुईं और उनमें किन-किन सामाजिक, राजनैतिक घटकों के बिम्ब उभरे। फिर वो घटक चाहे परिधान हो, रहन-सहन हो, परिवेश हो, कदकाठी हो या तत्कालीन गतिविधियाँ हों। इन सारे घटकों के सम्मिलित प्रभावों से उभरी कला शैलियों या क़लमों के बारे में प्रस्तुत सामग्री अचंभित करते हुए पाठक की कला जिज्ञासाओं का सार्थक समाधान करती है। क्षेत्रवार विकसित कलमों के नामकरण, आयातित कलाकारों की मौलिक क़लमों के प्रभाव और सामंजस्य से विकसित स्थापित कलमों की भी सुरुचिपूर्ण एवं तथ्यपूर्ण व्याख्याएँ सामग्री को ज्ञानवर्धक और रुचिकर बनाती हैं।

मालवा के कलात्मक परिप्रेक्ष्य को समझने और उसके वैभव से पाठकों का साक्षात्कार कराने के उद्देश्य से कृति के अंत में दो विशिष्ट परिशिष्ट दिये गए हैं। पहिला परिशिष्ट ''मालवांचल का मूर्तिशिल्प'' हमें मालवा में विकसित व निर्मित मूर्तिकला के वैभव से परिचित कराता है। दूसरे परिशिष्ट ''मालवा की चित्रांकन परंपरा : विहंगावलोकन'' में इस क्षेत्र की रचनात्मकता के विषय व वृहद आयाम चमत्कृत करते हैं क्योंकि इस खंड में भित्तिचित्रों के साथ ही चित्रांकन के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए कला की विराटता को न सिर्फ सहेजा गया है वरन मालवा की समृद्ध कला परम्परा से पाठकों को रूबरू करवाया गया है।

उल्लेखनीय है कि लेखक स्वयं कलाप्रेमी व कला मर्मज्ञ होने से उसने न सिर्फ संदर्भित सामग्री के परिप्रेक्ष्य में अपनी बात कही है वरन व्यक्तिगत रूप से भी अलग-अलग कालावधियों में उन स्थानों की यात्रा कर ऐतिहासिक संदर्भों और चित्रों को जुटाया है। यहाँ यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि भित्तिचित्रों के विशद आकलन में मात्र रियासतों या गढ़ियों के चित्र ही संदर्भ में नहीं हैं वरन उस क्षेत्र में जो भी ज्ञात व्यक्तिगत हवेलियां थीं उनमें भी भित्तिचित्रों को न सिर्फ खंगाला गया है वरन उन्हें भी महत्व के साथ सचित्र उल्लेखित किया गया है। यह पहलू दर्शाता है कि भित्तिचित्रों के दस्तावेज़ीकरण का यह प्रयास इस विषय में किया गया एक गंभीर एवं ऐतिहासिक कार्य है। भित्तिचित्रों में कालावधि में आये क्षरण, उनके रखरखाव, संरक्षण आदि के बारे में भी लेखक के सरोकार मुखर होते हुए इसके संरक्षण की आवश्यकता और महत्ता को स्वर देते हैं।

अमूमन होता यह है कि किसी भी विषय पर सर्वेक्षणात्मक दस्तावेज़ीकरण जब किया जाता है तो वह कृति मात्र संदर्भों, दस्तावेज़ों तथा जानकारियों का एक अकादमिक पुलिंदा बनकर रह जाती है। किन्तु यहाँ यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि ''मालवा के भित्तिचित्र'' शीर्षक यह कृति इस परम्परा का अपवाद बन उभरी है। इसका एक तार्किक कारण इसके लेखक का कला मर्मज्ञ होने के साथ साथ सशक्त ललित निबंधकार भी होना है। इस कृति में तथ्यों, सन्दर्भों तथा दस्तावेज़ों के तमाम निर्जीव अक्स, विचार, भाषा और अभिनव लालित्य के साथ जीवंत होते हुए पाठकों से एक आत्मीय रिश्ता क़ायम करते हैं और यही इस कृति की की सफलता भी है और वैशिष्ट्य भी। यह कृति सामग्री के स्तर पर निश्चित ही एक सर्वकालिक महत्वपूर्ण कृति है साथ ही इसके विषय का रोचक प्रस्तुतीकरण इसे अधिक पठनीय बनाता है। कृति में श्रमपूर्वक संकलित किये गए भित्तिचित्रों के प्रभावी चित्र और उनकी जानकारी इस कृति की दर्शनीयता बढ़ाते हुए पाठक में विषय के प्रति उत्सुकता जगाते हैं।

बहुत ही आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रकाशित यह कृति निश्चित ही कला प्रेमियों, कला जिज्ञासुओं और शोधार्थियों के लिए अनुपम देन है। नर्मदा प्रसादजी के लिखे निवेदन की तर्ज़ पर यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं कि भित्तिचित्रों की इस यात्रा का साक्षी होना भी इस यात्रा में साझीदारी करने जैसा है, वैसे भी इस कृति से गुज़रना शैलचित्रों व भित्तिचित्रों की समृद्ध परम्परा से साक्षात होना है।

पुस्तक : मालवा के भित्ति चित्र, लेखक : नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, प्रकाशक : निदेशक आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स भोपाल फोन : 0755-2661640, 2661948, मूल्य : 1200/- रूपये, प्रकाशन वर्ष-2018

- 11-बी, राजेंद्रनगर, इंदौर-452012 (म.प्र.)
मो. 9425314422, 8085359770

विश्वविद्यालय महापुरूषों के निर्माण के कारखाने हैं और अध्यापक उन्हें बनाने वाले कारीगर हैं।

-रवीन्द्रनाथ टैगोर

पुस्तक समीक्षा

एक अनवरत यात्री के लिए

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

अद्‌भुत संज्ञा है इतिहास! अतीत जब स्मृति में रूपांतरित हो जाता है तो अमूर्त हो जाता है लेकिन फिर जब वे स्मृतियां अक्षर और शब्द के रूप में क़ाग़ज़ की भित्ति पर उतरनती हैं तो वे मूर्त हो उठती हैं। इतिहास निराकार स्मृतियों का साकार विग्रह है। हमारी उपासना परम्परा साकार की पक्षपाती है इसलिए स्मृतियां और स्मारक बार-बार पृष्ठों पर जीवित हो जाते हैं।

इतिहास का इस तरह प्रगट होना हमारी मनीषा की वह जिज्ञासा है जो निरंतर नए की खोज में पुरातन का सतत् अनुसंधान करती रहती है।

अनुजवत् ललित शर्मा की यह कृति, 'शाजापुर जिला : इतिहास और पर्यटन' एक ऐसा ही साकार विग्रह है स्मृतियों का, स्मारकों का और परिणति है उस अनुसंधान की जो सदैव पुरातन को नई दृष्टि से देखता और खोजता है।

ललित शर्मा एक ऐसे दृष्टिसम्पन्न इतिहासकार है जिनकी अपनी मौलिक समझ है। वे घटनाओं के विवरण तक सीमित नहीं रहते, उनके पूरे परिप्रेक्ष्य को उजागर करते हैं। वे केवल शुष्क तिथिक्रम नहीं देते बल्कि उन तिथियों के अंतर में झांककर घटनाओं के मर्म को उद्‌घाटित करते हैं। यही कारण है कि उनकी कृतियों में उस समय के लोक परिदृश्य के दर्शन तो होते ही है तत्कालीन प्रवृत्तियां भी प्रकाश में आती हैं। फिर वे उस यात्रा को आज से भी जोड़ने का यत्न करते हैं। वे पुल बनाते हैं अतीत और वर्तमान के बीच। यही कारण है कि उनकी कृतियों में जहां एक ओर इतिहास झिलमिलाता है तो इसी झिलमिल में आज के समय के लोक में हम पर्यटन भी कर लेते हैं।

क्षेत्रीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में यह एक महत्वपूर्ण प्रयोग है अन्यथा क्षेत्रीय इतिहास कहीं छोटे युद्धों, पारस्परिक कलह, सामाजिक आचार व रीतियों के कुहासे में गुम हो जाता है।

ललितजी ने इन अर्थों में निश्चय ही एक परम्परागत मिथक को तोड़ा है। यों तो उनकी अनेक कृतियां हैं और क्षेत्रीय इतिहास तथा पर्यटन लेखन के क्षेत्र में वे जाना पहचाना नाम है लेकिन उन्होंने मुख्य रूप से झालावाड़ के इतिहास तथा पर्यटन को लेकर प्रभूत लेखन किया है। हाड़ौती अंचल के इस महान क्षेत्र के प्रत्येक पहलू पर उनकी दृष्टि गई है। उन्होंने संत पीपा और झाला जालिमसिंह को लेकर जहां एक ओर गहरी शोध की है वहीं दूसरी ओर गागरौन दुर्ग से लेकर इस अंचल के सर्वथा अज्ञात शिलालेखों को खोजकर उन्हें पढ़ा है जिसके कारण इस क्षेत्र के इतिहास की कड़ियां भी आपस में जुड़ी हैं तथा अनेक अज्ञात तथ्य भी प्रमाणिक रूप से सामने आए हैं। उन्होंने इस अंचल की कलात्मक धरोहर पर भी गहरा शोध कार्य किया है तथा यहां की शिल्प, भित्तिचित्र तथा लघुचित्र परम्परा के साथ-साथ यहां के स्थापत्य से लेकर

अप्रकाशित साहित्यिक कृतियों को खोजकर विद्वत समाज के समक्ष उन्हें प्रस्तुत करने का सफल प्रयास भी किया है। उन्होंने हाडौती अंचल में प्रचलित वाक् परम्परा से चले आ रहे काव्य के उद्‌गम को खोजा है तथा उसका प्रामाणिक पाठ भी प्रस्तुत किया है। मैं समझता हूं हाड़ौती अंचल के इस उर्वर क्षेत्र की विरासतों और उसके वर्तमान परिदृश्य का शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो जो उनसे छूटा हो और ऐसा करते उन्होंने अपने पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों और विद्वानों को पूरा सम्मान भी दिया है तथा उनके द्वारा किए गए कार्य को भी अपनी कृतियों में उल्लिखित किया है।

अब वे इस अंचल से सटे मालवांचल की ओर उन्मुख हुए हैं। वैसे झालावाड़ और झालरापाटन एक समय मालवा के ही अंग रहे। झालरापाटन में तो आज भी मालवी ही बोली जाती है। यह अलग तथ्य है कि राजनैतिक परिवर्तनों के साथ मालवा क्षेत्र की सीमाओं में भले परिवर्तन होता रहा हो लेकिन मालवी आत्मा अक्षुण्य रही है।

ललितजी को मालवा की सहज विरासत मिली है। इसलिए उनके पास मालवा के इतिहास और संस्कृति के प्रत्येक पक्ष पर पर्याप्त जानकारी है तथा वे मालवा के इतिहास के मूल स्रोतों से भी भिज्ञ है। उन्हें स्व. विष्णु श्रीधर वाकणकर तथा स्व. डॉ. श्यामसुंदर निगम जैसे तपस्वी इतिहासकारों से दृष्टि भी मिली है और दर्शन भी। इन दोनों महान साधकों से उन्हें प्रचुर आशीर्वाद मिला और यही कारण है कि मालवा को लेकर उनका स्फुट लेखन भी बहुत है लेकिन यह कृति इन अर्थों में महत्वपूर्ण है कि इसमें उन्होंने विस्तारपूर्वक डॉ. वर्षा नालमे के सम्पादन में अपने शोधपरक अनुसंधान को संजोया है।

डॉ. वर्षा नालमे एक विदुषी अध्येता हैं जो 'दि कोर' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका की सहायक सम्पादक हैं तथा जिन्होंने रानी रूपमती की जीवनी पर विस्तार से कार्य किया है। एक प्रामाणिक शोधार्थी की भांति वे अपने निष्कर्ष वैज्ञानिक आलोक में इतिहास जगत के समक्ष रखती रही हैं। इस कारण इस शोध कृति में वैज्ञानिक ऐतिहासिक दृष्टि स्पष्ट होती है। यह केवल एक सर्वेक्षण कार्य नहीं है।

ललितजी ने इस शोध में शाजापुर जिले के उस प्रत्येक छोटे और बड़े स्थल के इतिहास और उसकी संस्कृति को अपने पूरे परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित किया है जिनके कारण शाजापुर की ऐतिहासिक अस्मिता निर्मित हुई। उन्होंने शाजापुर की प्राचीन संस्कृति से लेकर शाहजहां के द्वारा उसे बसाने तक का विवरण दिया है। उनका मानना है कि राजनैतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से यह भूभाग महाभारत काल के अवन्ति सम्राट विन्द-अनुविन्द से लेकर शक, मौर्य, मालव, उत्तर मौर्य, गुप्त, परमार, खीची, मराठों व सिंधिया शासकों के अधीन रहा तथा इन सबकी संस्कृति का प्रभाव इन पर पड़ा। पुरातात्विक उत्खननों के साक्ष्यों पर भी विचार करते हुए उन्होंने माना है कि यहां कायथा की प्राचीन संस्कृति विद्यमान रही है। डॉ. वाकणकर के द्वारा की गई शोध में मिले उपकरणों व पात्रों के संबंध में भी उन्होंने विस्तार से विचार किया है।

इस प्रकार प्रागैतिहासिक काल से लेकर प्राचीनकाल, मध्यकाल और वर्तमानकाल के समय तक का ऐतिहासिक कालक्रम उन्होंने प्रस्तुत किया है।

इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ ही उन्होंने यहां के व्यापारिक मार्ग, लोक संस्कृति, लोक कलाओं और लोकोत्सवों के संबंध में भी विस्तार से जानकारी दी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय की घटनाओं को भी उन्होंने विस्तार से अपने विवरण में संजोया है। वर्तमान शाजापुर जिले की क्या भौगोलिक अवस्थिति है उसे भी उन्होंने स्पष्ट किया है।

इसी क्रम में उन्होंने शाजापुर जिले के उन स्थानों के बारे में विस्तार से जानकारी दी है जो साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध रहे हैं। सेतखेड़ी, सुंदरसी, पीपल्या नगर, अवन्तिपुर बड़ोदिया, जामनेर, मक्सी व शाजापुर (नगर) सहित उन्होंने शुजालपुर व राणोगंज के संबंध में भी विस्तृत जानकारी अपनी कृति में प्रस्तुत की है। साहित्यिक दृष्टि से उन्होंने पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' से लेकर पं. लीलाधर जोशी तथा सौभाग्यमल जैन तक के परिचय को अपनी कृति में समाविष्ट किया है। विशिष्ट परिशिष्ट के रूप में देवी बगलामुखी पीठ, नलखेड़ा (आगर), रानी रूपमती (राजगढ़) तथा बैजनाथ महादेव (आगर) के संबंध में भी विशद् जानकारी दी है। यद्यपि अब आगर एक अलग जिला बन गया है किन्तु उन्होंने आगर के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र की विशिष्टताओं को भी अपनी कृति में संजोया है। इस ग्रंथ में उन्होंने शाजापुर जिले की चित्रवीथिका को प्रकाशित किया है तथा उन ग्रंथों की सूची भी दी है जो उनके इस कृति के लेखन में सहायक हुए हैं।

इस ग्रंथ का सबसे महत्वपूर्ण भाग है सुन्दरसी के उन मंदिरों का विवरण जहां अप्रतिम शिल्प धरोहर संजोयी हुई है। सुन्दरसी अभी एक छोटा सा ग्राम है लेकिन यहां प्राचीन मंदिरों की सारिणी है तथा ये मंदिर मालवा की परमार कला के अप्रतिम उदाहरण है। इसन मंदिरों का शिल्प अद्भुत है। महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, हरिसिद्धि, कालभैरव व गौरला भैरव के मंदिर यहां विद्यमान हैं। यहां एक मंदिर शिप्रेश्वर महादेव का है जहां मृत्यु के पश्चात जलतर्पण करने की पुरानी परम्परा विद्यमान है। इन मंदिरों में महाकालेश्वर मंदिर परमार कला का उत्कृष्ट उदाहरण है तथा यहां के ओंकारेश्वर शिव मंदिर पर जो अभिलेख पट्टिका है उससे यह ज्ञात होता है कि इस नगर का नाम सम्राट विक्रमादित्य की अनजा सुन्द्रा के नाम पर हुआ। चूंकि सुन्द्रा का विवाह यहां के राजपुत्र भगवंतसिंह से हुआ था तथा वह यहां भी प्रतिदिन महाकाल के दर्शन करने के लिए प्रतिबद्ध थी इसलिए यहां एक मंदिर बनाया गया।

ललितजी ने इस मंदिर के शिल्प पर विस्तार से विचार किया है तथा परमारकालीन मंदिरों की विशिष्टता जो भूमिज शिखरों के निर्माण से संबंधित है पर भी प्रकाश डाला है। इन मंदिरों में जो पश्चातवर्ती निर्माण कार्य हुए उस पर भी उन्होंने विचार किया है। सुन्दरसी जैन कला से भी समृद्ध रहा। ललितजी ने यहां से प्राप्त जैन मूर्तियों के संबंध में भी प्रकाश डाला है। इसी प्रकार उन्होंने अन्य स्थानों के बारे में वहां के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करते हुए वहां के शिल्पों के बारे में जानकारी दी है। मक्सी के जैन मंदिर भी सुप्रसिद्ध हैं। उन्होंने मक्सी के इन मंदिरों व वहां विराजित मूर्तियों के संबंध में ही केवल जानकारी नहीं दी है अपितु वहां उपलब्ध प्रतिमा लेखों को भी उन्होंने पढ़ा है।

शाजापुर किस प्रकार बसा इसकी उन्होंने विस्तृत जानकारी दी है तथा यह दिलचस्प तथ्य भी उद्घाटित किया है कि पलाश के वनक्षेत्र में सम्पृक्त होने के कारण इसे शाकपुर भी कहा जाता था तथा शाहजहां ने इसकी प्राकृतिक शोभा से प्रभवित होकर इस नगर का निर्माण नवीन ढंग से किया। ललितजी ने स्थानीय इतिहासकारों तथा बुजुर्गों से भी चर्चा कर अनेक दुर्लभ जानकारियां इस कृति में प्रस्तुत की हैं।

उन्होंने पर्यटन की दृष्टि से जो महत्वपूर्ण स्थान हैं उनके बारे में भी रोचक शैली में जानकारियां दी हैं जिससे इन स्थानों का महत्व स्पष्ट होता है। शाजापुर के पुरातत्व संग्रहालय में जो मूर्तियां संग्रहीत हैं, उनके बारे में उन्होंने विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया है। यहां रखे शिलालेखों और मुद्राओं का उन्होंने विवरण दिया है। कुषाण वंश तथा मथुरा के दत्त वंश की दुर्लभ मुद्राएं यहां प्रदर्शित हैं। यहां की लोकचिरावन परम्परा तथा लोक आभूषणों के बारे में भी उन्होंने

विवरण दिया है। इस संग्रहालय में उमामहेश्वर, गणेश, शिव, हरगौरी, वैष्णवी, भैरव, सूर्य तथा महिषासुरमर्दिनी की हिन्दू धर्म की प्रतिमाएं हैं तथा जैन यक्षिणी, आदिनाथ, तीर्थंकर, नेमिनाथ आदि की जैन मूर्तियां भी यहां हैं। ये मूर्तियां शाजापुर जिले के विभिन्न स्थानों से मिली हैं।

उक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अत्यंत परिश्रम के साथ ललितजी ने इस कृति को यह रूप दिया है। उन्होंने विस्तार से यहां की सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में विचार किया है। मेरा सुझाव है कि यहां की साहित्यिक विरासत के संबंध में भी वे विस्तार से कार्य करें क्योंकि शाजापुर जिला साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है तथा वे अपने इस कार्य में आगर की महान विभूति पं. गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र' के अवदान को भी शामिल करें। शाजापुर में पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' से लेकर नरेश मेहता तथा विष्णु नागर जैसे राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित साहित्यकार हुए हैं जिनके अवदान पर पृथक से एक कार्य उसी प्रकार किया जाना चाहिए जिस प्रकार का कार्य उन्होंने सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को लेकर इस कृति में किया है।

इस कृति के लिए मैं हृदय से अनुजवत् ललित शर्मा को साधुवाद देता हूं। मैं अपना आशीर्वाद उनकी सहधर्मिणी व मेरी बहन गायत्री तथा बिटिया तितिक्षा को भी देता हूं जिनके सहयोग के बिना उनका यह कार्य पूरा नहीं होता। मेरी शुभकामनाएं डॉ. वर्षा नामले के लिए भी है जिन्होंने अपनी दृष्टिसम्पन्नता का परिचय इस कृति में दिया है। ललितजी के वे सभी सहयोगी भी आदर के पात्र हैं जिन्होंने इस कृति को इस रूप में लाने के लिए उन्हें अपना सहयोग दिया।

इतिहास लेखन का कार्य एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इसलिए कि इसमें कथाओं किवदंतियों और प्रचलित लोक मान्यताओं के बीच से पूरी ईमानदारी के साथ एक प्रामाणिक विवरण को लोक के सामने रखना होता है। इतिहास लेखन में अपने आग्रहों और प्रतिबद्धताओं से परे रहते हुए अपनी साधना करनी होती है। इस दृष्टि से ललितजी ने निश्चय ही अपने दायित्व का निर्वाह किया है।

यद्यपि वे हाड़ौती अंचल के प्रतिष्ठित इतिहासकार हैं तथा उन्होंने प्रचुर लेखन किया है किन्तु मैं मानता हूं कि उनकी यात्रा अभी आरंभ हुई है और उन्हें उस पथ पर निरंतर उस सीमा तक चलते रहना है जब तक कि राह का अंत न हो। इसलिए मैं इन पंक्तियों के साथ उनके सृजन और अनुसंधान की अविराम यात्रा के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूं।

इस पथ का उद्देश्य नहीं है
श्रांत भवन में टिक रहना
किन्तु पहुंचना उस सीमा पर
जिसके आगे राह नहीं।

पुस्तक : शाजापुर जिला इतिहास और पर्यटन, लेखक : ललित शर्मा, प्रकाशक : सनातन प्रकाशन कार्यालय 1223/25, अजायबघर का रास्ता किशन बाजार जयपुर-302002, फोन : 9928001528, मूल्य-450 रूपये

85, इंदिरा गांधी नगर, आरटीओ कार्यालय के पास, केसर बाग रोड, इन्दौर (म.प्र.), मो.: 09425092895

मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित

राज्य शिखर सम्मानों का अलंकरण समारोह

18 नवम्बर 2019 को बहिरंग भारत भवन भोपाल में आयोजित हुआ।

डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ

माननीय मंत्री, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति, चिकित्सा एवं आयुष विभाग द्वारा इस अवसर पर वर्ष 2016, 2017 एवं 2018 के साहित्यकारों एवं कलाकारों को प्रतिष्ठा सम्मानों से अलंकृत किया।

अलंकृत साहित्यकार एवं कलाकार

हिन्दी साहित्य
2016 श्री स्वयं प्रकाश, भोपाल
2017 श्री नरेन्द्र जैन, उज्जैन
2018 श्री शशांक, भोपाल

उर्दू साहित्य
2016 डॉ. मुजफ्फर हनफी, दिल्ली
2017 डॉ. राहत इन्दौरी, इंदौर
2018 प्रो. सादिक अली, दिल्ली

संस्कृत साहित्य
2016 डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, भोपाल
2017 प्रो. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी, वाराणसी
2018 डॉ. कृष्णकान्त चतुर्वेदी, जबलपुर

शास्त्रीय नृत्य
2016 श्रीमती विभा दाधीच, इंदौर
2017 डॉ. सुचित्रा हरमलकर, इंदौर
2018 डॉ. लता सिंह मुंशी, भोपाल

शास्त्रीय संगीत
2016 पं. सिद्धराम स्वामी कोरवार, भोपाल
2017 पं. किरण देशपाण्डे, भोपाल
2018 पं. विजय घाटे, पुणे

रूपंकर कलाएँ
2016 श्री आर.सी. भावसार, उज्जैन
2017 श्रीमती निर्मला शर्मा, भोपाल
2018 सुश्री सीमा घुरैया, भोपाल

नाटक
2016 श्रीमती पापिया दासगुप्ता, भोपाल
2017 श्री लोकेन्द्र त्रिवेदी, दिल्ली
2018 श्री कन्हैयालाल कैथवास, उज्जैन

आदिवासी एवं लोक कलाएँ
2016 श्री ललताराम मरावी, डिंडोरी
2017 श्रीमती लक्ष्मी त्रिपाठी, छतरपुर
2018 श्रीमती लाडो बाई, भोपाल

दुर्लभ वाद्य वादन
2016-मैहर वाद्यवृन्द, मैहर
2017-श्री सुविर मिश्र, मुम्बई
2018-श्री संजय पंत आगले, इंदौर

आयोजन

पंडित दरगाही मिश्रा स्मृति संगीत समारोह

सम, लोक कला मंच और संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र संगीत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों महान् संगीतकार संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र की स्मृति में एक संगीत समारोह का आयोजन लोक कला मंच सभागार में किया गया। दोनों ही दिन महान् संगीतकार और संतूर वादक पद्मश्री पंडित भजन सोपोरी, विश्वविख्यात कथक नृत्यांगना विदुषी शोभना नारायण, समाज सेवी डॉ. योगेश दुबे, कवि और लेखक श्री हरि शंकर राढ़ी, संगीत सेवी कैप्टन शिखर जौहरी, प्रसिद्ध गायक पंडित भोलानाथ मिश्रा एवं सुविख्यात नर्तकी विदुषी ममता महाराज जैसे स्वनामधन्य अपनी-अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की न केवल गरिमा बढाई बल्कि सम और संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र संगीत अकादमी सहित इनके संस्थापक-अध्यक्ष पंडित विजयशंकर मिश्र के कार्यप्रणाली की सराहना भी की।

पहले दिन का कार्यक्रम सामूहिक तबला वादन से आरम्भ हुआ। 10 बाल कलाकारों- अमी अरोड़ा, सम्वेद ओझा, अभिराज सिंह, निखिल वर्मा, आर्यवीरपृथ्वी पांडेय, हिमांशु परिडा, दिव्यांश मौर्या, अद्वय मलिक, कार्तिक सिंह एवं बिनोदा चन्द्र ओझा ने सर्वप्रथम त्रिताल फिर रूपक झमताल और एकताल के बाद फिर त्रिताल में अनेक मुखड़े, टुकड़ों, तिहाइयों, परनों, फरमाइशों चक्रदारों, गतों और कमाली चक्रदारों आदि की आकर्षक और रोमांचक प्रस्तुति की। बार-बार गूंजती दर्शकों की तालियां उनका उत्साह लगातार बढ़ा रही थीं। हारमोनियम पर दिवाकर शर्मा ने भी अच्छी संगति की। इन सभी कलाकारों को विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। सुश्री अहाना ओझा ने अपने आकर्षक ओडिसी नृत्य के माध्यम से भूमि प्रणाम, मंगलाचरण और वसंत पल्लवी की सुंदर प्रस्तुति करके दर्शकों की प्रशंसा प्राप्त की। अहाना को भी विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिलीशा पसरीजा, महिका ग्रोवर, दिलीशा नरवार, शाम्भवी सिंह और तुषारिका शर्मा ने शिव स्तुति पर आकर्षक भाव प्रदर्शन किया तो उत्कर्ष शंकर मिश्र ने झपताल और त्रिताल में बहुत ही सुंदर नृत्य प्रदर्शन किया। उत्कर्ष ने सर्वप्रथम एक शिव स्तुति पर अभिनय करते हुए शिव की विभिन्न मुद्राओं का आकर्षक प्रदर्शन किया। उसके बाद झपताल और त्रिताल में उपज, लड़ी, थाट, आमद, तोड़े, टुकड़े और परणों सहित गत भाव आदि की भी आकर्षक प्रस्तुति की। आकर्षक पद संचालन, भ्रमरी और अभिनय के कारण उत्कर्ष खूब प्रशंसित हुए। इनके साथ तबले पर इनके पिता उदय शंकर मिश्र, गायन और पढंत पर इनकी गुरु रक्षा सिंह डेविड तथा हारमोनियम पर दिवाकर शर्मा ने

सहयोगपूर्ण संगति की।

रौनित चक्रवर्ती का त्रिताल में संपन्न स्वतंत्र तबला वादन भी खूब पसंद किया गया। रौनित ने अपने वादन के दौरान बनारस, दिल्ली, पंजाब और फर्रुखाबाद घराने की अनेक अच्छी रचनाओं का स्पष्ट और सुंदर वादन करके अपनी प्रतिभा, रियाज़ और शिक्षा का सुंदर परिचय दिया। उत्कर्ष शंकर मिश्र को नृत्य श्री तथा रौनित को तबला श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विदुषी वीणा पहाड़ी ने अपने भावपूर्ण गायन से मंच पर जैसे भक्ति संगीत की गंगा प्रवाहित कर दी। उनके भजनों ने सबके दिल को छुआ। तबले पर उस्ताद अख्तर हसन, हारमोनियम पर दामोदर लाल घोष एवं बांसुरी पर अनुराग रस्तोगी ने भी अपनी-अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करायी। विदुषी वीणा पहाड़ी, उस्ताद अख्तर हसन और दामोदर लाल घोष को संगीत रत्न सम्मान से पद्मश्री पंडित भजन सोपोरी ने सम्मानित किया। प्रथम दिन के कार्यक्रम का समापन गुरु रक्षा सिंह के मार्गदर्शन में तैयार एक सामूहिक नृत्य संरचना ताल चतुरंग से हुआ। युक्ता गोस्वामी, हर्षिता शर्मा, अंशिका श्रीवास्तव और वान्या सवारा ने रूपक, झपताल, एकताल और त्रिताल में नृत्य के तकनीकी पक्षों की सुंदर प्रस्तुति की। शुरुआत तुलसीदास कृत भजन श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन से हुआ। इसके बाद सभी नर्तकियों ने अपने-अपने तालों का काव्यात्मक परिचय देते हुए उसमें थाठ, आमद, टुकड़े परण, लड़ी आदि की आकर्षक प्रस्तुति की। पैरों से स्पष्ट कटते बोल, सुंदर अंग संचालन और अभिनय ने इस प्रस्तुति को उत्कृष्ट बना दिया। तालों का काव्यात्मक परिचय इनकी गुरु रक्षा सिंह द्वारा लिखित था जो एक प्रकार का नया प्रयोग था। तबले पर श्री उदय शंकर मिश्र, गायन और पढ़त पर गुरु रक्षा सिंह की संगत भी सूझ-बूझ युक्त थी। इन नर्तकियों को भी विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया।

दूसरे दिन की संगीत संध्या श्री पराग जैन के निर्देशन में

तैयार एक सामूहिक गायन से हुई। दिनेश कुमार, पूनम रानी और स्वाति निगम ने पराग जैन के निर्देशन में राग बिहाग में एक द्रुत ख्याल और तराना की आकर्षक प्रस्तुति की। द्रुत ख्याल सब सखियां मिली त्रिताल में निबद्ध था तो तराना द्रुत एकताल में। इसके बाद पंडित रामाश्रय झा रामरंग रचित एक राग माला की भी इन लोगों ने सुंदर प्रस्तुति की जिसमें 19 रागों का प्रयोग हुआ था। बोल थे... ये मन कल्याण.... यह मूलत: मां सरस्वती की प्रार्थना थी जिसमें शब्द के अनुसार राग बदलते थे। मनमोहन डोगरा की तबला संगत प्रशंसनीय थी। दीक्षिता चट्टोपाध्याय ने ताल धमार में कथक नृत्य की सुंदर प्रस्तुति की। इन सभी को विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

कृष्णा चक्रवर्ती ने राग हंसध्वनि में एक द्रुत ख्याल, एक भजन और एक नजरुल गीत की सुरीली प्रस्तुति की। कृष्णजी की आवाज सुरीली और भावपूर्ण है। तबले पर श्री उदय शंकर मिश्र और हारमोनियम पर श्री दामोदर लाल घोष ने उनका अच्छा साथ निभाया। कृष्णाजी को पद्मश्री शोभना नारायण ने संगीत रत्न सम्मान से सम्मानित किया। अमिष कंसल उभरते हुए तबला वादक हैं। इन्होंने रुद्र ताल 11 मात्रा में स्वतंत्र तबला वादन किया। विभिन्न प्रकार के टुकड़े, परण, कायदे, तिहाई फरमाइशी और कमाली चक्रदार सहित अनेक प्रकार की गतों का भी सुंदर वादन किया अमिष ने। इतने कठिन ताल में इतना सुंदर वादन प्रस्तुत करके अमिष ने अपनी शिक्षा और लगन का अच्छा परिचय दिया। अमिष को तबलाश्री सम्मान प्रदान किया गया। पराग जैन तेजी से उभरते हुए युवा गायक हैं। पंडित सारथी चटर्जी के सुशिष्य पराग ने इस शाम राग यमन की भावपूर्ण अवतारणा की। चंद्रसखि की सुंदर रचना की पराग ने भावविभोर कर देने वाली प्रस्तुति की। पराग काफी सुरीले हैं। उनकी तानें भी काफी तैयार हैं। इसके बाद पराग ने एक तराना की तेज तर्रार प्रस्तुति करके लोगों को चमत्कृत कर दिया। मनमोहन डोगरा की तबला संगति भी टक्कर की थी। दामोदर लाल घोष ने इनका हारमोनियम पर अच्छा साथ निभाया। पराग जैन और दामोदार लाल घोष को संगीत रत्न तथा मनमोहन डोगरा को तबलाश्री सम्मान से पद्मश्री शोभना नारायण ने सम्मानित किया।

बाल कलाकार ऋतोजा चौधुरी ने रास नृत्य की अति आकर्षक प्रस्तुति की। उनकी आकर्षक भाव भंगिमाओं ने लोगों को भावविभोर कर दिया। ऋतोजा को दर्शकों का भरपूर आशीर्वाद मिला। इसके बाद संगीत अकादमी गुरुग्राम की अस्मिता मिश्र ने अपनी तीन शिष्याओं शाम्भवी भट्ट, ईशानी सिंह एवं जैनिफर सिंह के साथ मंच पर एक शिव वंदना जय शिवशंकर जय गंगा घर के साथ अभिनय करते हुए मंच पर प्रवेश किया। शिव की विभिन्न मुद्राओं और प्रसंगों का इसमें सुंदर चित्रण किया इन चारों नर्तकियों ने। इसके बाद अस्मिता मिश्र ने शिव के अर्ध नारीश्वर रूप की एकल प्रस्तुति की। इसमें शिव और शक्ति के युगल रूप का भावपूर्ण चित्रण था। पंडित बिरजू महाराज जी द्वारा लिखित रचना थी- अर्धांग भस्म भभूत सोहे अर्ध मोहिनी रूप है। नटराज और नटवर शीर्षक से प्रस्तुत इस प्रस्तुति का समापन कृष्ण के रास नृत्य से हुआ। बोल थे- नटवर नागर रास रसिकदर। इस प्रस्तुति में चारों नर्तकियों ने अलग-अलग प्रसंगों पर एकल नृत्य भी किया और समापन में डंडिया नृत्य की सामूहिक प्रस्तुति भी। अस्मिता को नृत्य रत्न सम्मान और उनकी शिष्याओं को विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार से सुविख्यात नृत्यांगना पद्मश्री विदुषी शोभना नारायण ने सम्मानित किया।

बनारस घराने के तबला संस्थापक पंडित राम सहाय के वंशज पंडित दीपक सहाय का स्वतंत्र तबला वादन इस आयोजन की उपलब्धि रहा। दीपक ने अपने एकल वादन में बनारस घराने के उठान, कायदे, बांट, रेले आदि के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के टुकड़े, परणों, गत और फर्द आदि की भी सुंदर प्रस्तुति की। पंडित भैरो सहाय, पंडित अनोखेलाल, पंडित किशन महाराज और पंडित सामता प्रसाद उर्फ गुदई महाराज की अनेक रचनाओं का सुंदर वादन करके प्रभावित किया। उनके साथ हारमोनियम पर दामोदर लाल घोष ने उनका अच्छा साथ निभाया। शोभना नारायण ने दीपक सहाय को तबला भूषण सम्मान से सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन सम और संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र संगीत अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पंडित विजयशंकर मिश्र ने किया तथा अतिथियों का स्वागत-सम्मान लोक कला मंच के सीनियर मैनेजर श्री उदयबीर सिंह एवं संगीत अकादमी की मैनेजर नीलम मिश्रा ने किया। इस समारोह में विदुषी शोभना नारायण को नृत्य शिरोमणि, ममता महाराज को नृत्य मणि, पं. भोलानाथ मिश्रा को संगीत मणि सम्मान समर्पित करते हुए श्री हरिशंकर राढ़ी, कैप्टन शिखर जौहरी, डॉ. योगेश दुबे, सुश्री रंगम्माजी सहित इस लेखिका का भी अभिनंदन किया गया।

रिपोर्ट - रिपोर्ट रेणुका आर्या

■

आयोजन

ऋषिकेश में गंगा पर अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी

व्यंजना आर्ट एंड कल्चर सोसायटी (प्रयागराज) तथा गढ़वाल मंडल विकास निगम (उत्तराखंड) के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों ऋषिकेश स्थित मुनि की रेति पर, गंगा तट पर एक दो दिवसीय अन्तर्विषयी संगोष्ठी 'सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में गंगा' विषय पर सफलता एवं भव्यतापूर्वक संपन्न हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन उत्तराखंड के विधानसभा अध्यक्ष प्रेमचंद्र अग्रवाल, संत श्रीयुत श्रीवत्स गोस्वामी, नृत्यांगना पद्मभूषण विदुषी उमा शर्मा और उत्तराखंड के नगर पालिका अध्यक्ष रोशन रतूड़ी सहित संगोष्ठी की संयोजिका डॉ. मधुरानी शुक्ला ने दीप प्रज्वलित कर किया। श्री प्रेमचंद अग्रवाल ने गंगा की सफाई के लिये किये जा रहे सरकारी प्रयासों पर प्रकाश डाला। श्रीयुत श्रीवत्स गोस्वामी ने धार्मिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक दृष्टि से गंगाजल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि 350 वर्षों तक रखे जाने के बाद भी वैज्ञानिकों ने गंगाजल को पीने योग्य बताया था। रोशन रतूड़ी ने उत्तराखंड सरकार और नगर पालिका द्वारा किये जा रहे उन प्रयासों पर प्रकाश डाला जो गंगा को व्यावसायिक दृष्टि से समृद्ध बनाने के लिये किये जा रहे हैं। विदुषी उमा शर्मा ने गंगा के सांस्कृतिक, सांगीतिक स्वरूप को रेखांकित किया। इस अवसर पर श्वेता जयसवाल ने कुछ भजनों की सुरीली प्रस्तुति की। सुभाष काति दास की तबला संगति अच्छी रही।

इस आयोजन में अलग-अलग वक्ताओं ने गंगा को अलग-अलग दृष्टि से देखते हुए उसके अलग-अलग पक्षों पर अपना-अपना पक्ष रखा। डॉ. राजाराम पाठक ने संस्कृत ग्रंथों के आधार पर गंगा के महात्म्य का वर्णन किया तो कश्मीर के सुप्रसिद्ध लेखक और कवि डॉ. अग्निशेखर ने कश्मीरी लोकविमर्श में गंगा की विद्वतापूर्ण चर्चा करते हुए गंगा और कश्मीरियत के प्रगाढ़ संबंधों पर प्रकाश डाला। कश्मीर से कन्याकुमारी तक गंगा की चार बार पैदल यात्रा कर चुके अभय मिश्र ने पर्यावरण की दृष्टि से तो देखा ही, गंगा तट पर बसे गांव आदि के विषय में भी विस्तार से बताया। डॉ. राजेश मिश्र का शोधपूर्ण व्याख्यान इस सत्र की उपलब्धि रहा। उन्होंने गंगा के मिजाज को समझने का सुझाव देते हुए गंगा सहित सभी नदियों के उपयोग के सिलसिले में बने 14 प्राचीन नियमों का उल्लेख करते हुए गंगा को निराकार की नीराकृति और जीव को शिव से मिलाने वाले सेतु के रूप में विद्वतापूर्ण शैली में रेखांकित किया। इस सत्र की अध्यक्षता कर रही डॉ. मौली कौशल ने गंगा को आस्था की दृष्टि से देखते हुए इसे पर्यावरण से जोड़ा।

संध्याकालीन सत्र में युवा गायिका तनुश्री कश्यप ने राग रागेश्री में दो स्वरचित रचनायें प्रस्तुति की। पहली विलंबित एकताल वो थी- हे प्रणाम गंगा मैया तो दूसरी द्रुत एकताल में- जयजय गंगा मैया। अपने भावपूर्ण गायन के लिये तनुश्री कश्यप काफी प्रशंसित हुई। दिनेश कश्यप की तबला संगत भी प्रशंसनीय रही। चेन्नई से आई शान्ति महेश ने त्यागराज सहित कुछ अन्य संगीतकारों द्वारा रचित भावपूर्ण कृतियों के माध्यम से संगीत की कर्णाटकीय शैली में गंगा को स्मरण किया। प्रो. डॉ. राम शंकर ने अपने गुरु पंडित रामाश्रय झा रामरंग लिखित संगीत रामायण की विभिन्न रचनाओं और प्रसंगों के आधार पर गंगा की महानता को सिद्ध किया। उनकी अलग-अलग रचनायें अलग-अलग रागों और तालों में निबद्ध थीं। सुभाष कांति दास की तबला संगति काफी अच्छी रही। तबला संगति सुभाष कांति दास ने की। राधा न्यूपाने और संजय वर्मा ने सरोद और गिटार की आकर्षक जुगलबंदी प्रस्तुति की। सुमित सिंह पदम ने सितार पर राग यमन की सुंदर अवतारण की। उनकी दोनों रचनायें क्रमश: 9 मात्रा और 16 मात्रा में निबद्ध थी। मॉम गांगुली ने नृत्य में गंगा विषयक प्रसंगों का वर्णन किया। रेणु शर्मा ने अपने नृत्य के माध्यम से गंगा और शंकर के प्रसंगों को प्रस्तुत किया। रक्षा सिंह डेविड, अस्मिता मिश्रा और शिफा डेविड ने 4 अलग-अलग गीतों के माध्यम से गंगा के विभिन्न प्रसंगों को प्रस्तुत किया। सर्वप्रथम रक्षा ने गंगा स्त्रोत को आकर्षक भाव भंगिमाओं के माध्यम से मंच पर प्रस्तत किया। उसके बाद अस्मिता मिश्रा ने जय-जय जय मातु गंगे के माध्यम से गंगा के विभिन्न रूपों और प्रसंगों को मंच पर जीवंत किया। शिफा डेविड ने नमामि गंगे गीत के माध्यम से गंगा सफाई अभियान का चित्रण किया। अंतिम प्रस्तुति

गंगा जगत तारण को आई को तीनों नर्तकियों ने सामूहिक रूप से प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुति सर्वाधिक सराही गयी। निर्देशन रक्षा सिंह डेविड का था। प्रथम दिन का समापन विदुषी कविता द्विवेदी के भावपूर्ण नृत्य से हुआ। उन्होंने देवी सुरेश्वरी भगवती गंगे पर ओडिशी नृत्य शैली में भावपूर्ण अभिनय करके लोगों के दिलों को छू लिया। कविता द्विवेदी के सम्मोहक अभिनय ने लोगों को रसप्लावित कर दिया।

अगले दिन के प्रात: कालीन सत्र के मुख्य अतिथि मंत्री कृष्ण कुमार सिंघल थे जबकि अध्यक्षता का दायित्व इन पंक्तियों के लेखक विजय शंकर मिश्र को सौंपा गया। कार्यक्रम का संचालन नृत्यांगना अस्मिता मिश्र ने किया। माननीय मंत्री महोदय ने ऋषिकेश में अपनी तरह की आयोजित इस पहली संगोष्ठी में लोगों का स्वागत करते हुए गंगा की पवित्रता की चर्चा करते हुए लोगों से भी सहयोग के लिए अपील किया ताकि उसकी स्वच्छता बरकरार रहे। स्वामी अवधेशानन्द ने गंगा नदी और संगीत को जोड़ते हुए आध्यात्मिक दृष्टि से इस पर प्रकाश डाला। कैप्टन यशोवर्धन शर्मा ने गंगा नदी को प्रथम श्रेणी का राष्ट्रीय जल मार्ग बताते हुए सामान लाने ले जाने के लिये इसके उपयोग की वकालत की। डॉ. निशा शर्मा ने विभिन्न कवियों के काव्य के माध्यम से गंगा की महारता को रेखांकित किया। डॉ. राम गोपाल ने विभिन्न रामायणों के अलग-अलग प्रसंगों के माध्यम से गंगा के महत्व पर प्रकाश डाला। शुभा मालवीय ने रामायण में वर्णित विभिन्न प्रसंगों को आधुनिक सन्दर्भों से जोड़ा।

डॉ. अंजलिका शर्मा ने हिंदी फिल्मी गीतों में गंगा विषय पर अपना पत्र पढ़ा,जबकि डॉ. मुकेश मारु ने गंगा के धार्मिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। रीना दत्ता ने विद्यापति के गीतों में गंगा विषय पर अपना पत्र पढ़ा जबकि डॉ. हर्षित बैयर ने फिल्म संगीत में गंगा गीतों में प्रयुक्त रागों पर प्रकाश डाला। डॉ. राजदेव महतो ने मिथिला और गंगा विषय पर बोलते हुए छठ पूजा आदि के विषय में बताया। निशा यादव ने तुलसीदास के काव्य में वर्णित गंगा की महिमा के विषय में बताया तो रेणु शर्मा ने कथक नृत्य में शिव के महत्व को रेखांकित करते हुए शिव के माध्यम से गंगा को याद किया। इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे इन पंक्तियों के लेखक ने गौमुख से निकलकर मैदानी क्षेत्रों में गंगा के पहुंचने की यात्रा को तबले और पखावज के बोलों के माध्यम से स्पष्ट किया। धन्यवाद ज्ञापन करती हुई संयोजिका डॉ. मधुरानी शुक्ला ने इन सभी मुद्दों और पत्रों के प्रकाशन का वायदा किया।

रिपोर्ट - पंडित विजयशंकर मिश्र

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेंसी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : **वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ₹ 120/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।**

-संपादक

समवेत

मध्य प्रदेश पर्यटन को 10 राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया

मध्य प्रदेश पर्यटन को पर्यटन की श्रेणी में किए गए विभिन्न कार्यों के लिए पिछले कई वर्षों की तरह इस वर्ष भी विभिन्न श्रेणियों में कुल 10 राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। यह राष्ट्रीय पुरस्कार भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम वैंकैया नायडू द्वारा केन्द्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल तथा संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के महासचिव श्री झुरब पोलीकैश की उपस्थिति में 27 सितम्बर 2019 (विश्व पर्यटन दिवस) पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार समारोह 2019 में दिया गया। मध्य प्रदेश पर्यटन को यह पुरस्कार निम्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दिया गया। बेस्ट एडवेन्चर स्टेट (सर्वश्रेष्ठ साहसिक राज्य)। विदेशी भाषा में प्रकाशन में उत्कृष्टता, चाइनीस ब्रोशर। सर्वश्रेष्ठ पर्यटन संवर्धन प्रचार सामग्री, लोनली प्लैनेट पॉकेट गाइड। सर्वश्रेष्ठ स्मारक-बौद्ध स्मारक, सांची। बेस्ट वाइल्ड लाइफ गाइड, मनोज कुमार, पन्ना। सर्वश्रेष्ठ हेरिटेज सिटी- ओरछा। सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डा- इंदौर। स्वच्छता पुरस्कार- इंदौर। सर्वश्रेष्ठ पर्यटक परिवहन ऑपरेटर, रेडिएन्ट ट्रेवल। इस अवसर पर, श्री फैज़ अहमद किदवई, सचिव, मध्य प्रदेश शासन, पर्यटन विभाग/प्रबंधन संचालक, मध्य प्रदेश पर्यटन ने कहा- ''यह हमारे लिए अत्यंत ही गौरव का विषय है कि मध्य प्रदेश पर्यटन को इस बार भी विभिन्न श्रेणियों में कुल 10 राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, पर्यटन विभाग के माननीय मंत्री श्री सुरेन्द्र सिंह बघेल के मार्गदर्शन में मध्य प्रदेश पर्यटन सदैव ही पर्यटन के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अथक प्रयास करता रहता है''। मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों ने कहा कि ''हम विभिन्न रूपों में पर्यटन उद्योग के योगदान की बहुत सराहना करते हैं और इन पुरस्कारों के साथ आतिथ्य और सेवाओं के क्षेत्र में नए राष्ट्रीय मानकों को स्थापित करेंगे। पर्यटन बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों, टूर ऑपरेटरों, गंतव्य प्रबंधन कंपनियों, हितधारकों के साथ-साथ मध्य प्रदेश में आने वाले लाखें पर्यटकों की उपस्थिति में, इन पुरस्कारों से सम्मानित

होना अत्यंत ही गौरव का विषय है''।

मध्य प्रदेश पर्यटन पिछले कई दशकों से पर्यटन के लिए मध्यप्रदेश में आने वाले पर्यटकों को उच्च स्तरीय सेवाएं व सुविधाएं प्रदान करता आ रहा है। मध्यप्रदेश भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य है जिसे ''भारत का हृदय'' भी कहा जाता है। हाल ही में मध्यप्रदेश के बाघों की सर्वाधिक संख्या होने की वजह से ''टाइगर स्टेट ऑफ इंडिया'' घोषित किया गया है। इस राज्य का इतिहास, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और यहाँ के लोग इसे भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थलों में से एक बनाते हैं। बांधवगढ़ नेशनल पार्क में टाइगर देखने से लेकर खजुराहो के मंदिर की मूर्तियों में वास्तविक भारत को खोजा जा सकता है। मध्यप्रदेश की स्थलाकृति राज्य की केंद्रीय स्थिति तथा साथ ही साथ समृद्ध प्राकृतिक विविधता इसे संपूर्ण पर्यटन गंतव्य बनाते हैं। उच्च पर्वत श्रेणियाँ, नदियों और झीलों से युक्त हरे भरे जंगल प्रकृति के विभिन्न तत्वों के बीच एक सुंदर सामंजस्य प्रदान करते हैं। विभिन्न प्रकार के पशु पक्षी और पौधे तथा यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता मध्यप्रदेश के पर्यटन की विशेषता है। साथ ही साथ यहाँ का इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर और आदिवासी संस्कृति मध्य प्रदेश के पर्यटन का एक महत्वपूर्ण भाग है।

रिपोर्ट -सुमित चौहान

'हस्ताक्षर है पिता' पुस्तक का लोकार्पण

डॉ. लता अग्रवाल के 1111 कविताओं के वृहद संग्रह 'हस्ताक्षर है पिता' का लोकार्पण समारोह में कार्यक्रम की अध्यक्षता पद्मश्री प्रो. रमेशचंद्र शाह ने की। डॉ. जवाहर कर्नावट, श्री महेन्द्र गगन और लक्ष्मीनारायण पयोधि ने कृति पर अपनी प्रतिक्रियाए व्यक्त की। वंदे मातरम संस्था द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन श्री हेमंत कपूर ने किया शहर के साहित्यकार बड़ी संख्या में मौजूद थे।

''शाजापुर इतिहास'' पुस्तक का विमोचन समारोह

लोकभाषा परिषद् शुजालपुर द्वारा 13 अक्टूबर शरद पूर्णिमा को शाजापुर के एक निजी होटल में इतिहासकार ललित शर्मा द्वारा लिखित एवं लोक संस्कृतिविद् डॉ. वर्षा नालमें द्वारा सम्पादित पुस्तक ''शाजापुर जिला : इतिहास और पर्यटन'' का विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि ख्यातनाम कला इतिहासकार नर्मदा प्रसाद उपाध्याय (इन्दौर) ने कहा कि शाजापुर की गौरव गरिमा से युक्त यह पुस्तक मालवा और हाड़ौती के अन्तर सम्बन्धों को स्थापित करने के साथ ही अनेक अन्धकारमय ऐतिहासिक पक्षों को उद्घाटित करेगी। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में स्थानीय इतिहास और कला के वैशिष्ट्य को महत्वपूर्ण माना गया है जिसके अन्तर्गत मालवा में यह पुस्तक एक मानक ग्रन्थ है। इस अवसर पर उन्होंने कश्मीर क्षेत्र के इतिहास पर लिखे प्राचीन ग्रन्थ 'कल्हण' की 'राजतरंगिणी' की चर्चा की। उन्होंने कहा कि मालवा में यह पहली पुस्तक है जो शाजापुर जिले के पुरातत्व, इतिहास एवं संस्कृति के समग्र उपादानों पर केन्द्रित है। समारोह की अध्यक्ष शिक्षा मनोवैज्ञानिक डॉ. प्रेम छाबड़ा (उज्जैन) ने कहा कि उन्हें ख़ासकर इस बात की हार्दिक प्रसन्ता है कि उनके दोनों शिष्यों ने मालवा के इस अछूते जिले तथा इसके पर्यटन स्थलों के वैशिष्ट्य को प्रमाणों के साथ उजागर किया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक मालवा के इतिहास के साथ-साथ विद्यालयी शिक्षा स्तर पर भी बहुत महत्वपूर्ण है तथा इसे विश्वविद्यालय शोध का आधार बनाया जा सकता है।

विशिष्ट अतिथि प्राच्य पुरातत्वविद् डॉ. कैलाशचन्द पाण्डेय (मन्दसौर) ने कहा कि इस पुस्तक का सर्वाधिक वैशिष्ट्य यह भी है कि इसमें विवेच्य जिले को मध्यकाल से पूर्व परमारकाल से स्थापित किया गया है। इस आधार पर यह माना जाना चाहिए कि लेखक ने इसमें अपने गुरुवर्य पुरातत्ववेत्ता डॉ. वाकणकर की कला साधना को आगे बढ़ाने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि यहाँ की अचर्चित मूर्तिकला, मुद्राएं तथा शिलालेखीय परम्परा का पहली बार पुरातत्व सम्मत विवरण एक मात्र इस पुस्तक में किया गया है जो बेहद प्रभावी है। विशिष्ट अतिथि शाजापुर के जिला शिक्षा अधिकारी उदय उपेन्द्र भिंडे ने कहा कि यह पुस्तक इस जिले के विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु अत्यधिक उपयोगी है जिसमें वे अपना स्थानीय इतिहास और संस्कृति जान सकेंगे। समारोह में लेखक ललित शर्मा ने पुस्तक के अध्यायों की सविस्तृत भूमिका प्रस्तुत की तथा उन्होंने इस क्षेत्र में खोजे गये नवीन पुरास्थलों की जानकारी दी। समारोह में लोक संस्कृतिविद् डॉ. जगदीश भावसार, साहित्यकार दुर्गाप्रसाद झाला, प्रो. एम.आर. नालमे, दिलीप सिंह झाला, विशाल सिंह झाला एवं श्रीमती सौदामिनी सिंह झाला का श्रीनाथद्वारा का ओपरना, शाल, पुष्पाहार, पहनाकर एवं श्रीफल तथा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

अतिथियों का स्वागत परिषद् के संस्थापक बंशीधर बन्धु, जुबीन नालमे, श्रीमती गोपी मिहानी, रामप्रसाद सहज, तृप्ति नालमे, सुरेश अरोड़ा ने किया। समारोह का संचालन डॉ. वर्षा नालमें ने एवं आभार श्रीमती गायत्री शर्मा ने प्रदत्त किया। समारोह में शहर के बुद्धिजीवी एवं पत्रकार भी बड़ी संख्या में मौजूद थे। इस अवसर पर भोपाल से प्रकाशित प्रसिद्ध कला समय पत्रिका के 100वें अंक का भव्य लोकार्पण कला इतिहासकार नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, डॉ. प्रेम छाबड़ा, डॉ. कैलाशचन्द पाण्डेय, इतिहासकार ललित शर्मा व लोक संस्कृतिविद् डॉ. वर्षा नालमे ने किया तथा अंक का वितरण उपस्थित बुद्धिजीवियों में किया गया। इस अवसर पर संपादक भंवरलाल श्रीवास द्वारा प्रेषित शुभकामना संदेश भी प्रस्तुत किया गया।

''बघेरा इतिहास'' पुस्तक का विमोचन सम्पन्न

सनातन प्रकाशन जयपुर द्वारा शरद पूर्णिमा को आयोजित पुस्तक विमोचन समारोह में केकड़ी (अजमेर) की इतिहासविद् श्रीमती पुष्पा शर्मा की कृति ''बघेरा-इतिहास पुरातत्व और पर्यटन'' का विमोचन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि साहित्यकार डॉ. सांवर सिंह यादव ने कहा कि बघेरा का इतिहास क्षेत्रीय इतिहास की ऐसी अनमोल धरोहर है जिससे अजमेर, पुष्कर और टोंक भू-भाग के मध्ययुगीन इतिहास के कई अन्धकारमय पक्ष उजागर होंगे। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय इतिहास, संस्कृति और कला से ही प्रदेश और देश के इतिहास को समृद्धि मिलती है।

इस अवसर पर इतिहासविद् प्रधानाचार्य चन्द्रप्रकाश लढ्ढा ने कहा कि बघेरा के पुरातत्व एवं कला जगत से सजी यह कृति राजस्थान की सारस्वत संस्कृति के भण्डार की नायब कृति है। इस अवसर पर लेखिका पुष्पा शर्मा ने कृति के अध्यायों की विस्तृत भूमिका प्रस्तुत कर प्रश्नकर्त्ताओं की जिज्ञासा का प्रमाण सहित निराकरण किया। उन्होंने कृति में समाहित अनेक मूर्ति शिल्प, लेख एवं मन्दिर स्थापत्य का विवरण भी प्रस्तुत किया। समारोह में जयपुर, अजमेर के अनेक साहित्यकारों के साथ शिक्षाविद् बृजकिशोर शर्मा, जयप्रकाश शर्मा, इतिहासविद् डॉ. उर्मिला शर्मा, पूर्व क्रयाधिकारी बांगड़ ग्रुप जुगलकिशोर शर्मा, श्रीमती सुमन शर्मा, सहायक प्रबन्ध कमलकिशोर शर्मा (मुहाना ग्रुप) लेखाकार कृष्ण किशोर शर्मा, दीपक जोशी, हरिकिशन गौड़, सुश्री अदिती गौड़, अक्षिता गौड़, भावना गौड़, स्वप्निल शर्मा सहित तितिक्षा शर्मा भी मौजूद थे। समारोह में लेखिका

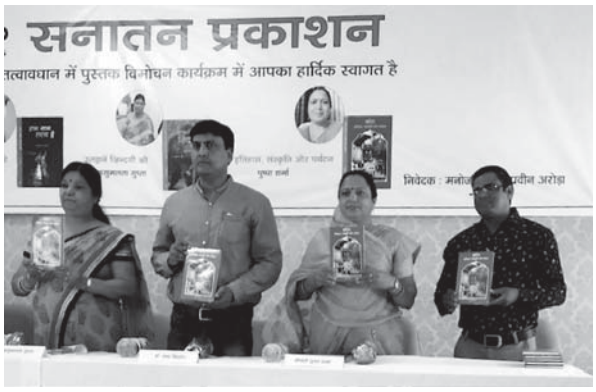

का पर्यटन विकास समिति झालावाड़ की ओर से श्रीनाथद्वाराजी का ओपरना पहनाकर एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। आभार सनातन प्रकाशन के प्रबन्धक मनोज अरोड़ा ने ज्ञापित किया।

गांधीजी की राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. मुक्ति पाराशर की चित्र प्रदर्शनी

उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय के वाग्देवी भवन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देशभर के विशिष्ठ साहित्यकार एवं चिंतक उपस्थित हुए।

संगोष्ठी में कोटा (राजस्थान) की जानी-मानी कलाविद् डॉ. मुक्ति पाराशर के संयोजन में ''एक ब्रश राष्ट्र के नाम'' चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बालकृष्ण शर्मा ने किया। इस अवसर पर डॉ. पाराशर ने अपनी टीम के साथ सन् 1857 से 1947 ई. तक के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के शहीदों के लगभग 50 चित्रों को प्रदर्शित किया। ये सभी चित्र हस्तनिर्मित थे जिनमें झांसी की रानी, तांत्या टोपे, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह आदि के चित्रों के साथ अग्रेंजी राज में भारतीयों के त्याग, बलिदान का सुन्दर चित्रण उकेरा गया। प्रदर्शनी को देश के विभिन्न प्रान्तों से आये साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों एवं विश्वविद्यालयी छात्र-छात्राओं ने बड़े उत्साह से देखा तथा प्रश्न पूछे। इस अवसर पर डॉ. मुक्ति पाराशर ने बताया कि प्रदर्शनी का उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी के मन मस्तिष्क से विलुप्त होती जा रही देश के क्रांतिवीरों की छवि को पुन: स्थापित करना है। अत: ऐसी परिस्थिति में राष्टवाद को जाग्रत करने हेतु ऐसी प्रदर्शनी आयोजित की गई है। ज्ञातव्य कि डॉ. पाराशर ऐसी प्रदर्शनी देश के कई राज्यों के महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में आयोजित कर चुकी है। इसमें 8 वर्ष से लेकर 60 वर्ष तक के कलाकारों के चित्र शामिल है।

युगेश शर्मा की कृति ''गाँधी पथ'' का लोकार्पण

गाँधी भवन में कृति 'गाँधी पथ' का लोकार्पण गांधीवादी विचारक डॉ. एस.एन. सुब्बाराव द्वारा सम्पन्न हुआ। 12 नवम्बर 2019 को गांधी भवन में एक समारोह में बा-बापू के 150 वें जयंती वर्ष के अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार श्री युगेश शर्मा की कृति का लोकार्पण मोहनिया सभागार में हुआ। मुख्य अतिथि श्री एस.एन. सुब्बाराव, अध्यक्ष श्री रमाकांत दुबे एवं मुख्य वक्ता श्री कैलाशचंद पंत, विशिष्ट अतिथि न्यायमूर्ति एन.के. मोदी की गरिमामय उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मीनारायण पयोधि

द्वारा तथा आभार वरिष्ठ बाल कथाकार श्री महेश सक्सेना ने किया। समारोह में शहर के लगभग सभी साहित्यकार, गणमान्य नागरिक, श्रोता उपस्थित थे।

उत्सव महाकालेश्वर रजत जयन्ती समारोह
पं. सुरेश तातेड़ का अमृत महोत्सव

भारतीय सनातन सांस्कृतिक मंदिर महोत्सव परम्परा पर एकाग्र 'उत्सव महाकालेश्वर' का रजत जयंती समारोह रविवार 20 अक्टूबर 2019 की संध्या 6.30 बजे से श्री महाकाल प्रवचन हाल में सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के अधिष्ठाता भूतभावन भगवान श्री महाकालेश्वर को समर्पित कर मधुवन और उज्जयिनी का कला समृद्ध, सौन्दर्य समृद्ध और संस्कार समृद्ध समाजजन पुण्य की अनुभूति से अभिभूत है। इस पावन-उत्सवी आनंद में देश के शीर्ष भजन गायक पद्मश्री अनूप जलोटा मुख्य अतिथि- कलाकार। मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मंत्री माननीय श्री पारसचन्द्र जैन, पूर्व कुलपति एवं संभायुक्त, संस्कृतिविद् मान. डॉ. मोहन गुप्त, आतिथ्य में भारतीय संगीत, साहित्य जगत में सतत 6 दशकों से एक सफल आयोजक के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित अभिनव कला परिषद् और मधुवन भोपाल के संस्थापक-निदेशक उत्सवधर्मी पं. सुरेश तातेड़ के गौरवशाली सानंद 75 बसंत वर्ष पूर्ण करने पर उनका गरिमामय अमृत महोत्सव आयोजित किया गया। साधना की भस्म और आस्था के बिल्वपत्र के साथ संगीत नृत्य महोत्सव में भरतनाट्यम नृत्यांगना यशवर्धिनी-राजवर्धिनी, डॉ. संतोष देसाई, श्रीमती कीर्ति सूद, श्रीप्रकाश पारनेरकर एवं श्री हरि संगीत कला केन्द्र के नर्तकवृन्द द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के सूत्रधार, रंगकर्मी- उद्घोषक कमलेश जैमिनी ने की।

मीरा के भजन पर मीरा नृत्य मीरा और मीरा पद, चित्र की त्रिवेणी धारा इस समारोह की विशेष प्रस्तुति रही। मधुबन संस्था की ओर से अमृत कलश देकर तातेड़ जी का स्वागत किया तथा उज्जैन ने तातेड़ जी को पगड़ी शॉल श्रीफल, नटराज प्रतिभा तथा प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मान किया।

'बंशीधर बंधु को साहित्य कला रत्न सम्मान'

29 अक्टूबर 2019 को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था कला मंदिर के अखिल भारतीय वार्षिक सम्मान। अलंकरण समारोह मानस भवन में सम्पन्न हुआ। समारोह के अध्यक्ष डॉ. उमेश सिंह, विशिष्ट अतिथि श्री रमाकांत दुबे, सारस्वत अतिथि श्री कैलाश चंद्र पंत डॉ. गौरीशंकर शर्मा 'गौरीश' एवं श्री देवीशरण जी उपस्थित थे। विमल भंडारी द्वारा संचालन किया गया। सम्मानित साहित्यकारों में कुलतार कौर, के.जी. त्रिवेदी, उल्लास तैलंग को शिखर सम्मान, पवैया स्मृति साहित्य कला रत्न सम्मान, सीमाहरि शर्मा, राज गोस्वामी, डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, अनीता सिंह चौहान, रामनारायण प्रदीप स्मृति साहित्य कला रत्न सम्मान शोध, आलेख के लिये बंशीधर बंधु शुजालपुर मंडी को दिया गया तथा कौशल्या गुप्ता, सम्मान सुमन ओबेराय, सुषमा मिश्रा को नंद किशोर शर्मा स्मृति सम्मान दिया गया। और अलग-अलग सम्मानों से सम्मानित, कमल जैन, आशीष श्रीवास्तव, पूर्णिमा चतुर्वेदी, अशोक व्यास, दामिनी खरे, मोहन तिवारी को भी सम्मानित किया गया।

मधु प्रसाद को गीत सम्मान पुरस्कार

हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद की ओर से प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष 2019 में वार्षिक समारोह, रविवार दिनांक 6 अक्टूबर 2019 को सरदार वल्लभ भाई पटेल स्मृति भवन, शाही बाग अहमदाबाद में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष डॉ. चंद्रकांत मेहता द्वारा की गई। मुख्य अतिथि गुजरात राज्य के पूर्व मुख्य सचिव श्री पी.के. लहरी तथा विशेष अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं गुजरात विश्वकोश के प्रधान संपादक पद्मश्री डॉ. कुमार पाल देसाई की गरिमामय उपस्थिति रही। हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में परिषद द्वारा आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को रजत पदक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। अन्य वरिष्ठ साहित्यकारों को भी उनकी सारस्वत साधना के लिए पुरस्कृत किया गया। इस वर्ष श्रीमती मधु प्रसाद को उनकी काव्यकृति 'हर सिंगार! तुम झरते रहना' पर डॉ. रामेश्वर लाल खण्डेवाल 'तरुण' अखिल भारतीय काव्य पुरस्कार प्रदान किया गया। श्रीमती मधु प्रसाद का शाल, पुष्पगुच्छ, उपहार प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार राशि ग्यारह हज़ार प्रदान कर सम्मान किया गया। 'अदबी उड़ान' का चौथा राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान समारोह नेहरू हास्टल उदयपुर के तिलक सभागार में सम्पन्न हुआ। इसमें देश भर से आए 23 साहित्यकारों का सम्मान किया गया। श्रीमती मधु प्रसाद को 'गीत सम्मान पुरस्कार', पुष्प हार सुन्दर राजस्थानी पगड़ी, शाल, प्रशस्ति पत्र एवं उपहार राशि प्रदान कर किया गया। मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाब चंद कटारिया विशिष्ट अतिथि ग्रामीण विधायक श्री फूल सिंह मीणा एवं समारोह की अध्यक्षता मेयर श्री चन्द्रसिंह कोठारी ने की। कार्यक्रम में 'अदबी उड़ान' के गीत विशेषांक का विमोचन भी किया गया।

अठारह जिल्दों में भारत की हिन्दी कहानियों का एक सम्यक् कोश

कथादेश

भारत के हिन्दी कथाकारों पर केन्द्रित कथाकोश

'कथादेश' प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें

आईसेक्ट पब्लिकेशन
25-ए, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, जोन-1
भोपाल-462011
फोन : 0755-4923952
Email : aisectpublications@aisect.org

आईसेक्ट लिमिटेड
स्कोप कैम्पस, एनएच-12, होशंगाबाद रोड
भोपाल-462047
फोन : 0755-2499657, 3245037

'कथादेश' के सम्पूर्ण सेट का मूल्य 17, 820 रु. है।
जिस पर निर्धारित छूट देय होगी।
डाक से मंगाने पर डाक खर्च अलग से देय होगा।

प्रधान संपादक : संतोष चौबे

आईसेक्ट पब्लिकेशन

गुरूनानक देव साहब के
550वें जन्मोत्सव पर

कलासमय

का आगामी विशेषांक
दिसम्बर 2019-जनवरी 2020
गुरूनानक देव साहब के समकालीन भक्ति आंदोलन तथा संत और गुरू ग्रंथ साहब के संगीत पक्ष और उसके राग-रागिनियों सहित संतों के भक्ति पदों और गुरूनानक देव साहब से गुरू गोविंद सिंह साहब तक दसों गुरूओं पर विशेष सामग्री इस अंक में प्रकाशित की जावेगी।
इस हेतु आलेख, छायाचित्र, संस्मरण आदि आमंत्रित है।

-सम्पादक

आपके पत्र

पत्रिका के बहाने

कला समय के 100वे अंक की प्रतिक्रिया

कला केन्द्रित पत्रिकाओं के अभाव के इस दौर में कोई कला पत्रिका अगर निरंतर बाईस वर्षों से प्रकाशित होते हुए अपना सौंवाँ अंक प्रकाशित कर रही हो तो निश्चित ही यह न सिर्फ एक महत्वपूर्ण घटना है वरन यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।। इस पत्रिका का नाम है ''कला समय''। यहां यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि शासकीय स्तर पर छप रही कला पत्रिकाएं भी जहां अनियंमित होकर बंद हो रही हो वहां निजी स्तर और संसाधनों से ''कला समय'' का निरंतर प्रकाशित होते हुए सौंवाँ अंक निकालना निश्चित ही एक अभूतपूर्व उपलब्धि है। जिसके लिये संपादक भंवरलाल श्रीवास और उनके सहयोगियों के कला समर्पण की जितनी भी तारीफ की जाए कम है। ''बुराई पर अच्छाई की विजय के पर्व दशहरे की आप सब को शुभकामनाओं के साथ ही विध्वंस के खिलाफ रचनात्मकता का शंख फूंकती पत्रिका 'कला समय' को बधाइयाँ!'' इस ऐतिहासिक अंक के पहले व अंतिम मुखपृष्ठ पर प्रकाशित मेरी कलाकृतियां साभार आपके लिए....

- संदीप राशिनकर

अंक अगस्त-सितम्बर 2019 कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका 'कला समय का 100 वां अंक है। 1998 से लगातार प्रकाशित हो रही यह पत्रिका साहित्य के साथ-साथ विभिन्न कलाओं पर भी महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित करती आ रही है। इसकी यह विशेषता इसे अन्य पत्रिकाओं से अलग करती है। 100 वां अंक संपादक भँवरलाल श्रीवास के सम्पादकीय से आरम्भ होता है, जो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के माध्यम से बताता है कि 'मनुष्य के पास भाषा से भी पूर्व संगीत था'। साथ ही सम्पादकीय अपने 100 अंकों के सफर पर भी एक सरसरी नज़र डालता है।

- के.पी. अनमोल

आदरणीय श्रीवास जी नमस्कार, आपकी साहित्यिक पैठ और सम्मादकीय दृष्टि का उद्घोष करती हुई पत्रिका मिली। धन्यवाद। पत्रिका के सांस्कृतिक और साहित्यिक स्तर में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हो तथा इस इसका नैरन्तर्य अक्षुण्ण रहे यही कामना है। आशा है आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। शुभास्ते सन्तु पन्थान : । शुभाकांक्षी

- विज्ञान व्रत

कला समय के अगस्त-सितम्बर 2019 अंक में जैसलमेर के रम्मती ख्यालों के प्रणेता प्रख्यात खिलाड़ी तेजकवि के वंशज नन्दकिशोर शर्मा का राजा भर्तृहरि की रम्मत के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारीपूर्ण आलेख पढ़ा। भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर द्वारा आयोजित लोकानुरंजन मेले में भी हमारे विशेष आग्रह पर श्री शर्मा अपना ख्याल दल लेकर आये और राजा भर्तृहरि की रम्मत प्रस्तुत कर जो विशेष छाप छोड़ी, आज भी लोग उसकी याद लिये हैं। नन्दकिशोरजी के पिता सगतमलजी भी तेजकवि की तरह सशक्त खिलाड़ी तथा ख्याल लेखक थे। नन्दकिशोर जी स्वयं भी उसी परम्परा के सशक्त खिलाड़ी है जिन्होंने रम्मती ख्यालों की रचना ही नहीं की, उनमें मुख्य महिला एवं पुरुष पात्र की भूमिका को बुलन्दी के साथ प्रस्तुत कर बड़ा नाम कमाया। राजस्थान के लोकनाट्य ख्याल की अंचल विशेष के नाम से विभिन्न शैलियां प्रचलित रही हैं। उनमें मेवाड़ी, मारवाड़ी, चिड़ावी, शेखावाटी, जयपुरी, हाड़ौती शैलियों में विविध रंगतों में ख्याल करने वाले होनहार कलाकार हुए हैं। इनके अलावा पारसी शैली में भी अलग से यहां कम्पनियाँ थीं। इनमें न्यू अलफर्ड कम्पनी का नाम अधिक चर्चित था। इसके द्वारा भी महाराज भर्तृहरि नाटक प्रदर्शित किया जाता था। जयपुर में गणपतलाल डांगी का बड़ा नाम था जो याद में आकाशवाणी केन्द्र जयपुर में रहे और अपनी गायकी द्वारा बड़े ख्यात हुए। इनके पास पारसी थियेटर विषयक विपुल साज सामान तथा फोटो थे जिनको लेकर उन्होंने अपने निवास को ही पूरा संग्रहालय बना दिया था। मुझे उन्होंने बड़ी देर तक अपना वह पूरा संग्रहालय दिखाया और पारसी थियेटर के माध्यम से उन्होंने जो मण्डली चलाई उसकी पूरी जानकारी से समृद्ध किया। डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने बताया कि डांगीजी के 'सेमाड़ी री गूंज' तथा 'लड़े शूरमा' नामक सिरीयल तो इतने लोकप्रिय रहे कि रामायण सिरीयल की तरह सुनने के लिए आकाशवाणी केन्द्रों पर भी लोगों की भीड़ एकत्र हो जाती। उदयपुर आकाशवाणी केन्द्र में रहे रामू शास्त्री वायलीन वाादन के नामचीन कलाकार थे। उन्होंने बताया कि अलवर में राजर्षि अभय समाज ने 1960 के लगभग रंगकर्मी विश्वंभरदयाल शर्मा के आग्रह से छोटेलाल चाचा ने महाराजा भर्तृहरि नाटक प्रारम्भ किया। यह नाटक कथावाचक पं. राधेश्याम के शिष्य पं. मुरारीलाल झझरी लिखित था। छोटेलाल न्यू अलफर्ड कम्पनी में काम कर चुके थे। पारसी शैली के इस नाटक का पहला दृश्य बाबा मत्स्येन्द्रनाथ के आश्रम का था। नाथ सम्प्रदाय के प्रथम गुरु मत्स्येन्द्र तथा गोरख की वेशभूषा दर्शकों को प्राचीन लोक की जीवन्तता से रू-ब-रू कराती। शरीर पर त्रिपुंड, काली ऊन की रस्सी से बुना कमरबंध, खुले लटकते बाल, डोर से बन्धा मोटा घंघुरू नाथ परम्परा की असल छवि का दरसाव कराते।

-डॉ. महेन्द्र भानावत

■

www.tagorelitfest.com

TAGORE INTERNATIONAL
LITERATURE & ARTS
FESTIVAL

विश्व रंग

7-10 NOVEMBER, 2019
BHOPAL (INDIA)

भोपाल का पहला अंतर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव

60 से अधिक महत्वपूर्ण सत्र

- टैगोर और उनके साहित्य पर केन्द्रित तीन दिवसीय उत्सव
- विश्व के 30 से अधिक देशों से 500 से अधिक लेखक एवं रचनाकार
- विश्व कविता सम्मेलन
- पुस्तक विमोचन, संवाद और प्रदर्शनी
- प्रवासी भारतीय और हिन्दी
- कथादेश का लोकार्पण
- टैगोर, गांधी और उनकी समकालीनता
- नाट्य समारोह
- भारत के शीर्ष लेखकों से मुलाकात
- 600 से अधिक कथाकारों पर केन्द्रित कथादेश
- साहित्य और सिनेमा
- राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान
- थर्ड जेंडर द्वारा कविता सत्र
- भारतीय कला पर आधारित प्रदर्शनी और परिसंवाद
- दास्तानगोई
- हिंदी और विश्व विषय पर संवाद
- अंतर्राष्ट्रीय मुशायरा

देश के 50 से अधिक स्थानों पर पुस्तक यात्रा का आयोजन

राष्ट्रीय कला सेमिनार एवं प्रदर्शनी

स्थान

मिन्टो हॉल

आयोजक

Rabindranath TAGORE UNIVERSITY™

एवं

AISECT GROUP OF UNIVERSITIES

संपर्क

दिल्ली कार्यालय : 813-814, इंटरनेशनल ट्रेड टॉवर, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019, इंडिया

लीलाधर मंडलोई - फोन : +91-9818291188, ई-मेल : leeladharmandloi@tagorelitfest.com

भोपाल कार्यालय : मुकेश वर्मा - फोन : +91-9425014166, ई-मेल : vermamukesh71@gmail.com

फोन : +91-755-2432888/9099006302 ई-मेल : codirector@tagorelitfest.com,

फोन : +91-755-2700480/9826332875 ई-मेल : pushpa@tagorelitfest.com

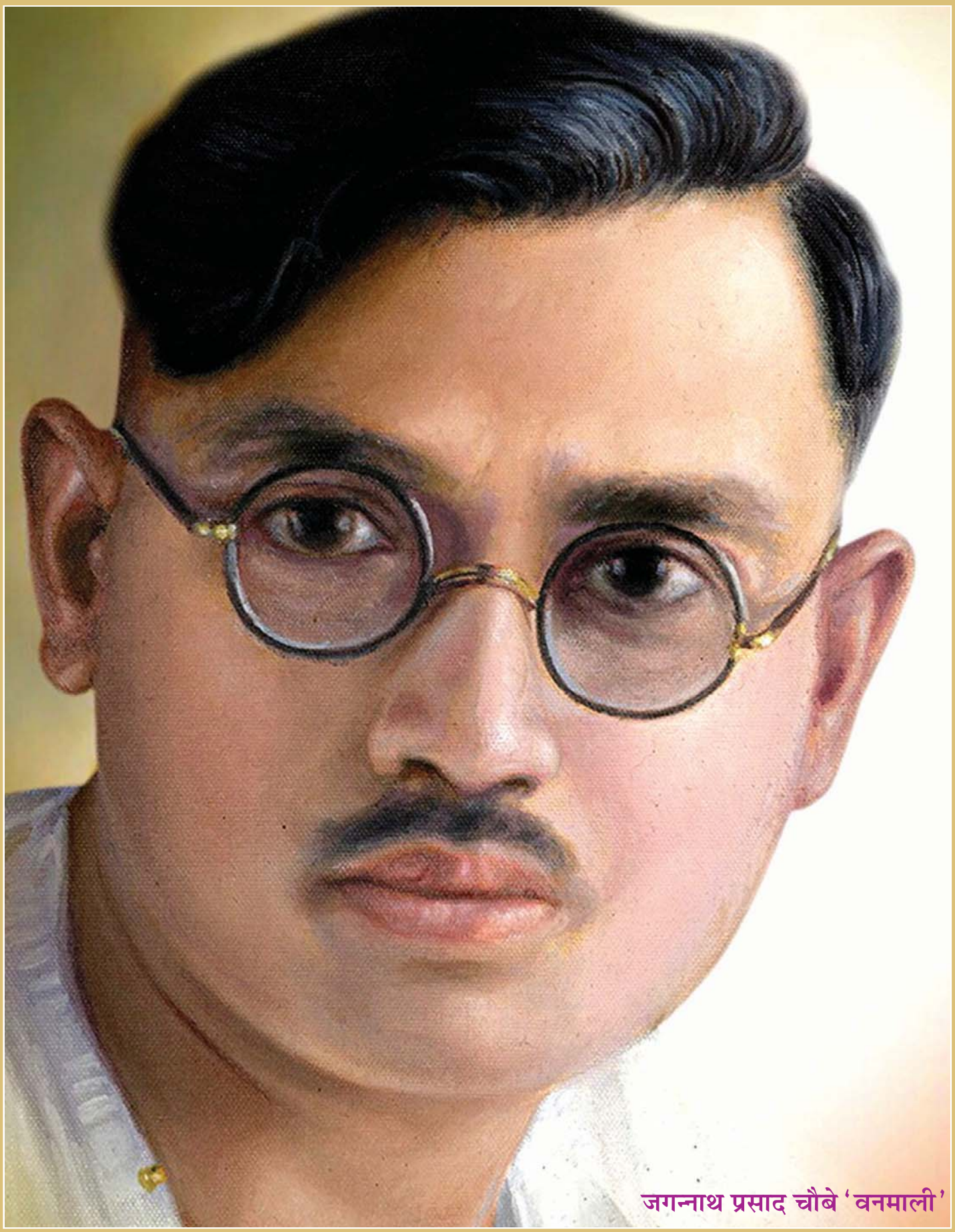

जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली'

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास